हिन्दी मासिक

एक प्रति मूल्य १८/-

जनज्ञान

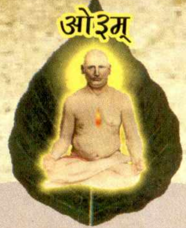

मई २०१५ वर्ष:५१ अंक:०१ बैसाख–ज्येष्ठ २०७२

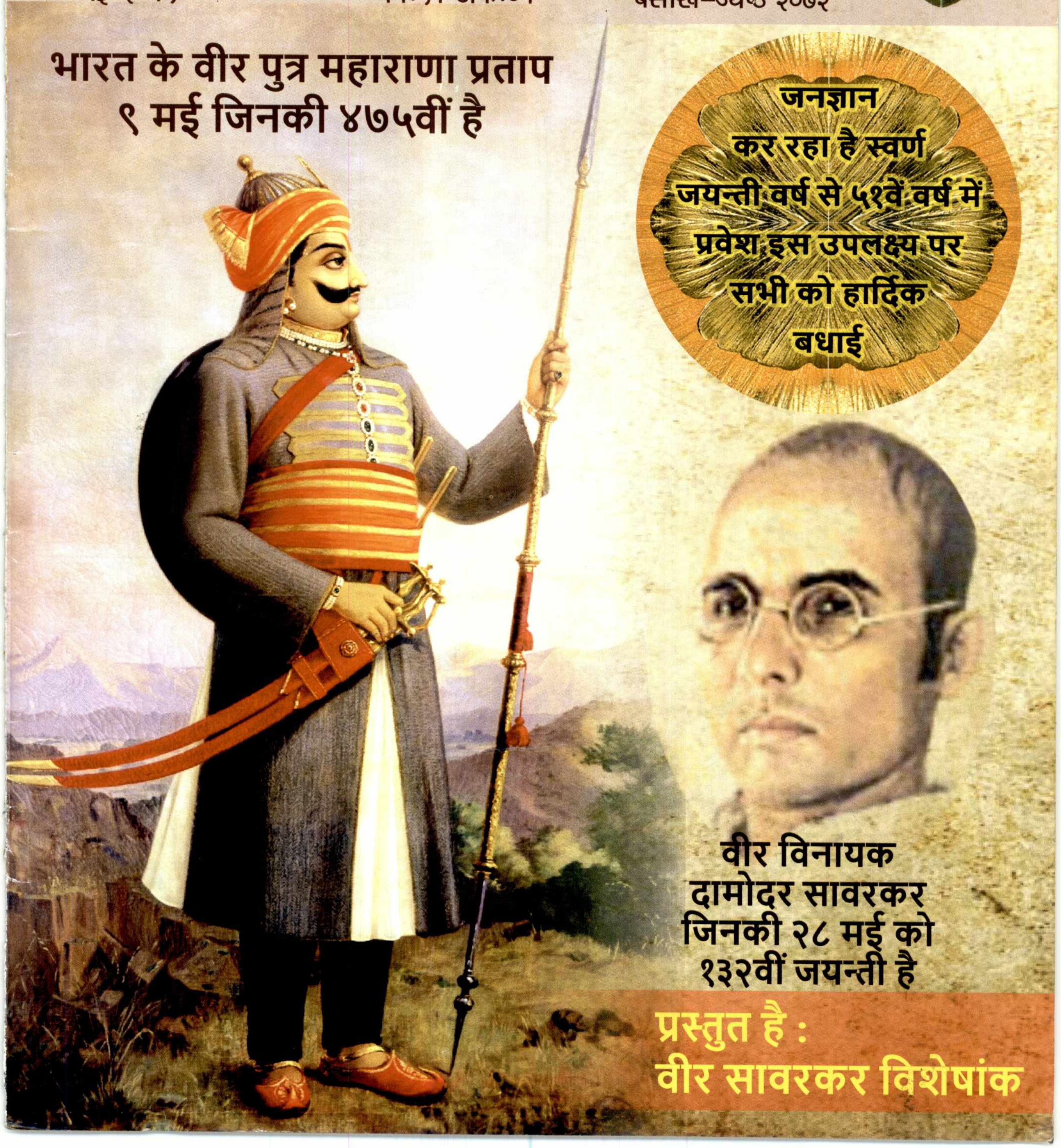

भारत के वीर पुत्र महाराणा प्रताप ९ मई जिनकी ४७५वीं है

जनज्ञान कर रहा है स्वर्ण जयन्ती वर्ष से ५१वें वर्ष में प्रवेश इस उपलक्ष्य पर सभी को हार्दिक बधाई

वीर विनायक दामोदर सावरकर जिनकी २८ मई को १३२वीं जयन्ती है

प्रस्तुत है : वीर सावरकर विशेषांक

श्री नन्द प्रकाश थरेजा

With Best Compliments From :

सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय ॥

HUMAN CARE CHARITABLE TRUST

hCCt

god created human beings to feel sympathy with those in distress otherwise there was no scarcity of angles to worship him.

ENGAGED IN WELFARE OF POOR AND NEEDY

HUMAN CARE CHARITABLE TRUST (Regd.)

D-94, Saket, New Delhi-110017
Tel. : 26524607, 40514515 E-mail : hctrust@yahoo.com

درد دل کے واسطے پیدا کیا انسان کو
ورنہ طاعت کے لیے کچھ کم نہ تھے کرّ و بیاں

दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इंसान को
वरना ताअत के लिए कुछ कम न थे करुँ बयां

لب پہ آتی ہے دعا بن کے تمنا میری — زندگی شمع کی صورت ہو خدایا میری
دور دنیا کا مرے دم سے اندھیرا ہو جائے — ہر جگہ میرے چمکنے سے اجالا ہو جائے
ہو مرے دم سے یونہی میرے وطن کی زینت
جس طرح پھول سے ہوتی ہے چمن کی زینت
زندگی ہو مری پروانے کی صورت یا رب — علم کی شمع سے ہو مجھ کو محبت یا رب
ہو مرا کام غریبوں کی حمایت کرنا — درد مندوں سے ضعیفوں سے محبت کرنا
مرے اللہ برائی سے بچانا مجھ کو — نیک جو راہ ہو اس رہ پہ چلانا مجھ کو

लब पे आती है दुआ बन के तमन्ना मेरी।
जिन्दगी शमा की सूरत हो खुदाया मेरी।
दूर दुनिया का मेरे दम से अंधेरा हो जाए।
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाए।

हो मेरे दम से यूँ ही मेरे वतन की ज़ीनत
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत
जिन्दगी हो मेरी परवाने की सूरत यारब
इल्म की शमा से हो मुझको मोहब्बत यारब

हो मेरा काम गरीबों की हिमायत करना
दर्द मंदों से, जईफों से मोहब्बत करना
मेरे अल्लाह बुराई से बचाना मुझको
नेक जो राह हो उस राह पे चलाना मुझको

॥ ओ३म् ॥

जनज्ञान

वेद

ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

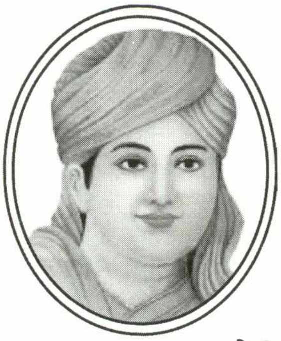

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली

हिन्दुत्व एवं विशुद्ध राष्ट्रवाद को समर्पित

संस्थापक : स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः
सम्पादक : पंडिता राकेश रानी
सह-सम्पादक : दिव्या आर्य
मोबाइल : 8459349349, 9810257254
Email : dayanandsansthan.jangyan@gmail.com

मुख्य कार्यालय :

वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
केशवनगर बस स्टैण्ड
(इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर
दिल्ली-110036

एक प्रति-18 रु०, वार्षिक शु०-200 रु०, तीन वर्ष-550 रु०, पांच वर्ष-900 रु० और आजीवन-3100
विदेश में **वार्षिक शुल्क**-2100 रु.
(हवाई जहाज से) **वार्षिक शुल्क**-3100 रु.

मई 2015 वर्ष 51 अंक 1

आवरण पृष्ठ : **अरविन्द मोहन मित्तल**

सम्पादकीय

ऐतिहासिक स्मृतियों को संजोए है यह मास

मई मास हमें स्मृति दिलाता है- 1857 के भारतीय स्वातन्त्र्य समय की, जिसमें **ब्रिटिश राज्य सत्ता को चुनौती दी थी नाना साहब पेशवा, रानी लक्ष्मीबाई, कुंवर सिंह और तात्या टोपे जैसे नरवीरों ने।**... हमें याद दिलाता है उस **प्रचण्ड क्रान्ति की** जो पेशावर से कलकत्ता पर्यन्त उठी थी। याद दिलाता है यह महीना हमें उस क्रान्ति के दौरान **दिल्ली के प्रचण्ड घेरे की, कानपुर के महान् नरमेधा की।** हमें स्मरण दिलाता है यह मई मास उस क्रान्ति के मूल में निहित ठोस तथ्यों की।

वस्तुतः 1857 के इस स्वातन्त्र्य संग्राम को प्रदीप्त करने वाले दिव्य तत्व थे **'स्वधर्म व स्वराज्य'** अपने प्राणप्रिय धर्म पर भयंकर विघातक व नितान्त कष्ट पूर्ण आक्रमण हो रहे हैं, इस तथ्य को समझकर ही 'दीन-दीन' की गर्जना हुई थी। अपने निसर्ग प्रदत्त स्वातन्त्र्य को कपटपूर्ण चालों से छीने जाने के प्रयासों और राजकीय दासता की लौह श्रृंखलाओं को प्रिय मातृभूमि के कंठ में डाले जाने के घातक-प्रयत्नों को असफल कर **स्वराज्य प्राप्ति की पावन इच्छा की पूर्ति और इस दास्य श्रृंखला पर किए गए प्रचण्ड प्रहार ही इस क्रान्ति का मूल थे।**

स्वधर्म प्रीति और स्वराज्य प्रीति के ये तत्त्व हिन्दुस्तान के इतिहास में जितनी उदात्तता सहित अभिलक्षित हुए हैं, उतने अधिक किसी देश के इतिहास में भी परिलक्षित नहीं होते। चाहे विदेशी और पक्षपात के चश्में अपने नेत्रों पर चढाकर लिखने वालों ने हमारी हिन्दू भूमि के उज्जवल चित्र को कितने ही रंगों से रंग देने की कुचेष्टाएं क्यों न की हों!......

किन्तु, जब तक हमारे देश के इतिहास में **चित्तौड़ का पावन**

मुद्रक, स्वामी, प्रकाशक व सम्पादक : श्रीमती राकेश रानी वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर बस स्टैण्ड (इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर दिल्ली-110036 एवं डीलक्स आफसेट प्रिन्टर्स ३०८/४ शहजादा बाग दिल्ली से मुद्रित।

नाम अंकित है, **गुरु गोविन्द सिंह का नाम** विद्यमान है, **सिंहगढ़ का नाम** मिटाया नहीं जाता, **प्रतापादित्य और विक्रमादित्य, छत्रपति शिवाजी और प्रणवीर प्रताप तथा आदि शंकराचार्य और देव दयानन्द के नाम** हमारे इतिहास के पृष्ठों में अंकित हैं, तब तक **स्वधर्म और स्वराज्य के मूल सिद्धान्त** भारत भूमि की सन्तानों की अस्थियों और मज्जा में जमें ही रहेंगे।

स्वराज्य के लिए हिन्दुस्तान ने कौन-से प्रयास नहीं किए, स्वधर्म की रक्षार्थ इस भारत भूमि ने कौन-सा ऐसा दिव्यव्रत है, जिसे अंगीकार नहीं किया? "सूरा सोही" जानिए जो लड़े धर्म के हेत। पुरजा-पुरजा कर मरे तबहुं न छाडे खेत (गुरुगोविन्द सिंह)।''

इसी रीति का परिपालन करते हुए स्वातन्त्र्य के मतवाले स्वधर्म हेतु रणांगण में उतरे थे, उनके शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो गए, फिर भी रणस्थल से पग पीछे नहीं धरा था उन्होंने। ऐसे प्रसंगों से भारत-भूमि का पावन इतिहास परिपूर्ण है।

स्वधर्म के लिए उठो और स्वराज्य की स्थापना करो, इस तत्व ने भारत के इतिहास में कितने ही दैविक चमत्कार किए हैं। **महाराष्ट्र में समर्थ गुरु रामदास ने भी सैकड़ों वर्ष पूर्व यही आह्वान किया था।**

देव दयानन्द ने भी इसी भावना की अभिव्यक्ति सत्यार्थ प्रकाश में की थी, जब उन्होंने यह उद्घोष किया था कि **'कोई कितना भी कहे, अपनों का निकृष्टतम शासन भी गैरों के सुशासन के बेहतर होता है।'** इतिहास साक्षी है कि **1857 की इस क्रान्ति में स्वामी विरजानन्द और देव दयानन्द ने भी अपनी महती भूमिका निभाई थी।**

1857 की यह क्रान्ति असफल हो गयी थी, किन्तु यह भी सत्य और तथ्य है कि **इसकी असफलता के लिए दोषी थे वे तत्व, जिन्होंने अपने आलस्य और प्रमाद तथा स्वार्थपरता और विश्वासघात से इस पर मर्मान्तक प्रहार किया था।**

उन महान वीरों को इसकी असफलता के लिए दोषी सिद्ध करने का दुस्साहस किसी को भी नहीं करना चाहिए, जिन्होंने अपना गरम खून प्रवाहित करने वाली तलवारों को उठाकर, उस महान, पूर्व-प्रयोग के हेतु क्रान्ति के अग्निमय रंगमंच पर प्रवेश किया था और जो प्रत्यक्ष मृत्यु का भी आलिंगन कर आनन्द सहित झूम उठते थे। वे न तो उन्मादी थे और न विक्षिप्त ही, न ही वे विचारहीन थे और न ही पराजय में हाथ बंटाने वाले।

वस्तुतः उन्हीं की पावन प्रेरणा से भारत माता की गहन निद्रा भंग हुई थी और पराधीनता की जंजीरों को टूक-टूक कर देने के लिए सम्पूर्ण भारत जागृत हो उठा था उन्हीं के प्रयत्नों से **उसी क्रान्ति के समय बहादुर शाह ने अपने शेर में यह आकांक्षा व्यक्त की थी—**

गाजियों में बू रहेगी जब तलक ईमान की
तख्ते लन्दन तक चलेगी तेग हिन्दुस्तान की।

वीर सावरकर जयन्ती

यही मई मास हमें स्मृति दिलाता है **स्वराज्य और स्वधर्म के इस महान उपासक स्वतन्त्र्य वीर सावरकर की जो 28 मई, 1883 को महाराष्ट्र के एक छोटे-से ग्राम भंगूर में जन्मे थे** और जिन्होंने स्वराज्य के पावन यज्ञ को धधकाने के लिए लन्दन तख्त तक हिन्दुस्तान की तेज चलायी थी।

वीर सावरकर! क्रान्तिकारियों के मुकुटमणि वह वीर थे जिन्होंने अंडमान के नाटकीय कारागार में अपनी जवानी कोल्हू पेरते हुए बितायी थी, ताकि भारत माता के गले में पड़ी गुलामी की जन्जीर टूट-टूक हो सके। वही थे वीर सावरकर! जिन्होंने 1857 की क्रान्ति को पहली बार भारतीय स्वातन्त्र्य समर की संज्ञा तो दी ही थी, साथ ही जिन्होंने हिन्दुत्व की एक सांगोपाग व्याख्या भी की थी। जिन्होंने सगर्व घोषणा की थी कि भारत हिन्दू राष्ट्र है। जो शुद्धि आन्दोलन के सबल प्रेरक थे तो हिन्दू संगठन भी जिनके जीवन का मूलमन्त्र था और राजनीति का हिन्दूकरण जिनका महान् स्वप्न!....

स्वातन्त्र्य वीर सावरकर ने हिन्दुत्व का दर्शन कराया था इन स्पष्ट शब्दों में—

"यह बात निश्चित है कि किसी पगड़ी विशेष में, ब्रह्मसूत्र में, चोटी में या गोमूत्र में हिन्दुत्व नहीं है। हिन्दुत्व कोई ताड़पत्र पर लिखी हुई पोथी नहीं है, जो ताड़पत्र के चटकाते ही चूर-चूर हो जाए और न आज उत्पन्न होकर कल नष्ट होने वाली कागज पर लिखी हुई धारणा ही हिन्दुत्व है। हिन्दुत्व गोलमेज परिषद का कोई प्रस्ताव नहीं है।........

हिन्दुत्व एक महान् जाति का जीवन है। वह सहस्राविध पुण्यात्माओं के, हुतात्माओं के युगानुकूल अथवा परिश्रम एवं प्रयत्नों का परिवार है। आज वह उतार पर है, किन्तु फिर भी समुन्द्र है। सुप्त होने पर भी ज्वालामुखी है। इस हिन्दू राष्ट्र और धर्म के उत्कर्ष के लिए हवन होने को आज भी जिन शतावधि हुतात्माओं के शरीर का बिन्दु-बिन्दु मचल रहा है, उन हुतात्माओं की जलन और आत्मा यज्ञ ही हिन्दू राष्ट्र के अक्षुण्ण जीवन का साक्षी है।

इस अंक में पढ़ें

(आवश्यक नहीं कि सम्पादक लेखकों की रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से पूर्णतः सहमत हो)

सम्पादकीय-ऐतिहासिक स्मृतियों को संजोए है यह मास ३

सामायिक-चर्चा: किसान रैली: राहुल और कांग्रेस *—अश्विनी कुमार* ७

सामायिक-विचार: सुभाष चन्द्र बोस को 'भारत रत्न' क्यों नहीं मिला? *—अश्विनी कुमार* ८

महात्मा वेदभिक्षु: की अमरवाणी: जीवन का क्या लाभ १०

हृदय मंदिर के उद्गार *—दिव्या आर्य* ११

आपके पत्र १२

सुचरितानि नो इतराणि.... *—डा. ज्ञानचन्द्र* १३

आर्यसमाज के दस नियमों की अपूर्व-व्याख्या *—स्व. श्री मोहनलाल विष्णुलाल पाण्ड्या* १४

1857 की क्रान्ति में स्वामी दयानन्द का योगदान *—श्री जशवन्त राय गुगलानी* १५

सावरकर के 'आत्मार्पण' पर श्रद्धांजलि सुमन १८

समकालीन महापुरुषों की दृष्टि में सावरकर १९

स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर २०

हिन्दू, हिन्दुत्व और वीर सावरकर *—डॉ. हरीन्द्र श्रीवास्तव* २२

महान देशभक्त वीर सावरकर २४

सावरकर के सपनों का भारत २६

महाराणा प्रताप का पर्वतीय जीवन *—बचनसिंह सिकरबार* २८

हमारे प्रधानमन्त्री हमारा विकास ३०

विश्व की सबसे बड़ी पार्टी ... *—प्रो. अमिता सिंह* ३१

इतिहास में दर्ज है डॉ. अम्बेडकर की सोच *—डॉ. सतीशचन्द्र मित्तल* ३३

बाबाराव सावरकर की.... *—प्रो. देवेन्द्र स्वरूप* ३६

मौलिक राजनैतिक चिन्तक महर्षि दयानन्द *—डॉ. धर्मपाल आर्य* ३९

भक्तजी के सपनों का भारत *—पंचखंडेपीठाधीश्वर आचार्य धर्मेन्द्रजी महाराज* ४१

बाल-जगत: बहादुर हीरामन ने दी थी मुगलों को चुनौती ४३

तांगेवाला कैसे बना मसालों... *—म. धर्मपाल गुलाटी* ४५

स्वास्थ्य विचार: वृद्धावस्था और..... *—डॉ. फणिभूषण दास* ४६

समाचार-दर्शन ४७

51वें वर्ष में प्रवेश

इस अंक के साथ आपका प्रिय **जन-ज्ञान अपने प्रकाशन के इक्यावनवें (51वें) वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इस पत्रिका की स्थापना स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु: जी ने संसार भर में वैदिक धर्म के प्रचार के लिए की थी।** महात्मा जी उत्साह के पुंज थे। उनके मन-मस्तिष्क में बड़ी-बड़ी योजनाएं थीं। **उनके असामयिक निधन से हमारे कार्य को बहुत क्षति पहुंची।** लेकिन हम उनके सपनों को साकार करने के लिए यथाशक्ति अधिकाधिक कार्य करते रहे हैं और करते रहेंगे।

जीवन के अन्तिम दिनों में महात्मा जी हिन्दू हितों की रक्षा के लिए अत्यन्त चिन्तित रहते थे। उनका लक्ष्य यह था कि हिन्दू समाज के सब पन्नों को माला के मनकों की तरह एक सूत्र में पिरोया जाए। अपने स्वास्थ्य की परवाह न करके भी वे अहर्निश इस लक्ष्य की प्राप्ति में जूटे रहे। **उन्होंने अपने सभी आन्दोलन जन-ज्ञान के माध्यम से ही चलाए।**

जन-ज्ञान का **शुभारम्भ पचास वर्ष पूर्व राष्ट्र-सन्त रविशंकरजी महाराज के कर कमलों से हुआ था।** इन 50 वर्षों में हमने इसे अधिकाधिक जनोपयोगी बनाने का प्रयत्न किया है। **जब हम जन-ज्ञान के पिछले अंकों को देखते हैं, तब हम पाते हैं कि महात्मा वेदभिक्षु: स्याही के अक्षर नहीं लिखते थे, आग के अक्षर लिखते थे। जब वे लिखते थे, तब वे अपने आप मे डूब जाते थे-समाधिस्थ हो जाते थे। वे अपने कार्य की सफलता हेतु अपनी आहुति देने के लिए सदैव कृतसंकल्प रहते थे। जब तक वे जीवित रहे, जन-ज्ञान की लोकप्रियता लगातार बढ़ती रही।**

वस्तुत: उनका लक्ष्य था-बह्वामेमि प्रथम:, ब्रह्मामेमि मध्यम: (मैं बहुतों में प्रथम होऊं, मैं बहुतों में मध्यम होऊं अर्थात् किसी भी स्थिति में पिछड़ूं नहीं।) वे इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सदा प्रयत्नशील रहे।

इन प्रयत्नों का परिणाम भी निकला। जन-ज्ञान आर्य जगत (हिन्दू जगत्) की श्रेष्ठतम पत्रिका के रूप में उभरकर सामने आया। इसके विशेषांकों की धूम मची रही। लगातार लगभग हर अंक पर महात्मा जी के समय ही हमारी सरकार इस देशभक्ति के कार्य (पावन अपराध) स्वरूप मुकदमों की शृंखला बढ़ाती रही। यह शृंखला लगभग चालीस की संख्या तक पहुंची.....

लेकिन जनज्ञान का लक्ष्य वैदिक संस्कृति के प्रसार से डिगा नहीं।

मेरा लगातार यह प्रयत्न रहा है कि जन-ज्ञान का वह स्तर और वे तेवर बने रहें। इस कार्य में मैं आपका सहयोग चाहती हूं। आप जन-ज्ञान को और भी अच्छा बनाने के लिए अपने अनुभवसिद्ध सुझाव हमें भेजें। लेखक और कवि अपनी रचनाएं भेजें। आप इसकी सदस्य संख्या बढ़ाने में सहयोगी हों!

यदि जनज्ञान प्रत्येक सदस्य पाँच नए सदस्य बनाने का निश्चय करे, तो यह भी आपका महान सहयोग मिलेगा।

विज्ञापनदाता विज्ञापन भेजें। आज की दुनिया में विज्ञापन के बिना पत्र-पत्रिका आत्मनिर्भर नहीं हो सकती। (अपवाद हो सकते हैं, पर सामान्य यही स्थिति है।)

महात्मा वेदभिक्षुः जी जन-ज्ञान को घर-घर पहुंचने वाली पत्रिका बनाना चाहते थे-अपनी विचारधारा को बनाए रखते हुए। हम करना तो बहुत कुछ चाहते हैं, लेकिन आर्थिक कठिनाइयां हमारे मार्ग में बाधा बनकर खड़ी रहती हैं।

हमारा प्रयत्न रहेगा कि **जन-ज्ञान केवल वैदिक धर्म और हिन्दू हितों का रक्षक ही नहीं रहे, अपितु इसमें सब सुरुचियों के पाठकों की रुचि की सामग्री रहे।** यह मनोभाव महात्मा वेदभिक्षुः जी के दृष्टिकोण के भी अनुकूल है।

हमें पूर्ण आशा है कि आगामी वर्षों में जन-ज्ञान उत्कर्ष की नई ऊंचाई का स्पर्श करेगा। **भविष्य में प्रिय दिव्या जी ने यह संकल्प लिया है। प्रभु की कृपा और आप सभी का सहयोग तथा आशीर्वाद उन्हें इस कार्य को आगे बढ़ाने में सफलता देगा।**

महात्मा जी के स्वप्न अवश्य पूर्ण होंगे मुझे विश्वास है। और **इस पत्रिका के रूप में जो ज्ञान-स्रोत महात्मा वेदभिक्षुः जी हमारे लिए बहा गए हैं, वह और भी वेग से बहेगा**-ज्ञान के इस कोष में वृद्धि ही होगी, कमी नहीं।

आइए, सहयोग का मुक्त हस्त बढ़ाइए..... शुभकामनाओं की बौछारों के साथ, **'चरैवेति चरैवेति'** के उद्‌घोष के साथ......

-राकेश रानी ❖❖❖

जनज्ञान 'मासिक' विज्ञापन दरें

जनज्ञान में विज्ञापन दें सहयोग का हाथ बढ़ाएं।
देश-विदेश में अपने प्रतिष्ठान का नाम गुँजाएं।।

अन्तिम कवर पृष्ठ	25000/-रुपए
कवर पृष्ठ दो व तीन	23000/-रुपए
सामान्य पूर्ण पृष्ठ (रंगीन)	18500/-रुपए
सामान्य पूर्ण पृष्ठ	15000/-रुपए
आधा पृष्ठ	8000/-रुपए
चौथाई पृष्ठ	4500/-रुपए

बैंक ड्राफ्ट तथा मनीआर्डर "जनज्ञान मासिक" के नाम भिजवाएं। अथवा आप राशी सीधे यूनियन बैंक में खाता नं. 307902010056883 IFSC: UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं।

बैंक में जमा की गई राशी की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।

विज्ञापन व्यवस्थापक- *जनज्ञान-मासिक*

वेद मन्दिर, महात्मा वेदिभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर (इब्राहीमपुर)
पो.-मुखमेलपुर, दिल्ली-36 दूरभाषः 08459349349

सामयिक-चर्चा

किसान रैलीः राहुल और कांग्रेस

—अश्विनी कुमार

कांग्रेस की कथित किसान रैली से सिद्ध हो गया है कि यह पार्टी अपने पराभव की तरफ तेजी से चल पड़ी है जिसमें पूरी तरह **नेतृत्वविहीनता** है और **जिस इंदिरा गांधी के पोते राहुल गांधी को यह अपना भावी नेता बनाना चाहती है उसकी राजनीतिक समझ किसी म्युनिसिपलिटि के नेता से ज्यादा नहीं है।**

राहुल गांधी ने यह कहकर कि नरेन्द्र मोदी व भाजपा को जिताने में उद्योगपतियों से लिया गया कर्जा काम आया है, **देश की उस महान जनता का अपमान किया है जिसके वोट से नरेन्द्र मोदी प्रधानमन्त्री की कुर्सी पर बैठे हैं।.....** क्या गजब के विचार व्यक्त किए गए हैं ढाई महीने के अज्ञातवास से लौटने के बाद कि **जैसे भारत आज भी अंग्रेजों के शासन में ही जी रहा है।**

कांग्रेस जरा अपने गिरेबान में झांक कर देखे और मुल्क को बताए कि **1951 से लेकर जो जमीन अभी तक सरकारों ने अधिग्रहीत की है उसके 75 प्रतिशत मुआवजे अभी तक क्यों नहीं किसानों को दिए गए हैं?** हकीकत यह है कि अपने 2013 के भूमि अधिग्रहण कानून के जरिए कांग्रेस पार्टी किसानों को प्रोपर्टी डीलरों के **कब्जे में छोड़ना चाहती थी।**

पूरे देश में आज जो धन्धा सबसे ज्यादा पनपा है वह प्रोपर्टी डीलरों का है और इनकी मार्फत किसानों की जमीनें प्रभावशाली लोगों के कब्जे में जा रही हैं।

पुराने कानून में किसानों की सहमति का प्रावधान बराए नाम रखते हुए यह पेंच डाल दिया गया था कि किसानों की जमीनों को गैर खेतीहर घोषित करके उनका मुआवजा अलग-अलग ढंग से तय किया जा सके जबकि नए मोदी सरकार के कानून में ऐसी किसी भी गुंजाइश को जड़ से खत्म कर दिया गया है।

जरा कोई कांग्रेसियों से पूछे कि यह किसानों की हितैषी पार्टी कब से हो गई है। इसी के लम्बे चले शासन के दौरान क्या किसानों की जमीनें गैर खेतिहर बताकर अधिग्रहीत नहीं की गई थीं???.....

मैं शुरू से आगाह करता आ रहा हूं कि मौजूदा विधेयक का विरोध किसान को किसान बनाए रखने के लिए हो रहा है। **मजदूर को मजदूर ही बनाए रखने के लिए हो रहा है** और उनकी आने वाली पीढ़ियों को भी इसी धन्धे में मरने-खपने की गरज से किया जा रहा है। क्या कयामत है कि 1991 में स्वयं आर्थिक उदारीकरण की शुरूआत करके सरकारी कम्पनियों को निजी उद्योगपतियों को बेचने वाली पार्टी आज कह रही है कि किसानों की जमीनें उद्योगपति हड़प लेंगे। यह सरासर सफेद झूठ है क्योंकि कोई भी उद्योगपति किसी भी किसान की जमीन को नहीं हड़प सकता है।

नए कानून के तहत निजी क्षेत्र की कोई भी परियोजना किसानों की सहमति के बिना स्थापित नहीं हो सकती और सहमति के बाद उन्हें अधिग्रहीत जमीन का बाजार भाव से चार गुना मुआवजा पक्के तौर पर दिया जाएगा। इसके साथ ही प्रत्येक किसान के परिवार के एक व्यक्ति को नौकरी सुलभ कराई जाएगी। पांच वर्ष तक परियोजना के पूरा न होने की स्थिति में पहले कानून के तहत जमीन किसानों को वापस सौपनें की बात मात्र एक धोखे के अलावा और कुछ नहीं थी क्योंकि उस कानून के लागू रहते भी परियोजना का कार्यकाल तकनीकी वजहों से बढ़ाया जा सकता था। **जरा कोई राहुल गांधी से पूछे कि उनके चुनाव क्षेत्र अमेठी की क्या हालत है? इस क्षेत्र में रोजगार के स्थानीय साधन कितने उपलब्ध हैं!...** जो कांग्रेसी अपना ही पुराना इतिहास नहीं जानते उन्हें क्या कहा जा सकता है!..

पंजाब में क्या स्व. प्रताप सिंह कैरो के जमाने में वह काम नहीं किया गया था जिसमें खेती की पैदावर और औद्योगीकरण को साथ-साथ बढ़ाया गया था। **क्या कभी सोचा गया है कि पं. बंगाल में यदि टाटा मोटर परियोजना लगती तो नन्दी ग्राम सहित आसपास के जिलों की अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ता?**

जब किसी शहर या कस्बे के आसपास कोई उद्योग लगता है तो वह पूरे इलाके की अर्थव्यवस्था को बदल देता है। वहां नए-नए धन्धे पैदा होते हैं और गरीब दस्तकारों से लेकर स्थानीय कारीगरों तक की आमदनी पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शिक्षा के क्षेत्र तक में नए अवसर पैदा होते हैं मगर **कांग्रेसी तो सोचते हैं कि किसान का बेटा अगर पढ़-लिख गया तो उनकी राजनीति करने वाले लोग सोच में पड़ जाते हैं कि उनकी तो दुकान ही बन्द हो जाएगी क्योंकि गांवों के विकास के बाद वहां शहरों जैसी सुविधाओं का ही सृजन होना निश्चित होगा।** मगर ऐसा तभी होगा जब हम एक तरफ अपनी खेती की पैदावार बढ़ाएं और दूसरी तरफ गांवों की ओर औद्योगीकरण का मुंह मोड़ें।

(शेष पृष्ठ-9 पर)

सुभाष चन्द्र बोस को 'भारत रत्न' क्यों नहीं मिला?

जो लोग यह सोचते हैं कि भारत को आजादी **'बिना खड्ग-बिना ढाल'** मिल गई वे स्वतन्त्रता आन्दोलन का अर्द्ध मूल्यांकन करते हैं।

वास्तव मे, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेज साम्राज्य पूरी तरह खोखला हो चुका था और इस लड़ाई में अंग्रेजों का साथ दे रहीं भारतीय फौजों में लन्दन के शाही तख्त के खिलाफ विद्रोह उभरता जा रहा था क्योंकि **अंग्रेज व मित्र देशों द्वारा बन्दी बनाए गए भारतीय कैदियों को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने भारत की आजादी की लड़ाई लड़ने के लिए अंग्रेजों से लोहा लेने का आह्वान कर आजाद हिन्द फौज का गठन किया था।** उनका **'जय हिन्द'** का उद्घोष पूरे भारत की नसों में रक्त बन कर दौड़ने लगा था और उन्होंने इसे राष्ट्रघोष बना कर आह्वान कर डाला था कि **'तुम मुझे खून दो-मैं तुम्हें आजादी दूंगा।'**

नेताजी का यह महामन्त्र कांग्रेस पार्टी और महात्मा गांधी द्वारा चलाए जा रहे अहिंसक आन्दोलन और सत्याग्रह के बिल्कुल विपरीत था मगर **इसका असर भारत की युवा पीढ़ी से लेकर सभी वर्गों पर जबर्दस्त तरीके से पड़ा था।** विशेषकर ब्रिटिश हुकूमत के साये में चल रही भारतीय सेनाओं के भीतर अपने ही देश को आजाद कराने की ललक बढ़ने लगी थी।

गौर से देखा जाए तो यह एक समानान्तर स्वतन्त्रता आन्दोलन नहीं था बल्कि निर्णायक संघर्ष था क्योंकि अगस्त 1945 में एक विमान दुर्घटना के बाद रहस्यपूर्ण ढंग से नेताजी के अलुप्त हो जाने के बाद इसी साल के अन्त में ब्रिटिश सरकार ने भारत को आजादी देने का फैसला किया और तत्कालीन वायसराय की अध्यक्षता में कैबिनेट मिशन प्लान को अंजाम देना शुरू किया गया।

अप्रैल 1946 के आते-आते इस कैबिनेट प्लान को लागू कर दिया और पं. जवाहरलाल नेहरु इसके अधिशासी प्रमुख बनाए गए परन्तु इससे पहले ही 1945 में अंग्रेजों के साथ बर्मा में युद्ध हुआ। जिसमें नेता जी की हिन्द फौज व सहयोगी जापान की फौजों को पराजय का मुंह देखना पड़ा। इसके बाद **नागालैण्ड के कोहिमा में आजाद हिन्द फौज और अंग्रेजों की भारत फौज के बीच जबर्दस्त भिड़न्त हुई जिसमें नेताजी की फौज के 26 हजार सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए और भारी संख्या में बन्दी बना लिए गए हालांकि इस युद्ध में आत्मसमर्पण करने की न तो कोई अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की पद्धति या नियम का पालन हुआ और न ही कोई अन्य कागजी कार्रवाई हुई।**

एक प्रकार से, अंग्रेजों ने भारत की आजादी की लड़ाई लड़ने वाले भारतीय सैनिकों को अपने ही देश का 'गद्दार' घोषित कर दिया। इसी वजह से जब आजाद हिन्द फौज के गिरफ्तार प्रमुख सैनिक अफसरों पर लालकिले में कैद करके मुकद्दमा चला तो पूरे मुल्क में गजब का तूफान नेताजी के पक्ष में उठ खड़ा हुआ और वक्त की नब्ज को देखते हुए पं. जवाहर लाल नेहरु ने आसफ अली और कैलाश नाथ कटाजू आदि के साथ इन कैदियों का मुकद्दमा खुद लड़ा।

मगर यह कांग्रेस पार्टी द्वारा नेताजी की फौज और उनके सिपाहियों के पक्ष में उठे जबर्दस्त तूफान को शान्त करने का ही तरीका और खुद को नेताजी के पाले में खड़े दिखाने का प्रयास था क्योंकि **नेताजी की फौजों की तो जबर्दस्त पराजय हो चुकी थी और सभी सिपाहियों को अंग्रेज सरकार ने बन्दी बना कर उन्हें विद्रोहियों की श्रेणी में डाल दिया था।**

अंग्रेजों ने **18 अगस्त, 1945 को विमान दुर्घटना में नेताजी को मृत घोषित कर दिया था** और उनके फौजियों को **'राजद्रोही'** करार दे दिया था। कैबिनेट मिशन प्लान लागू होने के बाद अक्टूबर 1946 में पं. नेहरु ने भी घोषणा कर दी कि नेताजी की मृत्यु हो चुकी है लेकिन **अंग्रेज सरकार की निगाह में नेताजी राजद्रोहियों के नेता थे अत: उनके परिवार के लोगों की जासूसी की जाने लगी और स्वतन्त्र भारत में 1968 तक यही नीति लागू रही** और देखिए इस मुल्क की बदकिस्मती...... कि **1972 में नेहरु की बेटी श्रीमती इन्दिरा गांधी ने बड़ी फराखदिली दिखाते हुए स्वतन्त्रता सेनानियों का सम्मान किया और उन्हें ताम्रपत्र के साथ 200 रुपए माह की पैंशन देने की घोषणा की।**

शर्त यह थी कि आजादी की लड़ाई में जिनकी सम्पत्ति कुर्क की गई हो, कम से कम छह महीने की

महात्मा वेदभिक्षुः की अमर-वाणी

जीवन का क्या लाभ?

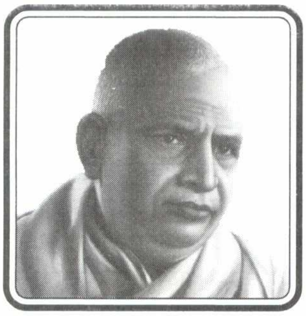

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का कोई उद्देश्य होता है। **हम सारे उद्देश्य पूर्ण कर चुके या भुला चुके। बात केवल एक स्मरण रह गयी देश-धर्म को ऊंचा उठाने की।**

घर-परिवार-मित्र-संगी-साथी-किसी का लगाव नहीं, इसलिए सब छूट गया। **जिससे नेह लगाया, वह रुठ गया।** आग जलाई कूड़ा-करकट जलाने को-हम भी जल गए। **एक स्वार्थ दीखता है सर्वत्र, प्यार तो कहीं दीखता नहीं।**

नन्हें-नन्हें रुनझुन के गीत शून्य के स्वर में लीन हो गए। आत्मा की धारा का मंगलगान मरुस्थल का वासी बन गया। संघर्ष ही जीवन बन गया और स्नेह दूर पार की दुनिया में सो गया। इसलिए आज सोचता हूं कि मेरे जीवन का क्या लाभ? परिवार में कोई अपना नहीं, धरती पर कोई साथी नहीं, अकेले जाना है तो अकेले ही रहना है। यह अकेलापन मृत्यु नहीं तो क्या है?

मन की बात कहूं-**मैं अब जीना नहीं चाहता। कायर की उपाधि दीजिए, या निराश व्यक्ति की, पर सच यही है कि अब जीवन में कोई सार नहीं।**

देश की हालत पर आंसू बहा लेता हूं, **सबके सामने मुस्करा लेता हूं। पर क्या लाभ? जब साथ चलने वाले 2-4 अपने न हों।** गंगा के गीतों की लोरियों को मैंने प्रेरणा के संगीत के रूप में सुना है। वृक्षों के गीतों में मैंने जीवन-ज्योति को देखा है। जन-मानस के उभरते स्वरों में क्रान्ति को साक्षात् देखा है पर......

मुझसे टूटता नहीं, छूटता नहीं, **जो मैं चाहता हूं वह हो न सके तो क्या इस धरती से दूर चले जाना ही अच्छा नहीं? आप ही कुछ बताओ, मैं क्या करूं?**

मैं वर्तमान का प्रतीक हूं। युग की धारा को मैंने ललकारा ही नहीं, उस पर प्रहार भी किया है। सत्य के अस्त्र से दानवता के दैत्य को मानवता की राह पर चलाने की भावना को आप आज भले ही महत्व न दें किन्तु **आने वाला कल यह स्वीकार करेगा कि किसी ने समय को रोकने के प्रयत्न में अपनी आहुति दी थी और यही चिन्तनधारा मेरी विजय होगी।**

विराट देश में फैली **धर्म की पवित्र ध्वजवाहिनी स्वर में कम्पन का नहीं, गर्जन का मार्ग प्रशस्त करेगी, यह मेरा विश्वास है।**

धर्म अमृत है। वह मनुष्य को देवता बनाता है। धर्म को, प्रेम को शाश्वत दया, उदारता को जन्म देता है। वह मृत्यु की ओर ले जाए तो मेरे लिए भी मृत्यु वरण ही एकमात्र मार्ग रह जाता है।

मैं जीना चाहता हूं इसलिए कि आप जीवित रहें। मैं मरना चाहता हूं इसलिए कि मेरा धर्म जीवित रहे। कल्पना नहीं, वह सत्य है कि मृत्यु ने आकर मेरे द्वार खटखटा दिए हैं। मैंने उसकी आवाज सुन ली है। सोचता हूं कि जब निमन्त्रण मिल ही गया है तो क्यों न स्वीकार कर लिए जाए?......

इसलिए आज मृत्यु का निमंत्रण स्वीकार कर हमने मृत्यु की चुनौती स्वीकार की है। **अन्तर्राष्ट्रीय मुस्लिम षड्यन्त्रों और साम्राज्यवाद से टकराने के लिए हम तैयार हैं। अकेले चलना, बढ़ना, मरना और विजय वरण करना ही हमारा एकमात्र लक्ष्य है-जीना और जीने के लिए मरना!......**

-(जनज्ञान माघ सम्वत् 2040)❖❖❖

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

परमात्मा की अमर वाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य अपने तथा अपने मित्र परिवारों में पहुँचाएं। मूल्य 2800 रु.। बढ़िया कागज-मूल्य 3600 रु.

हृदय मन्दिर के उद्गार

-दिव्या आर्य

जनज्ञान प्रविष्ट हुआ इक्यावन वें (51वें) वर्ष में और जागी हृदय में आकांक्षा मेरी कोई लौटा दे मेरे महाराणा प्रताप! जिससे स्वाभिमान क्या होता है, हम समझ सकें, कोई तो लौटा दे मेरे सावरकर महान! कि हिन्दी-हिन्दू हिन्दुस्थान की आवश्यकता जान सकें, वीरों के-क्रान्तिकारियों के-बलिदानियों के-अमर हुतात्मा के किए प्राणोत्सर्ग का कारण समझ सकें, स्मरण कर 1857 की क्रान्ति का, जिएं आत्म गौरव-स्वधर्म की रक्षार्थ, यही हैं हृदय मन्दिर के उद्गार!

51का अंक सर्वथा-सर्वत्र की शुभ माना गया है। और अपने **राष्ट्र-संस्कृति की रक्षार्थ और ऋषि दयानन्द के स्वप्नों की पूर्ति वैदिक नाद गुञ्जाने हेतु संकल्पित 'जनज्ञान' मों पण्डिता राकेशरानी के सम्पादन में अपने 50 वर्ष पूर्ण कर चुका है।**

जनज्ञान सर्वदा ही प्रखर और मुखर रहा है अपनी विचारभिव्यक्ति के लिए! **अत्यन्त ऊर्जा का अनुभव होता है जब लगभग प्रतिदिन ही लोगों के फोन आते हैं। पत्र आते हैं और सुझाव आते हैं.... जनज्ञान में प्रस्तुत कभी किसी लेख पर अथवा महात्मा जी की अमरवाणी अथवा सम्पादकीय या हृदय मन्दिर के उद्गार पर कोई न कोई टिप्पणी अथवा सुझाव अथवा आशीर्वाद प्राप्त होता ही है।...** कभी-कभी तो उलाहने भी मिलते हैं कि "इस बार जनज्ञान नहीं मिला या अभी जैसे मई माह में तो जनवरी का अंक नहीं मिला था-आदि-आदि....। परन्तु **तात्पर्य यही होता है कि जनज्ञान का प्रत्येक अंक संग्रहणीय और पठनीय होता है।** छूट कैसे गया??...

इलैक्ट्रोनिक मीडिया के इस दौर में भी जनज्ञान अपनी लोकप्रियता और पाठकों में लगातार वृद्धि के पथ पर अग्रसर है तो मुझे लगता है कि कुछ ऐसा प्रकाशित करें जो अन्यत्र उपलब्ध न हो रहा हो और इसी प्रयास में नित नई कड़ियां जोड़ने का, उन्हें स्वधर्म और स्वराज्य की रक्षार्थ-प्रसारार्थ एक सूत्र में पिरोने का प्रयत्न हम करते हैं।

दिसम्बर 2014 से मार्च 2015 तक 300 नए सदस्य जुड़े, यह भी हमारा सौभाग्य है। आज **प्रसन्नता का अनुभव ये होता है कि हम सही मार्ग पर हैं। धर्म की रक्षा या वार्ता या प्रचार हेतु 50-60 के दशक में जाकर चिन्तन नहीं करना चाहिए अपितु जितनी ऊर्जा है उसे पूरी ताकत के साथ यथाशीघ्र उम्र के जिस पड़ाव पर भी हों झोंक देना चाहिए।**

आज का युवा क्या प्रगति पथ पर अग्रसर है? तनिक सोचें??... कदापि नहीं.... मात्र **मशीनी मानव बन दो जून रोटी और परिवार के भरण-पोषण और थोड़ा आधुनिकता का जामा पहन भोग विलास की सामग्री जुटाने का साधन मात्र बन बैठा है।** बिसरा बैठा है कि **"शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्"**

हमें धर्म-अर्थ-जाम-मोक्ष के पथ पर चलना है। परन्तु न धर्म के मायने ज्ञात हैं, न मोक्ष की चाह। **प्रतीत होता है कि अमरत्व का घूंट पीकर आए हैं और सभी उपार्जन अर्थ और काम के इसी निमित्त करते हैं।** भरण-पोषण, खाद्य सामग्री और भोग विलास तो पशुओं के लिए भी यथाशक्ति सहज प्राण्य है तो यह मानव जन्म किसलिए??

यह क्रान्तियों के उद्घोष, यह बलिदान, ये आह्वान क्यूं हुए??.... कैसे हम इतने अहसान फरामोश बन गए??..... **न सावरकर स्मरण हैं, न महाराणा प्रताप... न सुभाष चन्द्र बोस,** जिन्होंने खून से आजादी की तहरीर लिखी.... **.10 मई 1857 की क्रान्ति का आगाज़ ही क्यूं हुआ??** बैठे रहते न ये भी सभी हाथ पर हाथ धर कर!!...

क्या इनके पास पैसा नहीं था या जीने की इच्छा नहीं थी या अपने परिवारजनों से प्रेम नहीं था??... **इनकी जीने की अभिलाषा तो इतनी उत्कट थी कि ये ...स्वयं को समर्पित कर,** हमें जीवन दे **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** को चरितार्थ कर गए....

धन्य-धन्य हैं ऐसे प्रेरक महान! जन-ज्ञान सदा ऐसे महापुरुषों की आवाज़ गुञ्जायमान करता रहा है और करता रहेगा। आने वाली पीढ़ियों का मार्गदर्शन करना, सत्य से उन्हें अवगत कराना हमारा नैतिक कर्त्तव्य है। **इस अमूल्य धरोहर-विरासत को अक्षुण्ण रखनेका बोध हम नहीं कराएंगे तो कौन कराएगा!!.....**

आइए! जनज्ञान के 51वें वर्ष में प्रवेश पर यह पावन संकल्प लें हम सभी... **" हे मां! तेरा वैभव अमर रहे, हम दिन-चार रहें न रहें।"** ❐

आपके-पत्र

एक विनम्र सुझाव

आदरणीया बहन

स्व. श्री मोहनलाल विष्णुलाल पाण्ड्या जी ने आर्य समाज के दस नियमों की जो व्याख्या की है; उनकी प्राज्ञी-वाणी वन्दनीया है। उन्होंने आर्य समाज के सातवें नियम की व्याख्या में **"प्रीतिपूर्वक"** शब्द की व्याख्या में लिखा है कि "उसके विषय में कुछ अधिक कहने की आवश्यकता नहीं। क्योंकि यह हम भले प्रकार जानते हैं कि हम **"संस्कृत"** में **प्रेम** और अरबी तथा **फारसी में इश्क** अथवा **मुहब्बत** और **अंग्रेजी में Love** (लव) कहते हैं।"

जबकि संस्कृत भाषा में **"प्रेम"** शब्द नहीं पाया जाता। इसका विभक्ति रूप भी नहीं चलता।

श्रीमद् दयानन्द सरस्वती ने शब्द की रचना के सन्दर्भ में एक अति वन्दनीय सहज बात कही है। **संस्कृत के प्रत्येक शब्द का निर्माण धातु से होता है। प्रेम शब्द किसी धातु से निष्पन्न नहीं होता है। चारों वेदों, उपनिषदों, वाल्मीकि रामायण, महाभारत योगवशिष्ठ, गीता, आदि में "प्रेम" शब्द नहीं पाया जाता।**

प्रीति, प्रीत, प्रिय आदि शब्द उपरोक्त ग्रन्थों में पाए जाते हैं। **प्रेम शब्द** हिन्दी भाषा तथा **"अमरकोष"** में पाया जाता है। तुलसी कृत रामायण में भी अति अल्प प्रयोग है। श्री तुलसी कृत रामायण में प्रीति की व्याख्या निम्न है।

1. कीन्ह प्रीति कछु बीच न राखा
लछिमन राम चरित सब भाखा॥

दोनों को एक-दूसरों को समझकर नम्रता पूर्वक बात करनी चाहिए।

2. पावक साखी देह करि, राखी प्रीति दृढ़ाई।

मानसिक और भावनात्मक पवित्रता बनी रहे-ऐसी वाणी बोली जाए। अर्थात् प्रेरक और बोधक वाणी का ही प्रयोग करें।

3. ऋग्वेद-(म. 9-13-24)

ऋतावाकेन सत्येन श्रद्धया तपसाः सुतः

जिस वाणी में **ऋत** (वैज्ञानिक अन्तरतम ज्ञान) और **"सत्य"** (बाह्य, इन्द्रियों से सीधा प्राप्त ज्ञान); जो शुद्ध भावों और संकल्पों से युक्त हो और **तप**(पवित्र कर्म) से निकली हो; ऐसी वाणी बोली जाए।

4. अर्थवेद-वाग् देवी ब्रह्म शंषिता।

यहां इसका भी अर्थ वही है जो ऋग्वेद के उपरि मन्त्र का है।

"प्रेम" शब्द सुगति रहित; दीन और दरिद्र है। इसका प्रयोग न करें तो अच्छा है।

-डॉ. यदुत्तम सिंह, महावीरपुर, नई गढ़ी रीवा (म.प्र.)

हमारे सांसद हैं महान

महोदया,

पिछले दिनों हुक्का, बीड़ी, सिगरेट, गुटखा आदि सभी प्रकार के धुम्रपान पर काफी चर्चा रही जिसमें **भाजपा के तीन सांसदों वर्मा, शर्मा व गुप्ता जी ने कहा कि धूम्रपान से कैंसर नहीं होता।**

शर्मा जी ने कहा कि बीड़ी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नहीं हैं। अगर बीड़ी बन्द हो जाएगी तो करोड़ों लोग बेरोजगार हो जाएंगे। **क्या अन्दाज है** इन सांसदों का धूम्रपान को महिमा मंडित करने का!

एक सांसद का कहना है कि हुक्का- बीड़ी हाजमे के लिए अच्छा रहता है। प्राचीन काल से आज तक सभी विद्वानों व वैद्य हकीमों ने तम्बाकू का किसी हालत में प्रयोग स्वास्थ्य के लिए हानिकारक बताया है। **गुटखा तो कैंसर का पक्का कारक है।** बच्चा, बूढ़ा, अनपढ़ सब जानते हैं कि धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है। जो धूम्रपान करते हैं वे भी जानते हैं कि यह स्वास्थ्य को हानि पहुंचाते हैं। बीड़ी का तो कहना है-

खांसी करूं खुरक करूं
फिर भी न मरे तो मैं क्या करूं।

पता नहीं ये **हमारे सासंद किस स्कूल में पढ़कर आए हैं जो धूम्रपान को महिमा मंडित कर रहे हैं।** इतने संकीर्ण ज्ञान वाले ये सांसद देश का क्या भला करेंगे??

-लक्ष्मण दास शर्मा, मंडलाना, नारनौल (हरियाणा)

-आपदा की किसी भी घड़ी में मैंने परमात्मा पर, आप पर और खुद पर कभी विश्वास नहीं खोया।

-पंडिता राकेशरानी

सुचरितानि नो इतराणि....

–डा. ज्ञानचन्द्र

भारतीय मनीषियों-ऋषियों में ज्ञानवृद्धता, तपनिष्ठता व शक्ति-सामर्थ्य भरपूर होते हुए भी विनम्रता, शील का गुण अतीव, ध्यातव्य व अनुकर्ण्य है। **उपनिषद् का ऋषि-गुरु, विद्यार्थी-शिष्य के गुरुकुल छोड़कर जाते समय जो उपदेश स्नातक को देते हैं। वह बहुत ही सुन्दर, उपयुक्त और निरहंकरिता पूर्ण वचनों द्वारा दिया गया परामर्श रूप उपदेश है।**

सत्यं वद, स्वाध्यान्माप्रमदः सत्यानप्रमदितव्यम् आदि सुदीर्घ उपदेशों के साथ जो मार्मिक बात है वह यह है कि गुरुवर कहते है कि–

"यानि अनवद्यानि कर्माणि, तानि सेवितव्यानि। नो इतराणि। यानि अस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि। नो इतराणि।"

जो-जो अनिन्ध्य, निर्दोष और रुचिकर कर्म हों उनका ही सेवन करना, अन्यों का नहीं। **हमारे भी जो सुचरित हो उनका अनुकरण अन्यों का नहीं।** आदि आदि।

वेदोपनिषद काल में व्यक्ति पूजा, वीरोपासना या हीरोवर्शिप को कभी भारतीय ज्ञानवानों ने उचित कृत्य नहीं माना। मानवीय वृत्ति की दुबर्लताओं व विशिष्ट स्वाभाविक अभ्यासों, कुलगत-वातावरणगत विचित्रताओं को ध्यान में रखते हुए ज्ञानवान से ज्ञानवान व्यक्ति में भी कुछ ऐसे तत्व रहते ही हैं जो उसकी अपूर्णता व अशक्यताओं की ओर निर्देश करते हैं।

अतः **"गुरुवचन हि केवलम्"**, 'गुर वचनम् **प्रमाणम्**' तक को ठीक है परन्तु **गुरु चरित्रं सतत अनुकरणीयम्**–यह वृत्ति हानि कर भी हो सकती है। इसका ध्यान गुरु स्वयं शिष्य को दिलाता रहता था।

परन्तु वेदोपनिषद् काल की विस्मृति के पश्चात् पौराणिक वृत्ति में गुरु के वचन व चरित्र को ईश्वरीय वचन व चरित्र मान कर आँख मूंद कर, बिना विचारे पालन की वृत्ति को आश्रय दिया जाता रहा। इससे अनेक चारित्रिक दोष भारतीय स्वभाव में आने लगे। **गुरु के विषय में, वचन या चरित्र के विषय में समालोचन विवेचन व विचार तक की मनाही, अस्वीकृति एक अभ्यास हो गया।**

आज तो प्रायः गुरुगण अपने अन्धानुकरण को बढ़ावा देते हैं। **साम्प्रदायिक या संस्थागत गुरुओं, प्रशिक्षकों के विषय में आप स्पष्ट ही सदोष वृत्ति पर बात तक नहीं कर सकते।** कट्टरता और **"हम या मैं ठीक हूं और मेरा गुरु ईश्वरीश या अवतार या ईशदूत है उसके चरित्र या वचन का विवेचन-विश्लेषण नहीं करने दिया जाएगा"**, यह वृत्ति बौद्धिक, आध्यात्मिक विकास का अत्यन्त गर्हित दोष है।

यहां महर्षि दयानन्द के वचन ध्यातव्य हैं। आर्यसमाज की स्थापना करते समय उन्होंने अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में कहा था कि–

> ***"मेरे मन्तव्य कोई अद्वितीय व असाधारण नहीं और न मैं सर्वज्ञ हूं। यदि मुक्तिपूर्वक विचार विमर्श के अनन्तर भविष्य में मेरी कोई भूल आपके सामने आए तो उसे ठीक कर लीजिए। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो यह समाज भी आगे चलकर एक सम्प्रदाय बनकर रह जाएगा...."***

इन महान ऋषि कल्प श्रेष्ठ संन्यासी व वेदमर्मज्ञ अखण्ड ब्रह्मचारी की आत्मविनम्रता व सत्य निष्ठा ध्यान देने और अनुकरण योग्य है।

परन्तु खेद का विषय है कि आज उन्हीं महर्षि के कतिपय उपासक-उपदेशक प्रश्न रूप से या जिज्ञासा रूप से महर्षि के विषय में कुछ कहते लिखते ही ज्वारान्वित व ज्वरान्वित हो जाते हैं।

विश्ववंद्य व वेदोद्धारक महानात्मा दयानन्द के जीवन, कर्म व विचारों पर खुला सम्वाद उनके स्वरूप की गरिमा को, उनके चरित्र की महिमा को प्रभासित ही करेगा। परन्तु **ईश्वरावतार की तरह उनके चरित्र को ईश्वरीय व वचनों को वेद-वाक्य के रूप में लेना तो उनके कार्य के विस्तार में बाधा ही पहुंचाएगा।** ❖❖❖

जन-जन की भाषा है हिन्दी, भारत माता के मस्तक की बिन्दी

हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है। हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना हम सभी का दायित्व है। अतः आप अपने सभी लेखन कार्य, पत्र तथा निमन्त्रण पत्र, अपने हस्ताक्षर आदि देवनागरी लिपि में ही लिखने का निर्णय करें। –सम्पादक

भाग-9 : नवाँ नियम

आर्य समाज के दस नियमों की अपूर्व-व्याख्या

गतांक से आगे-

—स्व. श्री मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या

नववां नियम—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

अर्थ—इसके पहिले आठ नियमों पर पूरा-पूरा अमल करने पर जो मनुष्य की सब प्रकार की उन्नति होती है उसके विषय में इस नियम में आदेश किया गया है। **वृद्धि अथवा समृद्धि को उन्नति कहते हैं।** वह विद्या की वृद्धि और अविद्या के यथावत् नाश होने से होती है। **हमारी यह प्रवृत्ति है कि हम अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट रहते हैं परन्तु इन नियम से यह आदेश किया गया है कि हम को केवल स्वार्थी ही नहीं होना चाहिए वरन् सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।**

कितने लोगों का कहना है कि इस नियम पर किसी का भी यथायोग्य अमल नहीं हो सकता है और न होता हुआ दृष्टि आता है। सो इतना तो हम भी कह सकते हैं कि **इस पर पूरा-पूरा अमल का हो जाना बहुत ही कठिन है परन्तु यह सिद्धान्त अयुक्त नहीं है। जिसका वह आदेश है वह महात्मा तो निःसन्देह इसका अनुरूप था।** उसने जो कुछ हमको आदेश दिया है उसके प्रतिकूल उसने कभी भी कुछ व्यवहार नहीं किया है। यदि हम उसके आदेश अर्थात् हमारे मन्तव्य पर न चलें तो यह उसका दोष नहीं है किन्तु हमारा दोष है और बुद्धिमान् लोग ऐसी दशा में उनको दोष नहीं देते हैं परन्तु अस्मदादि को भला बुरा कहा करते हैं।

इस आदेश में हम को हमारी निज उन्नति करने का निषेध नहीं किया गया है किन्तु हमको ऐसे सत्पुरुष बनने की शिक्षा करी गई है कि हम अन्य सब की भी इतनी उन्नति करें तथा चाहें कि हमारी निज उन्नति उसके अन्तर्गत होकर हमको स्वार्थी के साथ परार्थी भी बना देवे। अपना पेट तो पशु भी भर लेता है परन्तु मनुष्य वह है कि काम पड़े तो आप भूखा रह जाए पर अन्य किसी को भूखा न रहने दे। इसीलिए इस नियम की उन्नति की सब विधियों में एक-सी व्याप्ति है।....

जैसे कि किसी एक समाज अथवा एक प्रान्त के प्रतिनिधि ने अपने नगर अथवा प्रान्त की उन्नति का कोई विधान किया तो उसको एकदेशी ही दृष्टि नहीं कर लेनी चाहिए कि **अन्य सबसे सहायता लेकर अथवा न लेकर अपनी ही उन्नति कर सन्तुष्ट हो जाए और जिस समाज अथवा प्रान्त ने सहायता दी है अथवा न भी दी है वह जो कदाचित् अवनति को प्राप्त होने लगी है तो उसको अवनति को प्राप्त होने दे।** जब ऐसी स्वार्थी बुद्धि हो जाती है तब फिर एक समाज में विषमता फैल कर परार्थ का नाश हो जाता है।

इसी प्रकार हम अन्य बातों का भी विचार कर सकते हैं—**बुद्धिमान् जान सकते हैं कि अन्य सबकी उन्नति में अपनी उन्नति को समझना कैसा कठिन है।** और ऐसा समझने वाले का अन्तःकरण भी कैसा अलौकि होना चाहिए। स्मरण करना चाहिए **छठें नियम में शारीरिक, आत्मिक, और सामाजिक नामक तीन प्रकार की उन्नति मानी गई है** और उसकी संक्षिप्त व्याख्या वहां पर कर दी गई है। इस नियम के आदेश की तामील में आर्यसमाजों ने कालेज, हाईस्कूल, एंगलोबर्नेक्यूलर स्कूल और प्राईमरी स्कूल तथा पुस्तकालय और अनाथालय आदि कर रक्खे हैं और करते भी जाते हैं।

इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि ये केवल अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं हैं वरन् मनुष्यमात्र की उन्नति में अपनी उन्नति को समझते हैं। परन्तु वे अपने भले काम को कभी भी नहीं छोड़ेंगे। देखो वे चौमुखे लड़ते-भिड़ते भी जाते हैं, अनेक प्रकार के कष्ट और श्रम सहते हैं, **द्रव्य जैसी प्यारी वस्तु को आप दुःख पाकर परार्थ के लिए खरच करते हैं** परन्तु जब देखों तब परार्थ के लिए कमर कसके खड़े हुए हैं।

सांप्रतकाल में समाजों ने जो कुछ अपनी तथा पराई उन्नति करी है वह दस नियमों में जो सत् सिद्धान्तों का आदेश उन को किया गया है। उसका प्रताप है। क्योंकि उस महर्षि के उपदेश ग्रहण करने के पहिले वे सब भी अन्य सब बन्धुओं के सदृश पुरुषार्थहीन हो रहे थे और **यह भी उस सत्योपदेश का चमत्कार है कि समाजों के नियम और उपनियमों के अनुसार किसी मनुष्य को समाज में भरती होने की ही देर है कि उसके तन में अपने आप पुरुषार्थ आ जाता है और वह अपनी उन्नति में सन्तुष्ट न रह कर अन्य सबकी उन्नति में अपनी उन्नति को समझने लग जाता है।** इत्यो३म्।

विशेष

1857 की क्रान्ति में स्वामी दयानन्द का योगदान

—जसवन्तराय गुगलानी, गुड़गांव

स्वामी जी ने अपने स्वरचित जन्म परिचय में **1847 से 1856 तक जीवन वृतान्त सविस्तार लिखा है। 1857 से 1859 तक कुछ उल्लेख नहीं किया पुनः 1860 के बाद का वृतान्त लिखा है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि इस काल में वे स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भाग ले रहे थे।**

स्वतन्त्रता की क्रान्ति की सभाओं को सम्बोधित करते थे। सन् 1855 के आरम्भ में **प्रथम सभा** हरिद्वार में हुई। इस सभा में सम्राट बहादुरशाह जफर के शहजादे फिरोजशाह, अजीमुल्ला खां, रंगू बापू आदि सम्मिलित हुए। इस सभा में 1500 लोग उपस्थित हुए। **दूसरी सभा** गढ़ गंगा के मेले के अवसर पर गंगा तीर पर हुई जिसमें 2500 लोगों ने भाग लिया। **तीसरी सभा** अक्टूबर 1855 में हरिद्वार में हुई। इस सभा में 565 संन्यासियों ने भाग लिया। **इन सभाओं को स्वामी दयानन्द सम्बोन्धित करते थे।** इस सभा की **योजना स्व. ओमानन्द** (पूर्णानन्द के गुरु) तथा **स्वामी पूर्णानन्द ने तैयार की थी** तथा इसकी **व्यवस्था स्व. पूर्णानन्द सरस्वती के शिष्य प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द ने की।**

सन् 1857 की क्रान्ति—**यह ऐतिहासिक तथ्य है कि 1857 की क्रान्ति के सूत्रधार मंगल पाण्डे, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्यां टोपे, दिल्ली के सम्राट, बहादुरशाह जफर तथा अजीमुल्ला खां थे।**

> ***यह बाबा औघड़नाथ कौन था—इस साधु का उल्लेख उस समय के सरकारी अभिलेखों में उपलब्ध है। मेरठ में आज भी काली पलटन में बाबा औघड़नाथ का शिव मन्दिर विद्यमान है। माना जाता है कि यह बाबा औघड़नाथ और कोई नहीं बल्कि स्वयं स्वामी दयानन्द ही थे। जिन्होंने अपना छदम् नाम औघड़ रखा था।***

यह बाबा अप्रैल, मई व जून की मेरठ की तपती गर्मी में 9 बड़े मटकों में रात्रि को पानी भरकर रखते थे। दिन भर प्यासे सैनिकों को जल पिलाते थे कि वह हिन्दू है या मुसलमान? **यदि वह कहता 'हिन्दू'** तो.... उससे कहते कि जिन कारतूसों को मुंह से छीलते हैं, उनमें **गौ की चर्बी** लगी होती है **और मुसलमानों को** भी इस तथ्य से अवगत कराते थे **कि कारतूसों में सुअर की चर्बी** लगी होती है। **इस प्रकार से हिन्दु-मुसलमान सबको धर्म विरुद्ध कार्य कराया जाता है।**

इस प्रकार वे सैनिकों में अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध विद्रोह की भावना भर रहे थे। मंगल पाण्डे बाबा के प्रिय शिष्यों में से थे। जब उसका तबादला मेरठ से बैरकपुर हुआ तो उससे पूर्व रात्रि को वह बाबा से आशीर्वाद लेने आए थे।

स्वामी दयानन्द की आत्मकथा के आधार पर भी तथा उपरोक्त कुछ घटनाओं को दृष्टिगत करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि ऋषि दयानन्द की स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका रही है।

स्वामी दयानन्द का स्वराज्य के प्रति दृष्टिकोण: स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में स्वराज्य के बारे में कहा है कि "एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार नहीं देना चाहिए किन्तु राजा, जो सभा तदाधीन सभा, समाधीन राजा, राजा और सभा प्रजाधीन तथा प्रजा राजसभा के अधीन।"

दण्ड व्यवस्था—महर्षि दयानन्द का मानना है कि **दण्ड ही प्रजा का शासनकर्त्ता है,** सब प्रकार से रक्षक है। सोते हुए प्रजास्थ मनुष्यों में जागता है।

मनु ने दण्ड व्यवस्था सुदृढ़ बनाने का विधान किया है। जितना बड़ा अपराध हो उतना ही बड़ा दण्ड होना चाहिए। जितना समृद्ध व शक्तिशाली, व्यक्ति हो उसे उतना ही सख्तदण्ड होना चाहिए।

परन्तु विडम्बना तो यह है कि जो जितना शक्तिशाली है, राज्य में उसकी पहुंच है उसे उतना ही दण्ड कम मिलता है। जरा आप स्वयं सोचें कि

एक अपराध के लिए एक धनी व्यक्ति को भी एक हजार रुपया दण्ड और एक निर्धन जो मात्र 20 रुपए प्रतिदिन कमाता है उसे भी एक हजार रुपए का दण्ड, यह तो ऐसा हुआ कि एक अपराध के लिए हाथी को भी 50 कोड़े मारने का दण्ड तथा एक मेमने (बकरी के बच्चे) को भी वही दण्ड!!.

पाठकरण समझ सकते हैं कि इस दण्ड से तो बकरी के बच्चे की तो बोली ही राम हो जाएगी जबकि हाथी को 20 कोड़ों से कुछ प्रभाव पड़ने वाला नहीं है। **वर्तमान कानून एक सम्पन्न समर्थ तथा कानून की पूर्णतया जानकारी रखने वाले के लिए भी कानून का वही प्रावधान है तथा असमर्थ व निर्धन के लिए भी वही दण्ड है। यही कारण है कि देश में अत्याचार, व्यभिचार और भ्रष्टाचार में दिन प्रतिदिन**

वृद्धि हो रही है। करोड़ो की रिश्वत लेने वाला धन के बलबूत पर खुले आम घूमता है। जो **वर्तमान की दण्ड व्यवस्था पूर्णतया निष्क्रिय है।** फलस्वरूप देश में अत्याचार, अनाचार, भ्रष्टाचार तथा व्यभिचार का बोल बाला है।

स्वदेशी राज्य उत्कृष्ट–स्वामी जी अपने व्याख्यानों में तथा अपने ग्रन्थों में स्वदेशी राज्य का महत्व दर्शाते हुए कहते हैं, "कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह अपने पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, **न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं।"**

अन्य क्रान्तिकारी सुधार

दलित उद्धार–स्वामी दयानन्द ने दलित उद्धार हेतु व्यापक कार्य किए। उन्होंने **दलितों को यज्ञोपवीत करा कर विशाल हिन्दू जाति का अंग बनाने के अनथक प्रयास किए।** पौराणिक जगत् में दलितों को वेद पढ़ने का अधिकार था। उन्होंने कहा कि ईश्वर किसी भी मनुष्य को जल, वायु तथा अपनी कृपा में भेद भाव नहीं रखते तो हमें क्या अधिकार है कि हम वर्ग विशेष को ईश्वर द्वारा दिए गए ज्ञान से वञ्चित रखें।

स्त्रियों को अधिकार–यदि स्वामी दयानन्द न आए होते तो **आज के युग में जितने उच्च पदों पर महिलाएं आसीन हैं, यह अधिकार उन्हें नहीं मिलना था। स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था।** यहां तक कि उन्हें गायत्री जाप का भी अधिकार नहीं था। स्वामी जी ने इस अन्धविश्वास पर कड़ी चोट की।

जड़ पूजा के विरुद्ध–महर्षि का मानना था कि मूर्ति जड़ है। मूर्ति की पूजा अर्चना से कोई लाभ नहीं अपितु बुद्धि भी जड़ हो जाती है।

राजनीति में धर्म–राजनीति यदि धर्म विहीन होगी तो अत्याचार में वृद्धि होगी। महर्षि दयानन्द ने अन्ध विश्वासों के गढ़ को हिला दिया था।

कुम्भ के मेले में पाखण्ड खण्डिनी पताका–हरिद्वार में स्वामी जी ने पाखण्ड खण्डिनी पताका गाड़ी जो आज तक प्रतीक के रूप में हरिद्वार में मोहन आश्रम के अन्दर उद्घोष कर रही है कि महर्षि दयानन्द ने पाखण्डी पण्डों द्वारा ठगे जा रहे भोले भाले लोगों को चेताया कि **मात्र गंगा में डुबकी लगाने से पापों का नाश नहीं होता** अपितु कर्म करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

विधवा विवाह के पक्षधर–स्वामी जी विधवा विवाह के हामी थे। उनका कहना था कि जब पुरुष पत्नी की मृत्यु के उपरान्त पुन: विवाह कर सकता है तो स्त्री के साथ यह अन्याय क्यों? कि वह पति की मृत्यु के बाद विवाह न करे। कई बाल विधवाएं सिर मुण्डवा कर आजीवन श्वेत वस्त्र धारण करके जीवन व्यतीत करती है। यह अन्याय नहीं तो और क्या है?

बाल विवाह का निषेध–स्वामी जी का वेद के आधार पर मानना था कि **जब तक बालक 25 वर्ष का न हो जाए और कन्या 16 वर्ष की न हो जाए।** आज भी कुछ प्रदेशों में बच्चों के जन्म लेते ही उनका विवाह कर देते हैं। अब तो भारत सरकार के कानून के अन्तर्गत पुरुष 20 वर्ष से पूर्व तथा बालिका 18 वर्ष की आयु से पूर्व विवाह नहीं कर सकते।

श्राद्ध व तर्पण–विडम्बना का विषय है कि जीवित माता-पिता के भोजन व औषधियों तक की जो लोग व्यवस्था नहीं करते, वे मृतक श्राद्ध करते हैं। ब्राह्मणों ने अपनी रोजी-रोटी का तरीका बना रखा है कि ब्राह्मणों को दान दक्षिणा करो तो वह उनके पितरों को पहुंच जाएगी। **मृत्यु उपरान्त पितर किस योनि में है इतना तक तो वे जानते नहीं।** लोगों को मूर्ख बनाए जा रहे हैं। **स्वामी जी कहते थे यदि आप जीवित माता-पिता की सेवा करें तो वही वास्तविक श्राद्ध है।**

स्वामी दयानन्द के सुधारवादी कार्य असंख्य है जो गिनवाएं नहीं जा सकते।

पांच शत्रुओं पर विजय–मनुष्य के सबसे बड़े पांच शत्रु हैं–काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार।

काम पर विजय–सर्वविदित है कि भीष्म पितामह के बाद वे ही अखण्ड ब्रह्मचारी थे।

क्रोध पर विजय–उनके जीवन की अनेक घटनाएं हैं जिनमें परिलक्षित होता है कि वे अपने शत्रु पर भी कोधित नहीं होते थे। दो घटनाओं का यहां उल्लेख करना चाहूंगा।

स्वामी जी की कुटिया के सामने ही एक अन्य पौराणिक सन्यासी रहते थे। वह **साधु प्रतिदिन प्रात: काल स्वामी जी को जी भर कर गालियां देते थे। एक रोज स्वामी जी का एक भक्त उनको भेंट करने के लिए एक टोकरा फलों का लाया। स्वामी जी ने वह टोकरा उस गाली देने वाले साधु को भिजवा दिया।** साधु ने वह फल यह कहकर लौटा दिए कि दयानन्द को तो रोज मैं गाली देता हूं। तुम गलती से यहां लाए हो। **दयानन्द मुझे फल नहीं भेज सकता।** परन्तु **स्वामी जी ने भक्त को दोबारा भेजा** तथा **कहला भेजा कि गालियां देने में आप की ऊर्जा कम हो जाती है। ये फल आप ही के लिए हैं।** साधु बहुत शर्मिन्दा हुआ तथा स्वामी जी के चरण पकड़ के क्षमा याचना करने लगा।

जब स्वामी जी पूना में प्रवास कर रहे थे, उनके

शिष्यों ने आकर बताया कि कुछ लोग एक गधे पर एक व्यक्ति को बिठाकर जलूस निकाल रहे हैं, उसके गले में दयानन्द की पट्टी लगा रखी है और उसका मुख काला कर रखा है। यदि आप आदेश दें तो हम उनकी मरम्मत कर दें। **स्वामी जी ने बड़ी सरलता से कहा कि वह नकली दयानन्द है। उसका मुख तो काला होना ही चाहिए।** शिष्यों ने पुन: कहा कि वे उस पर पत्थर फेंक रहे हैं। स्वामी जी ने कहा **'यही तो मैं कहता हूं कि मूर्ति पत्थर है। आज वे पत्थर फेंक रहे हैं कल मूर्तियों को फेंकेगे। शिष्यों ने फिर कहा "महाराज वे कहते हैं दयानन्द शूद्र है, नीच है," स्वामी जी ने कहा मैं भी तो यही कहता हूं कि जन्म से प्रत्येक मनुष्य शूद्र है।** पाठक वृन्द स्वयं निर्णय करें कि यह क्रोध पर विजय नहीं तो क्या है।

लोभ पर विजय–उद्यपुर के महाराणा सज्जन सिंह ने स्वामी जी ने निवेदन किया–भगवन! आप मूर्ति–पूजा का खण्डन त्याग दें तो एकलिंग महादेव के महन्त की गद्दी आपकी है, उसकी लाखों की आय है।

स्वामी जी का उत्तर था "आप मुझे परमात्मा देव से विमुख करना चाहते हैं। राणा जी। आप के इस छोटे से राज्य से मैं एक दौड़ लगाकर बाहर जा सकता हूं। आप के प्रलोभन मुझे ईश्वर की आज्ञा भंग करने के लिए विवश नहीं कर सकते।"

मोह से निर्लेप–एक बार सच्चे ईश की खोज की मन में ठानी तो घर बार, माता–पिता, धन– दौलत रिश्ते नाते सबका मोह त्याग कर जो घर से निकले तो पुन: उस ओर मुख नहीं मोड़ा। **यहां तक कि गुरु विरजानन्द से दीक्षान्त उपरान्त वे गुरु के पास भी नहीं लौटे।**

निरभिमानी–स्वामी जी के असंख्य शिष्य थे जिनमें राजा–महाराजा, राणा–महाराणा, राज्य के उच्चधिकारी, धनी सेठ थे परन्तु स्वामी जी को अहंकार छू तक नहीं गया था। उनका रहन–सहन, तथा खान–पान अति साधारण था।

उपसंहार–स्वामी जी का चरित्र गुणों की खान है। इस विशाल समुद्र से मैंने कुछ बूंदे लेने का प्रयास किया है। आशा है **पाठकवृन्द इसका स्मरण वन्दन करेंगे तथा स्वामी जी द्वारा निर्देशित मार्ग पर चलकर जीवन सफल करेंगे।**

●●●

जनज्ञान के सहयोगी पाठकों से आह्वान्!

कम से कम दस और परिवार में पहुँचाएं जनज्ञान

'जनज्ञान मासिक' वैदिक संस्कृति, विशुद्ध राष्ट्रवाद तथा सबल समर्थ राष्ट्र के सृजन का प्रेरक माध्यम है। **पत्रिकाएं तो सैकड़ों हैं।** उनमें से अधिसंख्य विशुद्ध व्यावसायिक हैं, जबकि जनज्ञान एक 'अभियान' का सशक्त स्वर है। **विद्यमान सामाजिक, राजनीतिक तथा राष्ट्र से सम्बद्ध विषयों पर निर्भीक टिप्पणियाँ जनज्ञान की विशेषता है।**

- **यह अभियान है तुष्टीकरण के चक्रव्यूह से राजनीति को छुड़ाने का।**
- **यह अभियान है 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के उद्घोष को गुंजाने का।**
- यह अभियान है हिन्दुत्व के विश्वबन्धुत्वमय स्वरूप को दर्शाने का।
- आप अपने प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान का विज्ञापन भी जनज्ञान में दे सकते हैं!
- **यही है परिस्थिति का आह्वान्। घर-घर पहुँचे जनज्ञान।**
- सामग्री प्रकाशन में आपके सुझाव का होगा स्वागत।
  क्योंकि आप हमारे परिजन हैं, नहीं हैं अभ्यागत।

वार्षिक शुल्क–२००/-रु., त्रिवार्षिक-५५०/-रु, पांच वर्ष-९००/-रु, आजीवन ३१००/-रु०

बैंक ड्राफ्ट तथा मनीआर्डर "जनज्ञान मासिक" दिल्ली के नाम भिजवाएं। अथवा आप राशी सीधे यूनियन बैंक दिल्ली में खाता नं. 307902010056883 IFSC: UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं। **बैंक में जमा की गई राशी की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।**

सावरकर के 'आत्मार्पण' पर श्रद्धांजलि सुमन

मैं नौजवानों से हमेशा कहता हूं धार्मिक यात्रियों के लिए भले ही केदार नाथ, बद्रीनाथ, काशी, रामेश्वरम तीर्थस्थान होंगे, पर **देशभक्तों के लिए यदि कोई तीर्थस्थान है तो वह है अन्डमान। अन्डमान में भी पोर्ट ब्लेयर और उसमें में भी सेल्युलर जेल और सेल्युलर जेल में भी वह कक्ष जहां सावरकर जी ने सजा काटी थी।** छत्रपति शिवाजी के बाद यदि मुझे किसी के जीवन ने सबसे अधिक प्रभावित किया तो वीर सावरकर ने। **–श्री लालकृष्ण आडवाणी**

'पहली बार कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने संसद में सावरकर को तैल-चित्र लगाने का विरोध किया था और अब मणि ने सेल्युलर बन्दीगृह से सावरकर की पट्टिका हटवा दी है। इस प्रकार दोनों ने ही अपने इन कृत्यों से अपना ओछापन प्रकट किया है।'

–एस गुरूमूर्ति राजनैतिक विश्लेषक

'अफसोस इस बात का है कि लोग पढ़ते नहीं हैं और सुनी-सुनाई बातों पर बहस करना शुरू कर देते हैं। सावरकर बहुत बड़े स्वतन्त्रता सेनानी थे। सालों तक उन्होंने अंडमान में कालापानी की सजा काटी। **उन्हें कोल्हू का बैल बनाया गया, कोई एक दिन भी वैसी सजा काट कर दिखाए** तो फिर मैं उसे मानूं।'

–श्री (वसंत साठे, पूर्व केन्द्रीय मन्त्री

(कुछ समय पूर्व श्री वसंत साठे ने सावरकर को 'भारत-रत्न' से सम्मानित करने की पुरजोर मांग की थी।)

वीर सावरकर जी में वे गुण भी थे जो छत्रपति शिवाजी महाराज में थे और वे गुण भी थे जो स्वामी दयानन्द जी में थे। इस तरह सावरकर जी छत्रपति शिवाजी और स्वामी दयानन्द जी का संगम थे।

–स्व. प्रो. रामसिंह

मणिशंकर अय्यर द्वारा सावरकर पर मिथ्या लांछन लगाए जाने पर कुछ विशेषज्ञों एवं विद्वानों की तीखी प्रतिक्रिया–

'मणिशंकर अय्यर बहुपठित और जानकार व्यक्ति है। वह यह जरूर मानते होंगे कि स्वयं श्रीमती इंदिरा गांधी ने वीर सावरकर राष्ट्रीय समिति के सचिव को पत्र लिखकर टिप्पणी की थी कि **'ब्रिटिश सरकार के खिलाफ दुस्साहसी विद्रोह के कारण वीर सावरकर का संग्राम के इतिहास में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है।** मैं भारत के इस विलक्षण सपूत को जन्म-शताब्दी के समारोह की सफलता की कामना करती हूं।' यह दुर्भाग्य है कि ऐसे महान स्वतन्त्रता सेनानी के प्रति कृतज्ञ होने के बजाय अय्यर जैसे नेता कृतघ्नता भरी टिप्पणियां करते रहते हैं। वीर सावरकर का निरादार अक्षम्य अपराध है।'

–दीनानाथ मिश्र, सांसद एवं वरिष्ठ पत्रकार

'अय्यर को सबसे ज्यादा तकलीफ इस बात से है कि अंडमान हवाई अड्डे का नामकरण सावरकर जी के नाम पर क्यों किया गया? हवाई अड्डे पर एक संवाददाता से उन्होंने कहा, 'महात्मा गांधी की हत्या में उनकी भूमि आदि को देखते हुए एक भारतीय होने के नाते मुझे यह महसूस होता है कि सावरकर के नाम पर हवाई अड्डे का नामकरण गलत है।' लगता है कि कांग्रेसियों का इतिहास ज्ञान नगण्य है। 1937 में मुम्बई में कांग्रेस के नेतृत्व में निर्वाचित सरकार बनी तो उसने पहला काम यह किया कि रत्नागिरि में कैद सावरकर की नजरबंदी पूरी तरह से खत्म कर दी। इससे पूर्व 1923 में काकीनाड़ा कांग्रेस अधिवेशन में भी सर्वसम्मति से सावरकर की रिहाई की मांग का प्रस्ताव पारित किया गया था। **अय्यर ने यह भी ध्यान नहीं रखा कि सावरकर के देहावसान के बाद इंदिरा जी ने सावरकर को भारत की महान विभूति बताते हुए कहा था कि 'साहस और देश भक्ति के पर्याय सावरकर आदर्श क्रान्तिकारी के सांचे में ढले थे।'**

–बलबीर पुंज, पूर्व सांसद एवं पत्रकार

सावकर एक महान देशभक्त और भारतमाता के यशस्वी पुत्र थे। यदि भारत के लोग सावरकर को भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान नहीं देते, तो यह देश के प्रति उनका कृतघ्नता होगी। जो भी इस राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर से प्रेम करता है और राष्ट्र के प्रति वफादार है वह हिन्दू है, और मैं भी।

–श्री मोहम्मद करीम छागला

'सावरकर ने जब लन्दन में अपनी पढ़ाई समाप्त की तो उनको उपाधि देते समय यह प्रतिज्ञा लेने को कहा गया वे ब्रिटिश सम्राट के प्रति निष्ठावान रहेंगे। वीर सावरकर ने यह प्रतिज्ञा लेना अस्वीकार कद दिया। परिणामस्वरूप परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर भी उन्हें उपाधि से वंचित कर दिया। **जबकि नेहरु और गांधी आदि अनेक भारतीयों ने इस प्रतिज्ञा को दोहराया और उपाधि प्राप्त की।** इससे ही स्पष्ट है कि वास्तविक देशभक्त कौन है?**–अशोक कौशिक, वरिष्ठ पत्रकार**

स्वातंत्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर

जीवन वृत्तः विनायक दामोदर सावरकर का जन्म महाराष्ट्र (तत्कालीन नाम मुम्बई) प्रान्त में नासिक के निकट भागुर गाँव में हुआ था। उनकी माता जी का नाम राधाबाई तथा पिता जी का नाम दामोदर पन्त सावरकर था। इनके दो भाई गणेश (बाबाराव) व नारायण दामोदर सावरकर तथा एक बहन नैनाबाई थीं। जब वे केवल नौ वर्ष के थे तभी हैजे की महामारी में उनकी माता जी का देहान्त हो गया। इसके सात वर्ष बाद सन् 1899 में प्लेग की महामारी में उनके पिता जी भी स्वर्ग सिधारे। इसके बाद विनायक के बड़े भाई गणेश ने परिवार के पालन-पोषण का कार्य सम्भाला। दु:ख और कठिनाई की इस घड़ी में गणेश के व्यक्तित्व का विनायक पर गहरा प्रभाव पड़ा। **विनायक ने सन् 1901 में नासिक से मैट्रिक की परीक्षा पास की। बचपन से ही वे पढ़ाकू तो थे ही अपितु उन दिनों उन्होंने कुछ कविताएं भी लिखी थीं।** आर्थिक संकट के बावजूद बाबाराव ने विनायक की उच्च शिक्षा का समर्थन किया। **इस अवधि में विनायक ने स्थानीय नवयुवकों को संगठित करके मित्र मेलों का आयोजन किया। शीघ्र ही इन नवयुवकों में राष्ट्रीयता की भावना के साथ क्रान्ति की ज्वाला जाग उठी।**

सन् 1901 में रामचन्द्र त्रयम्बक चिपलूणकर की पुत्री यमुनाबाई के साथ उनका विवाह हुआ। उनके ससुर जी ने उनकी विश्वविद्यालय की शिक्षा का भार उठाया। मैट्रिक की पढ़ाई पूरी करके उन्होंने पुणे के फर्ग्युसन कालेज से बी.ए. किया।

लन्दन प्रवास

सन् *1904 में उन्होंने अभिनव भारत नामक एक क्रान्तिकारी संगठन की स्थापना की। 1907 में बंगाल के विभाजन के बाद उन्होंने पुणे में विदेशी वस्त्रों की होली जलाई।* फर्ग्युसन कॉलेज, पुणे में भी राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत ओजस्वी भाषण देते थे। **बाल गंगाधर तिलक के अनुमोदन पर 1906 में उन्हें श्यामजी कृष्ण वर्मा छात्रवृत्ति मिली। इंडियन सोशियोलाजिस्ट और तलवार नामक पत्रिकाओं में उनके अनेक लेख प्रकाशित हुए, जो बाद में कलकत्ता के युगान्तर पत्र में भी छपे।** सावरकर रूसी क्रान्तिकारियों से ज्यादा प्रभावित थे।

10 मई, 1907 को इन्होंने इंडिया हाउस, लन्दन में प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की स्वर्ण जयन्ती मनाई। **इस अवसर पर विनायक सावरकर ने अपने ओजस्वी भाषण में प्रमाणों सहित 1857 के संग्राम को गदर नहीं, अपितु भारत के स्वातन्त्र्य का प्रथम संग्राम सिद्ध किया।**

जून, 1908 में इनकी पुस्तक **'द इण्डियन वार ऑफ इण्डिपेण्डेंस:1857'** तैयार हो गयी परन्तु इसके मुद्रण की समस्या आयी। इसके लिए लन्दन से पेरिस और जर्मनी तक प्रयास किए गए किन्तु वे सभी प्रयास असफल रहे। बाद में यह पुस्तक किसी प्रकार गुप्त रूप से हॉलैंड से प्रकाशित हुई और इसकी प्रतियाँ फ्रांस पहुंचाई गईं। **इस पुस्तक में सावरकर ने 1857 के सिपाही विद्रोह को ब्रिटिश सरकार के खिलाफ स्वतन्त्रता की पहली लड़ाई बताया।** मई 1909 में उन्होंने लन्दन से बार एट ला (वकालत) की परीक्षा उत्तीर्ण की, परन्तु उन्हें वहां वकालत करने की अनुमति नहीं मिली।

लाला हरदयाल से भेंट

लन्दन में रहते हुए उनकी मुलाकात लाला हरदयाल से हुई जो उन दिनों इण्डिया हाऊस की देखरेख करते थे। 1 जुलाई, 1909 को मदनलाल ढींगरा द्वारा विलियम हट कर्जन वायली को गोली मार दिए जाने के बाद उन्होंने लन्दन टाइम्स में एक लेख भी लिखा था। **13 मई, 1910 को पैरिस से लन्दन पहुंचने पर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया परन्तु 8 जुलाई, 1910 को एस.एस. मोरिया नामक जहाज से भारत ले जाते हुए सीवर होल के रास्ते ये भाग निकले।**

24 दिसम्बर, 1910 को उन्हें आजीवन कारावास की सजा दी गई। इसके बाद 31 जनवरी, 1911 को इन्हें दोबारा आजीवन कारावास दिया गया। इस प्रकार सावरकर को ब्रिटिश सरकार ने क्रान्ति कार्यों के लिए दो-दो आजन्म कारावास की सजा दी, जो विश्व के इतिहास की पहली एवं अनोखी सजा थी। सावरकर के अनुसार-

"मातृभूमि! तेरे चरणों में पहले ही मैं अपना मन अर्पित कर चुका हूं। देश-सेवा ही ईश्वर-सेवा है, यह मानकर मैंने तेरी सेवा के माध्यम से भगवान की सेवा की।"

सेलुलर जेल में

सेलुलर जेल, **पोर्ट ब्लेयर**, जो कालापानी के नाम से कुख्यात थी। नासिक जिले के कलेक्टर जैकसन की हत्या के लिए नासिक षडयन्त्र काण्ड के अन्तर्गत इन्हें **7 अप्रैल, 1911 को काला पानी की सजा पर सेलुलर जेल भेजा गया। उनके अनुसार यहां स्वतन्त्रता सेनानियों को कड़ा परिश्रम करना पड़ता था।** कैदियों को यहां नारियल छीलकर उसमें से तेल निकालना पड़ता था। साथ ही इन्हें **यहां कोल्हू में बैल की तरह जुत कर सरसों व नारियल आदि का तेल निकालना होता था।** इसके अलावा **उन्हें जेल के साथ लगे व बाहर के जंगलों को साफ कर दलदली भूमि व पहाड़ी क्षेत्र को समतल भी करना होता था। रुकने पर उनकी कड़ी सजा व बेंत व कोड़ों से पिटाई भी की जाती थी।** इतने पर भी उन्हें भरपेट खाना भी नहीं दिया जाता था। सावरकर 4 जुलाई, 1911 से 21 मई, 1921 तक पोर्ट ब्लेयर की जेल में रहे।

स्वतन्त्रता संग्राम

1921 में मुक्त होने पर वे स्वदेश लौटे और फिर 3 साल जेल भोगी। जेल में उन्होंने **हिन्दुत्व पर शोध ग्रन्थ** लिखा। इस बीच 7 जनवरी, 1925 को इनकी पुत्री, प्रभात का जन्म हुआ। **मार्च, 1925 में उनकी भेंट राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक, डॉ. हेडगेवार से हुई।** 17 मार्च, 1928 को इनके बेटे विश्वास का जन्म हुआ। फरवरी, 1931 में इनके प्रयासों से बम्बई में पतित मन्दिर की स्थापना हुई, जो सभी हिन्दुओं के लिए समान रूप से खुला था। **25 फरवरी, 1931 को सावरकर ने बम्बई प्रेसीडेंसी में हुए अस्पृश्यता उन्मूलन सम्मेलन की अध्यक्षता की।**

1937 में वे अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के कर्णावती (अहमदाबाद) में हुए 19वें सत्र के अध्यक्ष चुने गए, जिसके बाद वे पुनः सात वर्ष के लिए अध्यक्ष चुने गए। **15 अप्रैल, 1938** को उन्हें मराठी साहित्य सम्मेलन का अध्यक्ष चुना गया। **13 दिसम्बर, 1937** को नागपुर की एक जन-सभा में उन्होंने अलग पाकिस्तान के लिए चल रहे प्रयासों को असफल करने की प्रेरणा दी थी। **22 जून, 1941 को उनकी भेंट नेताजी सुभाष चन्द्र बोस से हुई।** 9 अक्टूबर, 1942 को भारत की स्वतन्त्रता के निवेदन सहित उन्होंने चर्चिल को तार भेज कर सूचित किया। सावरकर जीवन भर अखण्ड भारत के पक्ष में रहे। **स्वतन्त्रता प्राप्ति के माध्यमों के बारे में गांधी और सावरकर का एकदम अलग दृष्टिकोण था।**

1943 के बाद दादर, बम्बई में रहे। 16 मार्च, 1945 को इनके भ्राता बाबूराव का देहान्त हुआ। 19 अप्रैल, 1945 को उन्होंने अखिल भारतीय रजवाड़ा हिन्दू सभा सम्मेलन की अध्यक्षता की। इसी वर्ष 8 मई को उनकी पुत्री प्रभात का विवाह सम्पन्न हुआ।

अप्रैल 1946 में बम्बई सरकार ने सावरकर के लिखे साहित्य पर से प्रतिबन्ध हटा लिया। 1947 में इन्होंने भारत विभाजन का विरोध किया। महात्मा रामचन्द्र वीर नामक (हिन्दू महासभा के नेता एवं सन्त) ने उनका समर्थन किया।

स्वातन्त्र्योपरान्त जीवन

15 अगस्त, 1947 को उन्होंने **भारतीय तिरंगा एवं भगवा, दो-दो ध्वजारोहण किए।** इस अवसर पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए, उन्होंने **पत्रकारों से कहा कि मुझे स्वराज्य प्राप्ति की खुशी है, परन्तु वह खण्डित है, इसका दु:ख है। उन्होंने यह भी कहा कि राज्य की सीमाएं नदी तथा पहाड़ों या सन्धि-पत्रों से निर्धारित नहीं होतीं, वे देश के नवयुवकों के शौर्य, धैर्य, त्याग एवं पराक्रम से निर्धारित होती हैं।**

5 फरवरी, 1948 को गांधी-वध के उपरान्त उन्हें प्रिवेन्टिव डिटेन्शन एक्ट धारा के अन्तर्गत गिरफ्तार कर लिया गया। 19 अक्टूबर, 1949 को इनके अनुज नारायणराव का देहान्त हो गया। 4 **अप्रैल, 1950 को पाकिस्तानी प्रधान मन्त्री लिकायत अली खान के दिल्ली आगमन की पूर्व सन्ध्या पर उन्हें सावधानीवश बेलगाम जेल में रोक कर रखा गया।**

मई, 1952 में पुणे की एक विशाल सभा में अभिनव भारत संगठन को उसके उद्देश्य (भारतीय स्वतन्त्रता प्राप्ति) पूर्ण होने पर भंग किया गया। **10 मई, 1957 को भारत की राजधानी दिल्ली में आयोजित हुए, 1957 के प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के शताब्दी समारोह में वे मुख्य वक्ता रहे।**

अक्टूबर, 1949 को उन्हें पुणे विश्वविद्यालय ने डी.लिट. की मानद उपाधि से अलंकृत किया। 8 नवम्बर, 1963 को इनकी पत्नी यमुनाबाई चल बसीं।

(शेष पृष्ठ-25 पर)

हिन्दू, हिन्दुत्व और वीर सावरकर

–डॉ. हरीन्द्र श्रीवास्तव

कई वर्षों में (या कई दशकों में) किसी एक शब्द विशेष को लेकर इतना घमासान नहीं हुआ होगा, जितना **'हिन्दू'** अथवा **'हिन्दुत्व'** को लेकर। यद्यपि इन दोनों शब्दों की गहनता, गम्भीरता और गरिमा को देखते हुए शब्द की संज्ञा का प्रयोग बहुत उपयुक्त या पर्याप्त नहीं है।

संसद से सड़क तक दूरदर्शन/रेडियो के स्टूडियों से लेकर चौपाल और चायखानों तक, पत्र-पत्रिकाओं से लेकर सभा, सम्मेलनों तक बस एक ही शब्द की धुन सुनाई देती है–हिन्दू, हिन्दुत्व, हिन्दूवाद, हिन्दूधर्म, हिन्दू समाज, हिन्दूराज्य, हिन्दूराष्ट्र, हिन्दूराष्ट्रीयता, हिन्दूसंगठन, हिन्दूशक्ति, हिन्दू-एकता, हिन्दूध्वज, हिन्दू जनमानस, हिन्दू चेतना, हिन्दू मानसिकता, हिन्दू उदारता, हिन्दू सहिष्णुता आदि, आदि।

और अब गुजरात चुनाव के बाद तो इस विशाल हिन्दू तरु में कई नई कोपलें भी फूट आई हैं। जैसे– **हिन्दू वोट बैंक, हिन्दू आक्रोश, हिन्दू फैक्टर, हिन्दू प्रतिशोध, हिन्दू लहर**..और भी न जाने क्या-क्या।

मजे की बात यह है कि इस सारी **'हिन्दू महाभारत'** में सबसे रोमांचक तथ्य यह उभरता है कि स्वयं हिन्दू (चाहे वह किसी भी अर्थ में हिन्दू हो, जिसकी व्याख्या हम आगे करेंगे) **इन शब्दों को लेकर इतना परेशान नहीं है, जितने वह जो हिन्दू नहीं हैं** या फिर कच्चे या आधे हिन्दू हैं।

अर्थात्...... **वे लोग जो हिन्दू होते हुए भी एक सीमा के बाद अपने को हिन्दू कहते हुए डरते हैं**। यही उलटबांसी आज की सबसे घिनौनी विडम्बना है। **'हिन्दू' शब्द का प्रयोग सबसे पहली बार कब और किस सन्दर्भ में हुआ, इसका कोई प्रामाणिक उल्लेख नहीं मिलता**। पर हां, ग्यारहवीं शताब्दी में कवि चन्दबरदाई रचित **'पृथ्वीराजरासो'** में इसका धड़ल्ले से प्रयोग हुआ और वह भी बड़ी शान से, शूरवीर के अर्थ में, जैसे–

'जब हिन्दू दल जोर हुआ छुट्टी मीरधर भ्रम
असमय अरबस्तान चला करन उद्वसाक्रम'

(**हिन्दुत्वः** वीर सावरकर), (लाहौर संस्करण **पृ. 49**)

शहाबुद्दीन को बार-बार हराने के बाद जब विजयश्री हिन्दुओं के हाथ लगी तो शहाबुद्दीन फिर न आने की शपथ लेकर भाग गया, परन्तु एक बार फिर अपना वचन भंग कर दिल्ली पर चढ़ाई कर दी। तब चन्दबरदाई ने लिखा–

निर्लज्ज, मलेच्छ को लाज नहीं, हम हिन्दू लजवान',

इसके बाद से भूषण सरीखे कितने ही कवियों ने छत्रसाल और शिवाजी के पराक्रम में कितना साहित्य लिखा। भूषण की ये पंक्तियां भला किसने नहीं सुनी–

'राखी हिन्दुवानी, हिन्दुवान के तिलक राख्यो,
स्मृति और पुराण राख्यो, वेद विधिसुनी मैं
राखी रजपूती राजधानी राखी राजन की,
धरा में धरम राख्यो, राख्यो गुण-गुणी में।'

सिखों के नवें गुरु श्री गुरु तेगबहादुर और दसवें गुरु श्री गुरु गोविन्दसिंह जी ने भी हिन्दुत्व की रक्षा का बीड़ा उठाया था और इसी यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति भी दे दी। इस्लाम स्वीकार करने की बात पर वे सिंह की तरह गरजे थे।

'सकल जगत में खालसा पंथ गाजे,
जगे धर्म हिन्दू सकल भंड बाजे'

छत्रपति शिवाजी और राणा प्रताप की हिन्दू-निष्ठा और हिन्दू साम्राज्य के संकल्प को लेकर कुछ भी बताने की आवश्यकता है क्या?

और यहां यह भी जोड़ देना अप्रसांगिक न होगा कि **ये सभी शूरवीर हिन्दूधर्म से भी अधिक हिन्दू साम्राज्य अथवा हिन्दूराष्ट्र के निर्माण के लिए कृत-संकल्प थे। आज के पिलपिले, बिना रीढ़ के केंचुए हिन्दुओं की तरह नहीं जो कहने को जन्म से तो हिन्दू हैं, (अतः नाम, गोत्र, संस्कार हिन्दुओं वाले) या कर्म से हिन्दू हैं** (वे होली, दीवाली, दशहरा, रक्षाबंधन, संक्रान्त आदि धूमधाम से मनाते हैं),

कुछ लोग और आगे बढ़कर हिन्दू, धर्म मानने का दावा करते हैं, इसीलिए..... घर-आंगन में तुलसी का बिरवा लगाते हैं, देवी-देवताओं के चित्र लगाते हैं, मन्दिरों, तीर्थस्थानों में नियमित रूप से जाते हैं, कथा, प्रवचन आदि बड़े भक्ति-भाव से सुनते हैं, यदा-कदा ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं, घर में गीता, रामायण सहेज कर रखते हैं, कई पशु-पक्षियों की पूजा करते हैं... और बस हिन्दू होने की दायित्व पूरा हुआ।

उनके लिए हिन्दू, जन्म, धर्म और कर्म से परे कुछ भी नहीं। अर्थात **राष्ट्रीयता के स्तर पर उनका हिन्दुत्व से कुछ लेना देना नहीं मुसलमानों के पचास से ऊपर मुस्लिम राष्ट्र हों, इससे उन्हें क्या अन्तर पड़ता है।** चालीस लाख यहूदियों के लिए इज़्राइल जैसा प्रबल राष्ट्र है, यह बात इन **'धर्म-निरपेक्ष'** हिन्दुओं के गले नहीं उतरती, क्योंकि वह (उनके शब्दों में) भारत की गौरवपूर्ण परम्परा के विरुद्ध है, अत: हिन्दू धर्म की रक्षा कैसे करूं? **हिन्दुओं पर होते हुए निरन्तर अत्याचार को कैसे रोकें?** बलपूर्वक या छलपूर्वक किए जा रहे धर्म-परिवर्तन को कैसे रोकें? हिन्दू-संगठन को कैसे प्रबल करें?

हिन्दू पूजा स्थलों पर निरन्तर होते हुए आक्रमणों को शास्त्रों के साथ-साथ शस्त्रों से भी कैसे रोकें? **घरों में लगे हुए सभी देवी-देवताओं के चित्रों में, धर्म की सुरक्षा के लिए, उनके पास शत्रु दिखाए गए हैं, तो फिर ऐसा हम क्यों नहीं कर सकते?**

यह क्षमा-शीलता और उदारता वीरों पर ही फबती हैं। पर **इन लिजलिजे हिन्दुओं को धर्म की इतनी विकृत परिभाषा दी गई है कि 'सहो, और कुछ न कहो', 'एक थप्पड़ खाओ, दूसरा गाल बढ़ाओ।' इन्हें अक्षरधाम की आतंकवादी घटना से थोड़ा दुख हुआ हो तो हो,** (ऐसा गुजरात चुनाव के परिणामों से लगता है) **पर गोधरा काण्ड से ये विशेष विचलित नहीं होते। और यदि आप इन्हें हिन्दू बनने को कहते हैं तो आप कट्टरवादी कहलाते हैं**-धर्मान्ध, उन्मादी और साम्प्रदायिक भी।

ऐसे तनावपूर्ण वातावरण में भी हिन्दू और हिन्दुत्व की सबसे सटीक, तर्कसंगत, प्रासंगिक और व्यावहारिक भाषा के लिए हमें रत्नागिरी में 1924 में लिखी गयी, वीर सावरकर की पुस्तक **'हिन्दुत्व'** की याद आती है, **जिसकी व्याख्या उन्होंने पहली बार 1937 में अहमदाबाद (कर्णावती) में अखिल भारतीय हिन्दू-महासभा के 19वें अधिवेशन में दी थी**, और जो आज भी हर दृष्टि से अद्वितीय और अकाटय है। क्योंकि वह धार्मिक नहीं, राष्ट्रीय है।

'आसिन्धु सिन्धुपर्यन्ता यस्य भारतभूमिका।
पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरिति स्मृतः।।

अर्थात्, सम्पूर्ण हिन्दू वही है, जो सिन्धु सरिता से सिन्धु-सागर तक फैले हुए प्रदेश को अपनी पितृ-भूमि और पुण्य-भूमि मानता हो, **जिसकी शिराओं में पूर्वजों की आन-बान-शान का लहू पछाड़ें मारता हो, जो हिन्दू जाति की संस्कृति को पैतृक धरोहर के रूप में अपनाता हो, जो इस सिन्धुस्तान (कालान्तर में हिन्दुस्तान) को अपनी पुण्यभूमि और ऋषि-मुनि अथवा पैगम्बरों की पुनीत जन्मभूमि मानता हो।**

'एक-राष्ट्र', 'एक-राष्ट्रीयता' और **'एक-संस्कृति'** हिन्दुत्व के यही तीन तत्व हैं और इस स्वीकारोक्ति में किसी का निजी धर्म आड़े नहीं आता। **सावरकर के ही शब्दों में कहें, तो, 'बोहरे, खोजे, ईसाई और मुसलमान, जो कभी हमारे ही भाई-बन्धु थे, उनके लिए यही स्वर्णिम अवसर है कि हमसे मिल जाएं और 'हिन्दुत्व शब्द के राष्ट्रीय अर्थ के साथ खीचा-तानी न करें।'**

पूर्ण हिन्दू केवल जन्म, कर्म व धर्म से नहीं, मर्म से होता है। **आस्था की आत्मा से उपजी, इस राष्ट्र समर्पित अवधारणा की कसौटी पर कुछ विरले ही खरे उतर पाते हैं। यूं तो लाला राधाकिशन और पं. सीताराम हर गली हर दुकान पर रहते हैं, पर काकोरी कांड के शहीद अशफाक उल्ला का फांसी से पहले पं. रामप्रसाद 'बिस्मिल' से यह कहना कि 'यार मुल्क की आजादी का सेहरा किसी मुसलमान के सर भी बन्धने दोगे, या सारा श्रेय तुम लोग ही ले लोगे?' उसे लाखों, करोड़ों हिन्दुओं से ऊपर खड़ा कर देता है.....** जो दरअसल हिन्दुओं के नाम पर कलंक हैं......

ऐसे हिन्दू....दान में भले ही सबसे आगे हों पर बलिदान में सबसे पीछे हैं।

-(लेखक की पुस्तक 'कालजयी सावरकर' से साभार)

❖❖❖

वेद प्रचार एवं गौशाला में प्राप्त सहयोग राशि

श्री यदुत्तम सिंह-रीवां	3000 रुपए
श्री आर्य समाज-नया बांस	1100 रुपए
श्री हनुमान आर्य-सिवानी मण्डी	500 रुपए
आर्यसमाज-सीताराम बाजार	500 रुपए
श्री देवनाराण-अलीगढ़	500 रुपए
श्री चक्रधर गोय-चक्रधर पुर	200 रुपए
श्री धनसिंह प्रतापसिंह सूर्यवंशी-जालान	50 रुपए

-सभी दान दाताओं का हार्दिक धन्यवाद

महान देशभक्त वीर सावरकर

देशभक्त क्रान्तिकारियों द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए **अंग्रेजों के विरुद्ध 1857 में जो सशस्त्र क्रान्ति की गई थी उसे अंग्रेजों ने गदर बता कर देशभक्त भारतीयों को भ्रमित करने की जो कुचेष्टा की थी उसी भ्रम को तोड़ने के लिए वीर विनायक दामोदर सावरकर** ने ब्रिटेन में बैठकर **'1857 का स्वतन्त्रता संग्राम'** नाम का **क्रान्तिग्रन्थ लिखा** जिससे डरे हुए **अंग्रेजों ने छपने से पहले ही उस पर प्रतिबन्ध लगा दिया था।**

वीर सावरकर ने **यह ग्रन्थ 1907 में लिखा था**। इसका अंग्रेजी अनुवाद हालैण्ड में छपा, वहां से फ्रांस और भारत में भेजा गया। **क्रान्तिकारियों ने इसे गीता की तरह पढ़ा।**

इसका **दूसरा संस्करण भीखाजी कामा, लाला हरदयाल आदि क्रान्तिवीरों ने छपवाया। तीसरा संस्करण सरदार भगत सिंह ने गुप्त रूप से छपवाया। यह ग्रंन्थ इतना लोकप्रिय था कि इसकी एक-एक प्रति उस समय तीन-तीन सौ रुपए में बिकी।**

वीर सावरकर ने अपनी देशभक्ति, धैर्य, अदम्य साहस, त्याग, उच्चतम, मनोबल से यह सिद्ध कर दिया कि अपनी मातृभूमि-पितृभूमि और पुण्य भूमि की स्वतन्त्रता के लिए पत्नी-पुत्री, परिवार का सुख, मान-सम्मान, बड़ा पद-बड़ी नौकरी और निजी सुखों को हंसते-हंसते त्याग किया जा सकता है।

अग्निपथ पर आगे बढ़ने वाले महान देशभक्त वीर सावरकर को पहले अंग्रेजी सरकार ने, फिर नेहरु की कांग्रेस सरकार ने जेलों में बन्द करके जो कठोरतम दु:ख दिए, यह वीर आखिरी सांस तक उन दु:खों से विचलित नहीं हुआ।

महाराष्ट्र में नासिक जिले के भगूर नामक ग्राम में दामोदर सावरकर और राधाबाई के घर 28 मई 1883 में वीर विनायक दामोदर सावरकर का जन्म हुआ। 1901 में जब यह मैट्रिक में पढ़ रहे थे तो **22 जनवरी, 1901 में ब्रिटेन की रानी विक्टोरिया की मृत्यु होने पर भारतवर्ष में होने वाली शोक सभाओं का विरोध करते हुए उन्होंने कहा था कि शत्रु देश की रानी का शोक हम क्यों मनाएं?**

22 अगस्त, 1906 में सबसे पहले वीर सावरकर ने विदेशी वस्त्रों की होली जलाई थी। उस कार्यक्रम की अध्यक्षता लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने की थी। परिणामत: उन्हें पूना कालेज से निकाल दिया और दस रुपए का जुर्माना लगाया गया। कालेज अधिकारियों की लोकमान्य तिलक ने 'केसरी' के माध्यम से निन्दा की थी। फिर बम्बई विश्वविद्यालय से बी.ए. पास किया। एडवर्ड के राज्यारोहण में भारत में होने वाले उत्सवों का विरोध करते हुए कहा था कि दासता का उत्सव क्यों मना रहे हो? **9 जून, 1906 को छात्रवृत्ति लेकर बैरिस्टरी का अध्ययन करने ब्रिटेन में समुद्र मार्ग से गए।**

बन्दी जीवन–13 मार्च, 1910 को लन्दन में विक्टोरिया स्टेशन पर वीर सावरकर को बन्दी बना लिया गया। **उनके बड़े भाई गणेश सावरकर को 1908 में देशभक्ति की कविता लिखने के कारण 9 जून 1909 को आजीवन कारावास की सजा देकर कालापानी भेजा गया। छोटे भाई नारायण सावरकर को क्रान्तिकारियों का साथी बताकर जेल में बन्द कर दिया।**

जब इस घटना का वीर सावरकर को पता लगा तब गर्व से बोले **"इससे बड़ी गौरव की क्या बात होगी कि हम तीनों भाई भारत माता की आजादी के लिए तत्पर हैं।"**

समुद्र तरणम्–1 जुलाई, 1910 को ब्रिटेन से भारत लाने के लिए वीर सावरकर को समुद्री जहाज से कठोर पहरे के बीच अंग्रेज पुलिस लेकर चल पड़ी। **8 जुलाई 1910 को वीर सावरकर स्वतन्त्र भारत की जय बोल कर समुद्र में कूद पड़े।**

अंग्रेजों ने खूब गोलियां चलाई पर निर्भय सारवकर फ्रांस की सीमा पर पहुंच गए। फ्रांस की भूमि से सावरकर को गिरफ्तार किया तो इसका विरोध हुआ तथा अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय हेग में केस चला पर फ्रांस और ब्रिटेन की मिलीभगत के कारण उनको न्याय नही मिला। **30 जनवरी, 1911 में वीर जी को दो आजन्म कारावास की सजा सुनाई तब वे हंस कर बोले-चलो ईसाई सत्ता ने हिन्दू धर्म के पुनर्जन्म सिद्धान्त को मान लिया।**

काला पानी की सजा–देशभक्त क्रान्तिकारियों को काले पानी की सजा सब के भयानक मानी जाती थी क्योंकि वहां से जीवित लौटने की आशा नहीं रहती थी। यमलोक जैसी भयानक सैल्यूलर जेले में 7 खंड थे। **दूसरी मंजिल की 234 नं. कोठरी में सोने और**

खड़े होने पर दीवार छू जाती थी। वीर सावरकर को नारियल की रस्सी बनाने और 30 पौंड तेल निकालने के लिए बैल की तरह कोल्हू में जोता जाता था। इतना शारीरिक कष्ट भोगने के बाद भी रात को दीवारों पर कविता लिखते, याद करते और मिटा देते। **ऐसा कष्टसहिष्णु और साहित्यकार कैदी इस संसार में वीर सावरकर के अलावा न कोई हुआ, न शायद होगा।**

13 मार्च, 1910 से लेकर 27 वर्षों से अधिक (संसार में संविधान राजनीतिक बन्दी) समय तक विभिन्न जेलों में अमानवीय पीड़ा भोगकर ***10 मई, 1937 में उच्च मनोबल, ज्ञान और शक्ति से भरपूर इच्छाशक्ति के धनी वीर सावरकर अंग्रेजी जेल से ऐसे बाहर निकले जैसे लम्बी रात का अन्धेरा चीर कर सूर्य बाहर आ रहा हो।*** *1857 की क्रान्ति भी 10 मई को ही शुरु हुई थी।*

वीर सावरकर से अंग्रेजी सत्ता इतनी भयभीत थी। कि अन्डमान से रत्नागिरि क्षेत्र से बाहर नहीं जाने दिया। रत्नागिरि जेल में वीर जी 13 साल तक रहे और साहित्य रचना, शुद्धि आन्दोलन, अस्पृश्यता-निवारण, हिन्दी भाषा शुद्धि कार्य, संस्कृत पढ़ने की प्रेरणा आदि अनेकों कार्य किए।

हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्थान—वीर सावरकर का सारा जीवन हिन्दुत्व को समर्पित था। अपनी पुस्तक 'हिन्दुत्व' में हिन्दू कौन है? इसकी परिभाषा में यह श्लोक लिखा था—

आसिन्धु सिन्धुपर्यन्तायस्य भारतभूमिका!
पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरिस्मृतः!!

अर्थात् भारत भूमि के तीनों ओर के सिन्धुओं (**समुद्रों**) से लेकर हिमालय के शिखर से जहां से सिन्धु नदी निकलती है वहां तक की भूमि जिसकी पितृ (**पूर्वजों**) भूमि है यानी जिनके पूर्वज भी इसी भूमि में पैदा हुए और **जिसकी पुण्य भूमि यानी तीर्थ स्थान इसी भूमि में है, वही हिन्दू होता है।**

धर्मान्तरण-राष्ट्रान्तरण—वीर सावरकर कहते थे कि यदि कोई हिन्दू धर्म बदलकर मुस्लिम या ईसाई बनेगा तो उसकी तीर्थ भूमि दूसरे देश हो जाएंगे। उसकी धार्मिक आस्था, इस राष्ट्र से हटकर दूसरे राष्ट्र के लिए होगी। अर्थात् रहेगा तो इसी देश में पर विचार बदल जाएगा इसलिए **वे धर्मान्तरण को राष्ट्रान्तरण कहते थे। उन्होंने हिन्दू का सैनिकीकरण और राजनीति के हिन्दूकरण पर जोर देते हुए कहा था कि प्रत्येक हिन्दू को सैनिक बनाओ और राजनीति हिन्दुत्व को केन्द्र बिन्दु बनाकर लागू करो अर्थात् जैसे मुस्लिम और ईसाई देशों की राजनीति मुस्लिम और ईसाई हितों की सुरक्षा के लिए होती है तो भारत में ऐसा क्यों नहीं हो सकता?**

वीर सावरकर धर्मान्तरितों का शुद्धिकरण करके पुनः हिन्दू बनाने के प्रबल पक्षधर थे। **कई बार हिन्दू महासभा के अध्यक्ष भी रहे तथा उन्होंने हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्थान तीनों को सशक्त बनाने पर जोर दिया।** ❑❑❑

(पृष्ठ-21 का शेष)

सितम्बर, 1966 से उन्हें तेज ज्वर ने आ घेरा, जिसके बाद उनका स्वास्थ्य गिरने लगा। **1 फरवरी, 1966 को उन्होंने मृत्युपर्यन्त उपवास करने का निर्णय लिया।**

एकाएक 26 फरवरी, 1966 को उनकी स्थिति और भी गम्भीर हो गई। ऑक्सीजन दी गई, इंजेक्शन लगाए गए, किन्तु सब बेकार। **अन्त में 11 बजे भारत मां की मिट्टी में जन्मा बेटा उसकी धरती में लीन हो गया। स्वातन्त्र्य वीर मां की गोद में थककर सो गया। एक ज्योतिपुंज बुझ गया।** समस्त देश में शोक की लहर दौड़ गई।

वसीयत में भी अपनी राष्ट्रभक्ति को गूंथ दिया था यह लिखकर कि 'मेरे निधन पर हड़ताल करके, कामकाज बन्द करके राष्ट्रीय हानि न की जाएं।' वीर सावरकर का समस्त जीवन जिस प्रकार प्रेरणा का अजस्र स्रोत रहा, **उनकी वसीयत भी प्रेरणादायक थी।**

वीर सावरकर की अन्त्येष्टि में लाखों नर-नारियों ने भाग लिया। समस्त देश में शोक-सभाएं करके उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इनका समस्त जीवन मां भारती की वेदी पर दीए की लौ की तरह जलता रहा। अगर **इस महान आत्मा के जीवन की कर्मठता, देश-प्रेम, त्याग, बलिदान, सहन- शक्ति और साहसिक भावनाओं का प्रकाश हमें हमारा कर्त्तव्य-पथ दिखलाता रहे, तभी इस महान् आत्मा को शान्ति मिलेगी।** और इनका बलिदान सार्थक होगा।

—क्रान्तिवीर सावरकर से साभार

सावरकर के सपनों का भारत

उनकी कल्पना उन्हीं के शब्दों में

हिन्दू हृदय सम्राट स्वातन्त्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर हमारे मध्य नहीं है। वे दीपक बनकर जले थे। अब नक्षत्र बन चुके हैं। हिन्दू राष्ट्रवाद के उद्‌गाता सावरकर के महान् त्याग और तपस्या के समक्ष नागराज हिमालय भी नतमस्तक था, जिनकी प्रबल वीरता को देखकर पौरुष और पराक्रम को भी आश्चर्य होता रहा, वह विश्व के अद्वितीय क्रान्तिकारी, महान दिशानायक एवं राष्ट्र निर्माता (26 फरवरी 1966 को) अपनी नश्वर काया की स्वेच्छया समर्पण कर अपनी आकांक्षा और अपने सपनों की विरासत देश के जन-जन को सौंप गए थे। मौत की छाया में पला यह महापुरुष मृत्युंजय बन चुका है। उनकी पार्थिव प्रतिमा हमारे मध्य नहीं है किन्तु उनके शाश्वत विचार आज भी हमारे मार्गदर्शक हैं। प्रस्तुत है वीर सावरकर की भारत के सम्बन्ध में कल्पना उन्हीं के शब्दों में........

"मेरे सपनों का भारत एक ऐसा लोकतन्त्रीय राज्य है, जिसके सभी धर्मों और मत-मतान्तरों के अनुयायियों के साथ पूर्ण समानता का व्यवहार किया जाएगा। किसी को दूसरे पर आधिपत्य जमाने का अवसर न रहेगा। **जब तक कोई व्यक्ति हिन्दुओं को इस पुण्यभूमि तथा मातृभूमि हिन्दुस्तान को एक राज्य मानकर, इसके प्रति अपने दायित्वों का निष्ठा सहित पालन करेगा, जो आसिन्धु-सिन्धु पर्यन्त विस्तीर्ण हैं, तब तक उसे पूर्ण अधिकार प्राप्त होंगे।**

हिन्दू जातिविहीन और संगठित आधुनिक राष्ट्र का रूप ग्रहण करेंगे। **विज्ञान और औद्योगिकी को बढ़ावा मिलेगा, जिससे सभी भूमि राज्य की होगी। और कोई भी जमींदार न होगा। सभी महत्वपूर्ण उद्योगों का राष्ट्रीयकरण होगा तथा भारत खाद्यान्न, वस्त्र और प्रतिरक्षा की दृष्टि से पूर्णतः आत्मनिर्भर होगा। मेरे सपनों के भारत का वसुधैव कुटुम्बकम् के महान आदर्श में विश्वास होगा। सैनिक दृष्टि से सबल अखण्ड हिन्दुस्तान की विदेश नीति होगी, तटस्तथता और शान्ति की। शक्तिशाली और अखण्ड हिन्दुस्तान ही विश्व में स्थाई शान्ति और समृद्धि की दिशा में प्रभावी योगदान दे सकता है।"**

हिन्दू सहिष्णु है

"सावधान! हिन्दुओं के बारे में यह कहा जाता है कि हिन्दू बड़े सहिष्णु हैं। परन्तु स्मरण रखिए, यह भावना दूसरों ने फैलाई है। **हिन्दुओं का वास्तविक इतिहास यदि आप देखेंगे तो आपको विदित होगा कि हिन्दू सहिष्णु है और असहिष्णु भी है।** न्याय के साथ हिन्दुओं ने सदैव सहिष्णुता का आदर किया है और अन्याय के प्रति सहिष्णुता बरती है। अतः दूसरों के धोखे में हमें नहीं आना चाहिए। सहिष्णुता मात्र को ही सद्‌गुण समझकर अपने बड़प्पन की रक्षा में धर्म तथा राष्ट्र का घात हमें सहन नहीं करना चाहिए। **हिन्दू सहिष्णु हैं, यह भावना फैलाकर और हिन्दुओं को औषधि शिक्षा, आर्थिक सहायता और भोजन देकर उन्हें बड़ी योजना सहित धर्मान्तरित किया जाता रहा है।**

इस अवस्था में हिन्दू महासभा व आर्यसमाज सरीखी हिन्दू संस्थाओं को यह घोषित करना चाहिए कि आगामी कुछ ही वर्षों में हम भारत को इस भयानक संकट से मुक्त करेंगे।"

धर्म की परिभाषा

"क्या धर्म अर्थात् पारमार्थिक चर्चा द्वैत-अद्वैत का वाद-विवाद या चेतन-अचेतन की खोज है अथवा केवल भावना है जो व्यक्ति शून्य हो? नहीं। **विशेष रूप से हमारा धर्म महान् होने से हम धर्म को ही राष्ट्र धर्म कहते हैं। हमारा इतिहास ही धर्म है। इतना ही नहीं अपितु हमारा दैनिक व्यवहार जो इतिहास समाज और राष्ट्र को पुष्ट करता है वही हमारा धर्म हैं।** धर्म की यह परिभाषा विधर्मी स्टालिन जैसे कम्युनिस्टों को भी माननी पड़ी थी।

अमरीका का राष्ट्रपति बाइबिल हाथ में लिए बिना राष्ट्रपति पद की शपथ ग्रहण नहीं कर सकता, इंग्लैण्ड का सम्राट् यदि प्रोटेस्टैन्ट न हो तो उसे राज्य के पद से त्याग पत्र देना पड़ता है। **यदि छोटे-से-छोटे पाश्चात्य देश में हम जाएं हमें यही दिखाई देगा कि वह राष्ट्र किसी न किसी धर्म का अनुयायी होगा।** हम हिन्दू हैं और हमने दुनिया देखी है। देश, इतिहास और व्यवहार के विशुद्ध न्यायपूर्ण बरताव को ही धर्म कहते हैं। इसलिए धर्म में महान शक्ति होती है। हम, हमारा देश, इतिहास और व्यवहार हिन्दुस्तान के वैभव को बढ़ाने वाला है। इस प्रकार व्यक्तिगत और

9 मई जिनकी जयन्ती है

महाराणा प्रताप का पर्वतीय जीवन

–बचनसिंह सिकरबार

भारतीय इतिहास के अप्रतिम योद्धा महाराणा प्रताप के साथ **"हल्दीघाटी"** के युद्धक्षेत्र को उल्लेखविहीन कर देने से उनकी गौरवगाथा अधूरी ही नहीं रह जाएगी, अपितु पूरी हो ही नहीं सकेगी। ऐसे ही **इस महान् सेनानी के जीवन-संघर्ष, उच्च आदर्शों, देशाभिमान समरतन्त्र दूरदर्शिता, विजिगीषा को समझने हेतु उनके वन्य एवम् पर्वतीय जीवन और इस दौरान घटित घटनाओं के विषय में जानना अपरिहार्य होगा।**

महाराणा प्रताप ने हल्दीघाटी में मुगल सेना से हार जाने के बाद अपने जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा जंगलों और पर्वतों में गुजारा था। यहीं रहकर उन्होंने अपने समय की प्रबलतम शक्ति से डटकर मुकाबला ही नहीं, बल्कि अपने राज्य में सुव्यवस्था भी स्थापित की थी।

हल्दीघाटी की पराजय से सबक लेकर महाराणा प्रताप ने सीमित साधनों व थोड़े से सैनिकों को लेकर विकट शत्रु का सामना करने के लिए एक नई **"गोरिल्ला"** रण-पद्धति को अपनाना श्रेयस्कर समझा। **महाराणा प्रताप को विशाल एवं शक्ति सम्पन्न मुगल सेना से खुले मैदान में टक्कर लेने की अपनी भूल समझ में आ गई थी।** परिवर्तित रणपद्धति में मैदानी क्षेत्र में जमकर मुकाबला करने के स्थान पर लुकाछिप कर छोटी-छोटी सैनिक टुकड़ियों में बंटकर शत्रु पर अचानक घात लगाकर हमला कर भाग निकलना तथा उनकी रसद को बीच में ही लूट लेना होता था। **इस गौरिल्ला रणपद्धति के माध्यम से मैदानी क्षेत्रों में युद्ध करने में अभ्यस्त मुगल सेना को अच्छी तरह छकाया जा सकता था। अत: "गोरिल्ला" रणपद्धति की सफलता के लिए महाराणा प्रताप के लिए वनों और पर्वतों का सहारा लेना जरूरी था।**

महाराणा प्रताप ने चित्तौड़ की आजादी को देश तथा जनतासाधारण की स्वतन्त्रता का प्रश्न बनाकर जनान्दोलन खड़ा करना चाहते थे। इसके लिए जन साधारण एवं अन्य जातियों से निकट सम्बन्ध बनाने हेतु राजसी महलों का परित्याग कर उनके जैसा जीवन व्यतीत करना भी आवश्यक था। इसके अलावा सामरिक दृष्टिकोण से जंगलों और पहाड़ी कन्दराओं, पहाड़ों और पहाड़ी मार्गों का ज्ञान कर भौगोलिक स्थिति के अनुरूप आक्रमण की योजना भी पर्वतों के मध्य वास करने का एक उद्देश्य था। इस प्रकार महाराणा प्रताप का वन्य एवं पर्वतीय जीवन उनके समरतन्त्र का एक प्रमुख अंग था जिसके कारण वह मुगलसाम्राज्य से जीवन पर्यन्त बराबर टक्कर लेते रहे, जिसमें उन्हें किसी सीमा तक काफी सफलता प्राप्त हुई। **हल्दी घाटी के मैदान में आहत महाराणा दुर्गम पहाड़ों के मध्य स्थित कोल्मारी गांव में सैनिकों सहित पहुंचे, जहां पर उन्होंने घायल सैनिकों के लिए प्रचुर मात्रा में भोजन तथा उपचार हेतु औषधियों और कुशल वैद्यों की व्यवस्था कर रखी थी।** यहां पर कुछ समय रुककर महाराणा ने अपने आहत सैनिकों का उपचार कराया।

दुश्मन के दांत खट्टे किए

इसके बाद महाराणा ने भीतरी गिरवा के पहाड़ी नाकों पर अपने चुनिन्दा सिपाहियों को तैनात कर गोगुन्द से डेरा जमाए विजयी मुगल सेना की रसद बन्द करा दी। **भोजन की आपूर्ति न होने पर मुगलसेना कारागार में बन्द बन्दियों से भी बदतर जीवन गुजारने के लिए मजबूर हो गयी। यहां बहुतायत में पैदा होने वाले खट्टे चूक कच्चे आम खाने के लिए विवश हुए। ऐसी स्थिति में मुगलसैनिक जान बचाकर जिनको जहां राह मिली भाग निकले।**

महाराणा प्रताप की नई रणपद्धति ने मुगलों की जीत को हार में परिणत कर दिया। **इसी वजह से विजयी मुगल सेनापति मानसिंह और विख्यात इतिहासकार बदायूंनी के अजमेर पहुंचने पर सम्राट अकबर ने किसी तरह का सम्मान प्रदर्शित नहीं किया।**

महाराणा प्रताप मुगलों को गोगुन्द से निकालकर ही चुप नहीं बैठे, वरन् अपने पूर्वज महाराणा कुम्भा की भान्ति कुम्भलगढ़ से लेकर सहाड़ा, और गोड़वाड़ से लेकर आसींद तथा भैसरीगढ़ के पहाड़ी के नाकों पर मुगलों के प्रवेश को रोकने के लिए अपने विश्वासपात्र भीलों की पालोंकी को बसा दिया, जो कि राष्ट्र के सजग प्रहरी का दायित्व बखूबी निर्वाह करते थे।

इस नई व्यवस्था की सफलता हेतु महाराणा पहाड़ी कन्दराओं तथा बीहड़ वनों में सपरिवार दर-दर भटकने लगे और उन्होंने जीवन के समस्त सुख वैभव तथा विलासिताओं का परित्याग कर जीवन की आधारभूत सुविधा-अन्न व पानी से भी वंचित रहना स्वीकार कर लिया।

जननायक के रूप में

महाराणा ने मुगल सेना की केवल नाकेबन्दी में ही सफलता प्राप्त नहीं की बल्कि जनसाधारण के साथ रहकर घनिष्ठ सम्बन्ध भी स्थापित कर लिए और चित्तौड़ की आजादी हेतु जनान्दोलन खड़ा कर दिया। **महाराणा प्रताप के सादगी एवं कष्टदायक जीवन से जनता को काफी प्रेरणा मिली और उन्हें हर प्रकार सहयोग तथा सहायता देने के लिए उद्यत हो गए।** इस तरह उन्होंने शासक एवं शासित के मध्य के समस्त भेदों को दूर कर दिया।

इस सन्दर्भ में एक ताम्रपत्र से यह विदित होता है कि महाराणा प्रताप अपने पर्वतीय जीवन के दौरान एक लुहार के घर में परिवार सहित कुछ दिन रुके थे। जिसके प्रतिदान में महाराणा ने उस लुहार को जमीन प्रदान की थी। महाराणा प्रताप ने अनेक हरे-हरे स्थानों को जो मुगलसेना के आश्रयस्थल बन सकते थे, उखड़वा दिया था तथा कुछ मुगलों द्वारा बरबाद गांवों में पुनर्वास भी कराया है। लोगों को फिर से पट्टे द्वारा जमीन देकर बसने के लिए आह्वान किया।

सुरक्षा निर्माण

इस तरह महाराणा निरन्तर कष्टों को वहन कर पर्वतीय तथा जंगली जीवन के अभ्यस्त हो गए थे। शनैः शनैः इस नवीन व्यवस्था के माध्यम से मेवाड़ राज्य के जनजीवन व्यापार वाणिज्य में अभूतपूर्व प्रगति हुई और वह पूर्व स्थिति में पहुंच गए। दूसरी ओर महाराणा के "गौरिल्ला युद्ध" से त्रस्त होने के कारण मुगलों के आक्रमण धीरे-धीरे कम होते चले गए। मुगलों के हमलों का जोर कम होने पर महाराणा प्रताप ने सहाड़ा जिले के पर्वतीय भाग पर जिसे "छप्पन" कहा जाता है, और वहां राठौरों का राज्य था-आधिपत्य जमा लिया। और चारों ओर से सघन वनों और पहाड़ों के बीचों-बीच स्थित कस्बे "चावण्ड" को अपनी नई राजधानी बनाया। यह सन् 1615 तक महाराणा के पुत्र अमरसिंह के राज्य मेवाड़ की राजधानी रही।

चावण्ड में राजप्रसादों के अतिरिक्त आसपास सामन्तों की हवेलियां बनवायीं। इनके निर्माण में विलासिता व सुन्दरता के स्थान पर सादगी, सुदृढ़ता एवं सुरक्षा के साधनों पर विशेष ध्यान दिया गया था जिसमें चप्पे पर मोर्चाबन्दी तथा भाग निकलने के रास्ते हैं। इस समस्त निर्माण में पत्थर, बांस, मिट्टी इत्यादि का उपयोग किया गया था। **शासक और अधिकारियों के आवास स्थलों में कोई विशेष अन्तर नहीं था। महाराणा का उत्तरकाल भी जंगलों में गुजरा।** मेवाड़ को तत्कालीन राजधानी चावण्ड से लगभग डेढ़ मील दूर बन्डौली गांव में महाराणा प्रताप का अन्तिम संस्कार किया गया था।

इस स्थान पर बना यह स्मारक आज भी महाराणा प्रताप के देश की स्वतन्त्रता हेतु सतत् संघर्ष में जंगलों तथा पर्वतों में बिताए कठोर जीवन से साक्षात्कार कराता है। ●●●

जनज्ञान (मासिक) सदस्यता फार्म

कम से कम पांच घरों में पहुंचाएं जनज्ञान
यही है परिस्थिति का आह्वान

नामः...

पूरा पता..

....

पिनकोड .... मोबाईल ....

ई-मेल.. व्यवसाय ....

सदस्य संख्या (यदि आप पूर्व में सदस्य हैं तो)..

एक प्रति-18 रुपए, द्विवार्षिक शुल्क-380 रुपए, त्रिवार्षिक शुल्क-550 रुपए
पांच वर्ष-900 रुपए, आजीवन-3100 रुपए, संरक्षक सदस्य-11000 रुपए

हमारे प्रधानमन्त्री हमारा विकास

आधुनिक भारत की निर्मिति की जो शुरूआत पंडित जवाहरलाल नेहरु ने की थी, उसे आगे बढ़ाते हुए देश के परवर्ती प्रधानमन्त्री ने कई स्तरों पर अभूतपूर्व प्रयास किए और सफलता प्राप्त की। यहां हम याद कर रहे हैं कार्यकाल पूरा करने वाले प्रधानमन्त्रियों की प्रमुख उपलब्धियों को......

जवाहरलाल नेहरू

स्वतन्त्रता उपरान्त देश के लोकतान्त्रिक स्व[illegible] बनाए रखने की चुनौती संसदीय व्यवस्था पर थी। इसके लिए जरूरी था कि सरकार में स्थायित्व हो। देश के पहले प्रधानमन्त्री के तौर पर पंडित जवाहरलाल नेहरु के रूप में देश को एक ओजस्वी नेता मिला, जिनकी देश की आजादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका रही। स्वतन्त्रता पश्चात पंडित नेहरु के नेतृत्व में देश में अनेकानेक महत्वाकांक्षी परियोजनाओं की नींव रखी गई और उनमें से कई पंडित नेहरु के कार्यकाल में पूरी हुईं। दरअसल, पंडित नेहरु ने देश में विकास की जिस धारा को शुरू किया था, उसके अन्तर्गत देश में ज्ञान-विज्ञान, साहित्य-संस्कृति व कला के जितने संस्थान अतिस्त्व में आए उतने उनके कार्यकाल के बाद नहीं देखे गए। हालांकि नेहरु समाजवादी सोच को तरजीह देते थे। और देश की जनता के समग्र उत्थान के लिए सरकार की सबसे बड़ी भूमिका मानते थे।

इंदिरा गांधी

पंडित नेहरु के अवसान के बाद दो वर्ष का समय लालबहादुर शास्त्री के नाम है। उनकी असामयिक मृत्यु के बाद इंदिरा गांधी ने प्रधानमन्त्री का पदभार सम्भाला। उनके शासनकाल में 1974 में पहली बार देश में परमाणु परीक्षण किया गया। पाकिस्तान के साथ 1971 के संघर्ष के बाद दोनों देशों के बीच 1972 में शिमला समझौता किया गया, जिसे आज तक पाकिस्तान के साथ शान्ति स्थापना के प्रयासों का मूलाधार माना जाता है। इंदिरा गांधी के शासनकाल में देश में तीन पंचवर्षीय योजनाएं भी अमल में लाई गई थीं। **चूंकि पाकिस्तान के साथ 1965 की लड़ाई के बाद लम्बे समय तक देश आर्थिक तंगी से गुजरा था, इसलिए 1970 के उनके 'गरीबी हटाओ' के नारे की गूंज पूरे देश में सुनाई दी।** 1969 में **बैंकों का राष्ट्रीयकरण** इंदिरा गांधी के शासनकाल की एक बड़ी उपलब्धि थी।

राजीव गांधी

वर्ष 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या के बाद उनके पुत्र राजीव गांधी को आम चुनाव में भारी सफलता मिली। राजीव गांधी द्वारा पारित नेहरुवादी समाजवाद से [illegible]मुक्त अर्थव्यवस्था के मार्ग पर चल निकली थीं। देश में आजादी के बाद चल रहे **'लाइसेंस राज'** पर इसी दौरान लगाम लगती दिखी और निजीकरण की आहट सुनाई देने लगी थी। **राजीव गांधी ने ही दूरर्दिशता दिखाते हुए कम्युनिकेशन के क्षेत्र में देश को एकसूत्र में बांधने के प्रयास शुरू किए थे, जिनके नतीजे बाद में दिखाई दिए थे।**

पी.वी. नरसिम्हाराव

1980 के दशक के उत्तरार्द्ध में गठबन्धन सरकारों का दौर शुरू हुआ, जिस दौरान 1989 के आम चुनाव के बाद जनता दल की सरकार बनी और विश्वनाथ प्रताप सिंह प्रधानमन्त्री पद पर आसीन हुए। यह सरकार करीब दो वर्ष चली और 1991 के आम चुनाव के बाद फिर कांग्रेस की सरकार बनी और पी.वी. नरसिन्हाराव प्रधानमन्त्री नियुक्त हुए। नरसिन्हाराव को देश में 'आर्थिक उदारीकरण के पितामह' की संज्ञा दी जाती है। उनके शासनकाल में, वित्त मन्त्री मनमोहनसिंह ने भारती के वैश्वीकरण की शुरूआत की। **विदेशी टीवी चैनलों का आगमन, विदेशी पूंजी निवेश में आने के साथ पुरानी समाजवादी राजनीति अन्ततः विदा हो चुकी थी। पी.वी. नरसिन्हाराव की राजनीतिक सोच-समझ गहन थी और उन्होंने देश के आणविक और मिसाइल प्रोग्राम को भी गति दी थी।**

अटलबिहारी वाजपेयी

अटलबिहारी वाजपेयी का प्रधानमन्त्रित्व काल अनेक उतार-चढ़ावों से गुजरा। उन्होंने एक ओर यदि पोखरन परमाणु परीक्षण करके देश को एक बड़ी शक्ति के रूप में स्थापित करने की शुरूआत की, वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान से **'बस डिप्लोमेसी'** के जरिए सम्बन्ध सुधारने की भी कवायद की। हालांकि इस प्रयास में उन्हें कारगिल युद्ध का सामना करना पड़ा था। **1999 के आम चुनाव के बाद वह कार्यकाल पूरा करने वाले पहले गैर-कांग्रेसी प्रधानमन्त्री बने।** राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना, प्रधानमन्त्री ग्राम सड़क योजना, व्यापार और निवेश के क्षेत्रों में इस दौरान काफी काम हुआ। **(शेष पृष्ठ-32 पर)**

विश्व की सबसे बड़ी पार्टी की जवाबदेही

–प्रो. अमिता सिंह

भाजपा का भविष्य के बारे में एक तार्किक समझदारी भरा दृष्टिकोण क्या हो सकता है? और किस तरह से ये सदस्य बिना किसी वास्तविक दर्शन के इस चुनौती का मुकाबला कर सकते हैं? ये सवाल महत्वपूर्ण हैं। प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी देश-विदेश के अपने सभी मन्दिरों में भगवान के दर्शन करने जाते हैं। यद्यपि इससे हिन्दुओं में एकता का सन्देश जाता है। यह उस मानवीय कमजोरी को भी अपनी कोरी सम्वेदना देता लगता है, जो बिखरी जनता को परस्पर जोड़े रखने के लिए धार्मिक प्रतीक का इस्तेमाल करती है। हालांकि घर लौटने पर मोदी जैसे अडिग नेता की ताकतवर और दृढ़ होने की छवि को लेकर अच्छा संकेत नहीं जाता है। हिन्दू विचारधारा को तोड़-मरोड़ कर बनाया गया दर्शन और 33 करोड़ देवी-देवता, जो भाजपा की राजनीतिक संस्कृति में अन्तर्निहित हैं, दरअसल, वे मानव जीवन के पांच बुनियादी आधार हैं, जो हिन्दुत्व को संघटित करते हैं, जल, जंगल, झाड़, जमीन और जानवर!

कोई अचरज नहीं कि भारतीय जनता पार्टी अपने **8.8 करोड़ सदस्यों के साथ** दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बन गई है। इसने **चीन की कम्युनिस्ट पार्टी को पीछे छोड़ते हुए यह मुकाम हासिल किया है, जिसके 8.6 करोड़ ही सदस्य हैं।** भाजपा की तरफ लोगों के एकदम से खिंचे चले आने के कई कारण हैं; लेकिन इनमें सबसे अहम वजह असरकारक प्रशासन देने की उससे लगी उम्मीद है। अल्पसंख्यकों की क्षमता विस्तार करने के बजाय उनके तुष्टीकरण के लिए कई दशकों से किए जा रहे परिश्रम ने समाज में विभाजन को और चौड़ा किया है। कुछ ऐसे कि आज हरेक भारतीय पहले एक जाति है, एक धार्मिक है और वह धर्म उसके लिए देश की नागरिकता से ज्यादा मायने रखता है।

ऐसा लगता है कि **साम्प्रदायिक कानूनों को बनाए रखने की जिद ने मुसलमानों को ज्यादा ही फायदा कराया है,** जिनकी आबादी ताजा जनगणना के मुताबिक बाकी की तुलना में ज्यादा तेजी से बढ़ी है। **2001 के पहले दशक में मुसलमानों की आबादी 18 फीसदी दूसरे मतालम्बियों की तुलना में 29 फीसदी बढ़ी।** और 2001 के बाद से उनकी आबादी तो **24 फीसदी** बढ़ी जबकि इसी अवधि में दूसरे धार्मिक समूहों में 14.2 फीसदी ही बढ़त हुई। तो मुस्लिम और अन्य धर्मों के अनुयायियों की आबादी में यह अन्तर तुलनात्मक रूप से मुसलमानों को लाभान्वित होना दर्शाता है। **असम, पं. बंगाल और उ.प्र. जैसे कई राज्यों में मुसलमानों की आबादी बढ़ी है, जिसके राजनीतिक संकेतों ने भी भाजपा को अपेक्षाकृत फायदा पहुंचाया है।**

हालांकि इस मुकाम ने भी भाजपा की अपनी आन्तरिक गम्भीर कमजोरियों और कुटैबों को आमने-सामने ला दिया है। इसके पास बिखरे हिन्दू धर्मग्रन्थों के आधार पर बनाए गए धार्मिक खांचे से अलग सोचने की न तो क्षमता जान पड़ती है, और न ही वह दूरदर्शिता दिखती है। **धर्म के उसके संकीर्ण मायने के विपरीत बहुत से लोगों को यह सही लग सकता है कि इस्लाम या ईसाइयत की तुलना में हिन्दुत्व वर्गीकृत या संस्थानिक नहीं है बल्कि जीवन जीने का एक नजरिया है।**

कभी इसको गम्भीरतापूर्वक विश्लेषित-परिभाषित करने की कोशिश नहीं की गई। तभी ऋतम्भरा देवी, उमा भारती और प्रवीण तोगड़िया तक भाजपा के आन्तरिक संकट टूटे तुंतुओं को सीवन के बारे में बोलते हैं। यह उसी बिखराव में अन्तर्निहित है, जो एक तरफ बहुतों को अपनी ओर खींचता है। हालांकि एक छोटे दायरे तक ही। खासकर उन्हें जो ज्यादा सहज महसूस करते हैं। ये वे लोग हैं, जो एक धार्मिक समूह और निर्देशात्मक विचारधारा का नेतृत्व करने लगते हैं। **ऐतिहासिक सदस्य वाली पार्टी भाजपा को फिलहाल तर्क और टिकाऊ दर्शन की सबसे ज्यादा जरूरत है।**

भाजपा के पास है महत्त्वपूर्ण अवसर

तो भाजपा का भविष्य के बारे में एक तार्किक समझदारी भरा दृष्टिकोण क्या हो सकता है? और किस तरह से ये सदस्य बिना किसी प्रमाणिक दर्शन के इस चुनौती का मुकाबला कर सकते हैं? ये सवाल महत्वपूर्ण हैं। प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी देश-विदेश के अपने सभी दौरों में मन्दिरों में भगवान के दर्शन करने जाते हैं। यद्यपि इससे हिन्दुओं में एकता का सन्देश जाता है। यह उस मानवीय कमजोरी को भी अपनी कोरी सम्वेदना देता लगता है, जो बिखरी जनता को परस्पर जोड़े रखने के लिए धार्मिक प्रतीक का इस्तेमाल करती है। हालांकि घर लौटने पर मोदी

जैसे अडिग नेता की ताकतवर और दृढ़ होने की छवि को लेकर अच्छा संकेत नहीं जाता है। हिन्दू विचारधारा को तोड़-मरोड़ कर बनाया गया दर्शन और 33 करोड़ देवी-देवता, जो भाजपा की राजनीतिक संस्कृति में अन्तर्निहित हैं, दरअसल, वे **मानव जीवन के पांच बुनियादी आधार हैं, जो हिन्दुत्व को संघटित करते हैं, जल, जंगल, झाड़, जमीन और जानवर। सभी देवी-देवताओं का उद्भव इन्हीं से हुआ है, और इनसे निकली शक्तियों की वजह से ही मामूली मानव के साथ अनन्त सहअस्तित्व बना हुआ है।**

तमाम साम्राज्य, समृद्धि और प्रगति का आधार इन पांचों बुनियादी संसाधनों की सुरक्षा और संरक्षण है। **भाजपा के पास महत्त्वपूर्ण अवसर है कि वह कांग्रेस की तुलना में अपनी बढ़त बनाने के लिए इन्हीं पांचों बुनियादी स्रोतों के इर्द-गिर्द अपने दृष्टिकोण को तैयार करे बजाय खोखले हिन्दुत्व के... जिसकी लाखों व्याख्याओं के बावजूद शायद ही कोई इसे ठीक से समझ पाता है।** हां, मोदी की नेपाल दौरे में पशुपतिनाथ मन्दिर की यात्रा सार्वजनिक नीतियों और प्रशासन के सन्दर्भ प्रसांगिक और समझने में आने वाले दर्शन को एक मुकाम पर ले जाने की शुरूआत थी। हालांकि उनके लिए किए जा रहे फैसले में अब तक इसकी झलक देखने को नहीं मिल रही है। उदाहरण के लिए गो-वध पर प्रतिबन्ध सही दिशा में लिया गया कदम है, लेकिन इस पर बेशुमार प्रतिक्रियाएं हो सकती हैं। अगर इसे अहिंसा या गैर मानवीय प्रजातियों का अन्य जीवों के साथ सहअस्तित्व के अधिकार के व्यापक दर्शन से न जोड़ा जाए। **इसी तरह, खनन और ऊर्जा संयंत्र की स्थापना के जरिए तरक्की का विचार भाजपा के विकास के लिए उल्टा पड़ सकता है, अगर इसमें वनसंरक्षक आदिवासियों और आदिम जातियों के अधिकार का ठीक से ख्याल न रखा जाए।......**

कई फैसले, जैसे जब जीन संबद्धित (जीएम) खाद्य से लेकर जेंडर आधारित समस्या को हल करने की बात है, तो इसे भी छांट कर बनाए गए इन पांच तत्वों के दर्शन के आधार पर किया जाए नहीं तो वे एक-दूसरे को खत्म कर देंगे।

आजादी के आन्दोलन से पैदा हुई कांग्रेस इस सन्दर्भ में थोड़ा लाभदायक स्थिति में हैं, जिसने अपने कामकाज के बारे में खुद के लिए दर्शन तैयार किया हुआ है। उसके विपरीत, भाजपा अभी तक राम मन्दिर, लव-जेहाद, गाय पूजा आदि मसलों को ही घसीट रही है। यद्यपि भाजपा के सदस्य इन गतिविधियों के बारे में उसकी प्रतिबद्धता पर ज्यादा से ज्यादा बौद्धिक बहस सुनना पसंद करेंगे।

भाजपा को प्रशासनिक सुधार के बारे में भी अपनी प्रतिबद्धताओं को स्पष्ट करना है। दूसरे चरण के प्रशासनिक सुधार के बारे में मोइली कमेटी की 15 रिपोर्ट यों ही धूल फांक रही हैं। यह प्रतिगामी कदम होगा अगर उन सिफारिशों के क्रियान्वयन के लिए एक कमेटी का गठन किया जाए जो इस काम में सरकार की मदद करे। जवाबदेह प्रशासन के लिए सिटीजन चार्टर, आरटीआई और ई-गवर्नेंस को बेहतर तरीके से लागू करने का काम बाकी है। कई राज्य सरकारों ने प्रकाश सिंह मामले में 2007-08 में पुलिस व्यवस्था में सुधार पर सर्वोच्च न्यायालय के दिए फैसले को जल्दबाजी में लागू किया है। इसको ठीक से देखने की जरूरत इसलिए है कि पुलिस, जो प्रशासन का जरिया होती है, का मन-मिजाज अब भी पितृसत्तात्मक, भ्रष्ट और हिंसक बना हुआ है। पुलिस में जवाबदेही के नियम और सामुदायिक पुलिस व्यवस्था सरकार के अगले कदम हो सकते हैं।

भाजपा के लिए अभी तत्काल जो अपरिहार्य काम है, वह यह है कि कानून का सही जगह सही इस्तेमाल और शहरों, गांवों और लोगों को बरबाद होने से बचाना। वैश्वीकरण की शुरूआत होते ही नदियों का तल, तटवर्ती क्षेत्र और पहाड़ सब बर्बाद हो रहे हैं। भाजपा नदी के छोड़ने वाली जगह को खाली कर और तटों व जंगलों को पुनर्जीवित कर इस लहर का रुख मोड़ सकती है। **भाजपा के लिए हालांकि आत्मनिरीक्षण और सतर्क रहने का भी है, क्योंकि जिन्होंने पार्टी की सदस्यता ली है; वे बोर होने या निष्क्रियता की स्थिति में दल छोड़कर बाहर भी जा सकते हैं।** ●●●

(पृष्ठ-30 का शेष) **डॉ. मनमोहनसिंह**

2004 में आम चुनाव के बाद यूपीए (कांग्रेस और अन्य दल) ने सत्ता सम्भाली और उसके दस वर्ष बाद तक डॉ. मनमोहनसिंह प्रधानमन्त्री रहे। **डॉ. मनमोहनसिंह मूलतः राजनीतिज्ञ न होकर अर्थशास्त्री थे और देश में आर्थिक सुधारों का श्रेय उन्हीं को दिया जाता है।**

कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी द्वारा उन्हें प्रधानमन्त्री पद के लिए चुना गया और उन्होंने विदेश व अर्थ नीति से जुड़े काम जारी रखे। राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (नरेगा) और सूचना का अधिकार जैसे कानून उन्हीं के शासनकाल में बने। **डॉ. सिंह के शासनकाल के तमाम छोटे-बड़े आर्थिक सुधार देखे गए** और इसी दौरान संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ महत्वाकांक्षी परमाणु समझौता भी हुआ था। डा. सिंह ने रूस व इजराइल के साथ भी भारत के सम्बन्धों को सशक्त करने के लिए बड़ी भूमिका निभाई। ●●●

इतिहास में दर्ज है डॉ. अम्बेडकर की सोच

–डॉ. सतीशचन्द्र मित्तल

डॉ. अम्बेडकर की भारतीयता के प्रति गहरी आस्था थी। इस सन्दर्भ में तत्कालीन भारत के किसी भी नेता की अपेक्षा वे अधिक स्पष्ट थे। उनकी भाषा में न दोहरापन था और न ही वे अपने शब्दों को वापस लेते थे। डॉ. अम्बेडकर ने तीन मानदण्डों के आधार पर मुस्लिम समाज का तीव्र विरोध किया। ये हैं–मानवता, राष्ट्रवाद और बुद्धिवाद। वे कहते थे, इस्लाम का भ्रातृत्व मानव जाति का भ्रातृत्व नहीं, बल्कि यह भाईचारा केवल मुसलमानों तक सीमित है।

डॉ. अम्बेडकर (1891–1956 ई.) भारतीय राष्ट्रीय चेतना तथा सामाजिक परिवर्तन के उन्नायक थे। **राष्ट्र के इतिहास में अध्यात्मिक-सांस्कृतिक एकीकरण में जो स्थान स्वामी विवेकानन्द का है, वही स्थान सरदार पटेल का देश की राजनीति में है, वही स्थान डॉ. अम्बेडकर का राष्ट्र के सामाजिक एकीकरण के लिए है।** उन्होंने अशान्त अपमानित, वंचित पीड़ित, एक बड़े महत्वपूर्ण भाग को उनके आत्मगौरव के साथ खड़ा करने का असाधारण कार्य किया।

वीर सावरकर ने उन्हें आधारभूत पुरुष कहा। प्रसिद्ध विद्वान कोयनारार्ड एसाल्ट ने उन्हें भारत के महान ऋषियों की श्रेणी में रखा।

समरसता

डॉ. अम्बेडकर का निश्चित मत है कि हिन्दू समाज में सामाजिक समरसता के बिना एकता हो ही नहीं सकती। **1947 में दिल्ली की एक सभा में डॉ. साहेब ने कहा था कि हिन्दू परस्पर सगे भाई हैं। और ऐसी भावना अपेक्षित है। आज बन्धुभाव का अभाव है। जातियां आपसी ईर्ष्या और द्वेष बढ़ाती हैं। अतः जहां हम पहुंचना चाहते हैं अवरोध को कुप्रथाओं के खिलाफ होना होगा।**

डॉ. अम्बेडकर की भारतीयता के प्रति गहरी आस्था थी। इस सन्दर्भ में तत्कालीन भारत के किसी भी नेता की अपेक्षा वे अधिक स्पष्ट थे। उनकी भाषा में न दोहरापन था और न ही वे अपने शब्दों को वापस प्रति लेते थे। **उन्होंने भारतीयता के बारे कहा था, 'मुझे अच्छा नहीं लगता है जब कुछ लोग कहते हैं कि हम पहले भारतीय हैं–बाद में हिन्दू या मुसलमान। मुझे यह स्वीकार नहीं है। धर्म, संस्कृति, भाषा आदि के प्रति निष्ठा के रहते हुए उसकी भारतीयता के प्रति निष्ठा पनप सकती है। मैं चाहता हूं कि लोग पहले भी भारतीय हों और अन्त तक भारतीय रहें।** (देखें डॉ. अम्बेडकर, राइटिंग्स एण्ड स्पीचेज भाग-दो पृ. 195)

डॉ. अम्बेडकर की अगाध भारतीयता के कारण उनका हिन्दुत्ववादी संगठनों से गहरा लगाव था। उनके वीर सावरकर से घनिष्ठ सम्बन्ध थे। **14 अप्रैल, 1942 के प्रसंग पर तथा बाद में डॉ. अम्बेडकर के बौद्ध धर्म में दीक्षा लेने पर वीर सावरकर ने उनके प्रति अपने भावनापूर्ण विचार व्यक्त किए थे।**

इतना ही नहीं **महात्मा गांधी की हत्या पर जब कांग्रेस सरकार ने वीर सावरकर तथा संघ के सरसंघचालक श्री गुरुजी को षडयन्त्र कर फंसाया था। तब उन्होंने कैबिनेट में विधि तथा श्रममन्त्री रहते हुए भी हिन्दू महासभा के नेताओं को अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग का आश्वासन दिया था।**

इसी भान्ति डॉ. अम्बेडकर संघ के प्रणेता डॉ. हेडगेवार के सम्पर्क में 1935 ई. से थे। अम्बेडकर 1935 तथा 1939 में संघ शिक्षा वर्ग में गए थे तथा 1937 में कतम्हाडा में विजयादशमी के उत्सव पर संघ की शाखा में उनका भाषण हुआ। **उस कार्यक्रम में 600 की संख्या में 100 से अधिक वंचित तथा पिछड़े वर्ग के स्वयंसेवक थे जिसे देखकर डॉ. अम्बेडकर को बड़ा आश्चर्य ही नहीं हुआ बल्कि भविष्य के प्रति उनकी आस्था भी बढ़ी थी। सितम्बर, 1948 में उनकी भेंट गुरुजी से भी हुई थी।**

इतना ही नहीं डॉ. अम्बेडकर के संविधान सभा की ध्वज समिति के सदस्य होने पर हिन्दू नेताओं ने उनके सामने भगवाध्वज को राष्ट्रीय ध्वज मानने का प्रस्ताव रखा था।

डॉ. अम्बेडकर की इच्छा थी कि भारतीय संविधान में संस्कृत भाषा भारत की राजभाषा बने (देखें, सण्डे स्टैण्डर्ड 10 सितम्बर, 1947)। *पीटीआई के एक संवाददाता को उन्होंने कहा था, संस्कृत में क्या हर्ज है? वह भारत की राजभाषा होनी चाहिए।*

विघटनकारी तत्वों के विरोधी

डॉ. अम्बेडकर ने मुख्यतः इस्लाम, ईसाई तथा कम्युनिस्टों को राष्ट्रघातक शक्तियों के रूप में वर्णित

किया है। उन्होंने लिखा, 'हम यदि ईसाईयत या इस्लाम को स्वीकार करेंगे तो हमारी भारतीयता में अन्तर आएगा।' हमारे सिर यरुशलम और मक्का-मदीना की ओर झुकने लगेंगे। **यदि हम इस्लाम कबूल करते हैं तो मुसलमानों की संख्या दुगुनी हो जाएगी और देश को मुस्लिम राष्ट्र बनने का खतरा हो जाएगा। ईसाइयत ग्रहण करने के पश्चात भारत में ब्रिटिश प्रभुत्व होगा।** (डॉ डी. आर. यादव, डॉ अम्बेडकर व्यक्तित्व और कृतित्व, पृ. 201)

डॉ. अम्बेडकर ने इस्लाम तथा मुस्लिम राजनीति के बारे में **'पाकिस्तान एण्ड द पार्टीशन ऑफ इंडिया'** में अपने विचार विस्तार के दिए हैं। **वे मुसलमानों को मतान्ध, असहिष्णु, मजहबी तथा गैर सेकुलर मानते हैं क्योंकि मुस्लिम सुधार विरोधी हैं।** उनमें तिलमात्र भी लोकतन्त्र की प्रवृत्ति नहीं है।..... हिन्दू और मुसलमानों के बारे में उनका तर्क है कि दोनों में ऐतिहासिक पूर्ववर्ती साम्य का कोई धागा नहीं है जो दोनों को एक सूत्र में पिरो सके। राजनीतिक और मजहबी दोनों ही क्षेत्र में उनका भूतकाल वैर भाव का रहा है। डॉ. अम्बेडकर ने भारत में मुस्लिम गतिविधियों का गहन अध्ययन करने के पश्चात विवेचन किया। उनके अनुसार.........

711 ई. में मोहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध पर इस्लाम की स्थापना के लिए आक्रमण किया। उसने 17 वर्ष की आयु के ऊपर के पुरुषों का वध कर दिया तथा महिलाओं तथा बच्चों को गुलाम बनाया। (देखें पाकिस्तान एण्ड पार्टीशन ऑप इंडिया, पृ. 55 व पृ. 57) **डॉ अम्बेडकर के अनुसार कुछ दिशा भ्रमित इतिहासकारों ने महमूद गजनवी को केवल लुटेरा कहा है जबकि उसके आक्रमण का उद्देश्य मन्दिरों का ध्वंस तथा इस्लाम की स्थापना था। तैमूरलंग के 1398 ई. में भारत पर आक्रमण का उद्देश्य काफिरों को मुसलमान बनाना था। औरंगजेब ने 1661 ई. में मन्दिरों को तोड़ने का आदेश देकर हिन्दुत्व पर अन्तिम प्रहार किया था।** (देखें, वही पृ. 60-63)

संक्षेप में मुस्लिम आक्रमणकारियों तथा शासकों ने भारतीय जीवन प्रवाह में कन्वर्जन, अलगाव तथा साम्प्रदायिकता का विष घोला, जिसकी चरम परिणति 20वीं शताब्दी के चतुर्थक दशक में भारत विभाजन की मांग तथा पांचवे दशक में पाकिस्तान के निर्माण के साथ हुई।

डॉ. अम्बेडकर परिष्कृत हिन्दू राष्ट्रवाद के व्याख्याता थे। उन्होंने अपी पुस्तकों में 'हिन्दू शब्द का प्रयोग राष्ट्रीयता के लिए कई बार किया था। वे भारत के राष्ट्रोत्थान, शक्तिमान तथा एकता के लिए हिन्दू समाज को सर्वोपरि स्थान देने के प्रबल समर्थक थे। वे वंचितों को भारत के हिन्दू जीवन की मुख्यधारा से जोड़ना चाहते थे, तोड़ना नहीं।

डॉ. अम्बेडकर ने तीन मानदण्डों के आधार पर मुस्लिम समाज का तीव्र विरोध किया है। ये हैं **मानवता, राष्ट्रवाद और बुद्धिवाद।** वे कहते थे, इस्लाम का भ्रातृत्व मानव जाति का भ्रातृत्व नहीं, बल्कि यह भाईचारा केवल मुसलमानों तक सीमित है। इस्लाम राष्ट्रवाद की अवधारणा को नहीं मानता बल्कि वह राष्ट्रवाद को तोड़ने वाला मजहब है।

डॉ. अम्बेडकर ने वंचित जाति के लोगों को सावधान किया कि उनका मुसलमानों और मुस्लिम लीग पर विश्वास आत्मघाती होगा। उन्होंने इसके लिए अविभाजित भारत में मुस्लिम लीग के समर्थक जोगेन्द्रनाथ मण्डल (वंचित जाति के व्यक्ति) का उदाहरण दिया जो पाकिस्तान में विधि और श्रममन्त्री बना। पर पाकिस्तान में जिसने वंचित जाति पर बलात् कर्न्वजन को प्रत्यक्ष देखा। (देखें, धनंजय वीर, डॉ. अम्बेडकर-लाइफ एण्ड मिशन, मुम्बई, 1971, पृ. 339)

इस्लाम या ईसाई कन्वर्जन के बारे में उनका मत है कि इन दोनों में से किसी में भी 'कन्वर्टेड' होना वंचित वर्ग को अराष्ट्रीय बनाता है। (देखें-द टाइम्स ऑफ इंडिया, 24 जुलाई, 1936) उन्होंने यह भी कहा कि इनको अपनाने से वंचित वर्ग को सन्देह की दृष्टि से देखा जा सकता है। **डॉ. अम्बेडकर ने मुसलमानों में जातीय भेदभाव तथा महिला दुर्दशा का भी वर्णन किया है।** (वही, पृ., 216-17) साथ ही **उन्होंने कांग्रेस की मुसलमानों के प्रति अति सहिष्णुता तथा मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति की कटु आलोचना की।** (देखें, वी.एस. सक्सेना, मुस्लिम इन द इंडियन नेशनल कांग्रेस पृ. 234)

डॉ अम्बेडकर इस्लाम की भान्ति ईयाइयत के जरा भी पोषक नहीं है। उनके अनुसार, **'ईसाई सदाचरण नहीं करते। ईसाइयत के लिए हमें यरुशलम की ओर झुकना होगा जो न भारतभूमि है और न ही भारतीयता का इससे कोई सम्बन्ध है।'**

(देखें, वसन्त सिंह, आम्बेडकर, पृ. 91)

ईसाई बनने के लिए स्वयं डॉ अम्बेडकर को वित्तीय सहायता देने की पेशकश की गई थी। उनके अनुसार दक्षिण भारत चर्च में जातीय भेदभाव है।

डॉ. अम्बेडकर ने मार्क्सवाद का जितना अध्ययन किया, उतना शायद ही भारत के किसी कम्युनिस्ट विद्वान या इतिहासकार ने किया हो (धनंजय कीर, पूर्व उद्दृत पृ. 301) उन्होंने अपनी प्रसिद्ध रचना बुद्ध और

मार्क्स में मार्क्सवादी दर्शन को पूर्णतः नकारते हुए उसकी अनेक कमियों को बताया है।

डॉ. अम्बेडकर ने विश्व इतिहास के सन्दर्भ में विधि संरचनाओं का गहन चिन्तन किया। उन्होंने 1789 में प्रारम्भ हुई फ्रांस की क्रान्ति का स्वागत किया जिसका प्रमुख उद्घोष स्वतन्त्रता, समानता तथा भ्रातृत्व था। पर वह फ्रांस की भान्ति समाज को समानता न दे सकी।

उन्होंने **1917 की रूस की बोल्शेविक क्रान्ति का स्वागत किया परन्तु उसने रूस में भ्रातृत्व तथा स्वतन्त्रता को बिल्कुल भुला दिया**, परन्तु बौद्ध मत में उन्होंने इन तीनों उद्घोषों की प्राप्ति की। (देखें, डॉ. कृष्ण गोपाल, बाबासाहेब: व्यक्ति और विचार, नई दिल्ली, पृ. 265)

डॉ. अम्बेडकर मार्क्स के केन्द्र बिन्दु, उनकी धुरी आर्थिक तत्व को व्यक्ति तथा इतिहास की प्रेरक शक्ति मानते थे। उन्होंने मार्क्सवाद की इतिहास की भौतिकवादी व्यवस्था को अस्वीकार किया। (विस्तार के लिए देखें, सतीश चन्द्र मित्तल, साम्यवाद का सच, नई दिल्ली 2006, पृ. 90) मार्क्स ने धर्म को अफीम की पुड़िया कहा, जबकि डॉ. अम्बेडकर ने कहा, **जो कुछ अच्छी बात मेरे अन्दर है, धार्मिक भावनाओं के कारण सम्भव हुई है।** वे मार्क्स के एक प्रमुख सिद्धान्त वर्ग संघर्ष को खोखला तथा आचारहीन बतलाते हैं।

डॉ. अम्बेडकर ने भारत के कम्युनिस्टों को पहले ब्राह्मण, बाद में कम्युनिस्ट बताया तथा उन्होंने अपने विस्तृत अनुभवों के आधार पर कम्युनिस्टों को **'बंच ऑफ ब्राह्मण ब्यॉयज'** कहा है। (देखें, डॉ. तुलसीराम, कम्युनिस्ट और दलितों के रिश्ते, राष्ट्रीय सहारा, 25 फरवरी, 2002)

समय-समय पर भारतीय कम्युनिस्टों ने यद्यपि डॉ. अम्बेडकर पर तीखे प्रहार किए, उन्हें देशद्रोही ब्रिटिश एजेंट बताया। उन्हें अवसरवादी, अलगावादी तथा ब्रिटिश समर्थक बताया। (देखें, गैइल ऑफ, दलित एण्ड डेमोक्रेटिक रिवोल्यूशन डॉ. अम्बेडकर एण्ड द दलित मूवमेन्ट इन कोलोनियल इंडिया) पर डॉ. अम्बेडकर इससे विचलित नहीं हुए बल्कि तत्परता से अपने कार्य में लगे रहे।

सम्भवतः **डॉ. अम्बेडकर की सबसे बड़ी उपलिब्धयों में एक भारतीय समाज को कम्युनिस्टों से बचाना रहा।** डॉ. अम्बेडकर के स्वयं के कथन का हवाला देते हुए श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी ने लिखा–**वंचित लोगों को कम्युनिज्म के बीच अम्बेडकर एक अवरोध बनकर खड़े हैं और दूसरे सवर्ण हिन्दुओं तथा कम्युनिज्म के बीच गोलवलकर भी अवरोध के रूप में हैं।** (दत्तोपंत ठेंगड़ी संकेत रेखा, नई दिल्ली 1959 पृ. 287-88) **संक्षेप में वे मार्क्सवाद को धर्मविहीन तथा रीढ़विहीन मानते हैं।**

दुर्भाग्य से कटु सत्य है कि बहुतों ने राष्ट्र के इस महान व्यक्तित्व की प्रतिभा को न ही पहचाना और न ही उनके सद्गुणों का समुचित राष्ट्रहित में प्रयोग किया। **आमतौर पर मीडिया, शिक्षाविदों और बुद्धिजीवियों ने उनको केवन वंचित नेता के रूप में देखा तथा उनकी पहचान को बौना कर दिया।**

कांग्रेस ने भारतीय संविधान निर्माण में उनका पूरा उपयोग किया, पर उसी कांग्रेस से उन्हें सितम्बर 1951 में त्यागपत्र देकर विरोध में खड़ा होना पड़ा। यद्यपि वोट बैंक द्वारा व्यक्ति जोड़ने के लिए **अप्रैल, 1990 को उनका संसद में चित्र तथा उनके जन्मदिन 14 अप्रैल 1990 को उनकी मृत्यु के 34 वर्षों के पश्चात् मजबूरी में भारत रत्न देना पड़ा जो बहुत पहले हो जाना चाहिए था। भारत के कम्युनिस्टों ने 1930-37 तक उनकी प्रतिभा का लाभ उठाया। परन्तु बाद में उनके लिए अपशब्द बोलकर अपना असली रूप दिखलाया।**

बहुजन समाज पार्टी ने उनके मुसलमानों, ईसाइयों के बारे में मुख्य विचार को बिल्कुल भुलाकर उनके नाम तथा जाति का लाभ उठाया। अनेक बुद्धिजीवियों ने भी उन्हें **'हिन्दू विद्रोही'** अथवा **'ब्रिटिश भक्त'** सिद्ध करने में अपनी पूरी ऊर्जा लगा दी।

इस महान पुरूष के व्यक्तित्व तथा कृतित्व को सही सन्दर्भ में जानने के लिए आवश्यक है कि हम उनका चिन्तन समग्र रूप से करें। **डॉ. अम्बेडकर परिष्कृत हिन्दू राष्ट्रवाद के व्याख्याता थे। उन्होंने अपनी पुस्तकों में हिन्दू शब्द का प्रयोग राष्ट्रीयता के लिए कई बार किया है। वे भारत के राष्ट्रोत्थान, शक्तिमान तथा एकता के लिए हिन्दू समाज को सर्वोपरि स्थान देने के प्रबल समर्थक थे।**

वे वंचितों को भारत के हिन्दू जीवन की मुख्य धारा से जोड़ना चाहते थे, तोड़ना नहीं। **आवश्यकता है कि देश के राजनीतिक, स्वपोषित छद्म सेकुलरवादी, बुद्धिजीवी तथा देश के वंचित वर्ग के नेता इस तथ्य को समझें तथा उसके अनुसार आचरण करें। देश की युवा पीढ़ी उनके कृतित्व से प्रेरणा लें।**

●●●

बाबाराव सावरकर की संघ को देन

–प्रो. देवेन्द्र स्वरूप

प्रायः ऐसा माना जाता है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ स्वातन्त्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर के अधिक निकट है। जबकि सच्चाई यह है कि संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार का विनायक के बड़े भाई गणेश दामोदर उपाख्य बाबाराव सावरकर से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध था। बाबाराव ने संघ के विस्तार में प्रभावी भूमिका निभाई थी। जबकि विनायक दामोदर सावरकर ने मतभेद के चलते एक समय में संघ की आलोचना भी की थी।

सावरकर नाम लेते ही आंखों के सामने काले रंग की गोल ऊंची टोपी पहने और सुनहरे गोल फ्रेम का चश्मा लगाए एक चेहरा सामने आ जाता है। **यह स्वातन्त्र्यवीर विनायक दामोदर के नाम के विख्यात है।** राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विरुद्ध वामपंथी बौद्धिकों एवं उनके नेहरूवादी अनुयायियों के 60-70 वर्ष लम्बे प्रचार ने विनायक सावरकर को **'हिन्दू राष्ट्रवाद'** के प्रथम व्याख्याता एवं संघ के जन्मदाता डॉ. हेडगेवार के मुख्य प्रेरणास्रोत एवं मार्गदर्शक की छवि प्रदान की है।

स्वातन्त्र्यवीर सावरकर के तेजस्वी व्यक्तित्व एवं संघर्षमय जीवन, ओजस्वी वक्तृव्य एवं प्रखर लेखनी के कारण उनकी इतनी प्रसिद्धि हुई है कि कुछ इने-गिने लोगों को ही पता है कि विनायक सावरकर के दो भाई और भी थे। बड़े, **गणेश दामोदर सावरकर उपाख्य बाबाराव सावरकर**, छोटे–**डॉ. नारायण दामोदर सावरकर।**

1879 में जन्मे गणेश दामोदर उपाख्य बाबाराव क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लेने के अपराध में विनायक से पहले अंडमान जेल में भेजे गए। **ग्यारह वर्ष अंडमान की यातनाएं झेलकर मई, 1921 में दोनों भाई अंडमान से भारतीय जेलों में पहुंचाए गए।** अंडमान की यातनाओं से जर्जर शरीर को गम्भीर बीमारी लगने पर **बाबाराव को साबरमती जेल से 1924 में रिहा कर दिया गया। पर विनायक को यरवदा जेल से रिहा करके भी रत्नागिरि जिले में स्थानाबद्ध किया गया।** 1937 में स्थानाबद्धता समाप्त होने पर ही विनायक को भारत भ्रमण एवं सार्वजनिक जीवन में हिस्सा लेने का अवसर मिल सका।

क्रान्तिकारी बाबाराव

बाबाराव भी अपने छोटे भाई विनायक जितने ही **प्रखर राष्ट्रभक्त एवं उत्कृष्ट हिन्दुत्वनिष्ठ थे।** 1906 में विनायक के इंग्लैण्ड जाने के बाद उनके द्वारा स्थापित **'अभिनव भारत'** नामक क्रान्तिकारी संस्था का पोषण बाबाराव ने ही किया था। नासिक षड्यन्त्र में पहले वे पकड़े गए और **उन्हें ही आजन्म कारावास की सजा देकर कालापानी यानी अंडमान भेजा गया।**

1924 में साबरमती जेल से रिहा होने बाद भी बाबाराव अपने जर्जर शरीर को लेकर शान्त नहीं बैठे। अपितु देशभर में उनकी आंखें राष्ट्रवादी अंत:करणों की खोज में भटकती रहीं। **उनकी दृष्टि संगठनात्मक थी।** उनकी प्रकृति सौम्य, शान्त और धर्म प्रधान थी। **विनायक ने रत्नागिरि में स्थानबद्धता के काल में हिन्दू समाज में प्रचलित अन्ध-विश्वासों, जाति प्रथा, अस्पृश्यता आदि के विरुद्ध समाजसुधार आन्दोलन शुरू कर किया।** वे स्वयं को नास्तिक घोषित करने के बिन्दु तक पहुंच गए।

इसके विपरीत बाबाराव भजन-कीर्तन, साधु-सन्त, तीर्थयात्रा आदि का श्रद्धापूर्वक पालन करते रहे। वे संन्यास लेने के लिए भी प्रवृत्त हुए। इस धार्मिकवृत्ति के साथ-साथ वह अध्ययन, मनन और लेखन की बौद्धिक क्षमता से भी युक्त थे। **जेल से बाहर आने के बाद से लेकर 1945 में अपनी मृत्यु तक उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखीं। यह उनकी विद्वता, मौलिक चिन्तन और लेखन क्षमता का प्रमाण है।**

संघ-विरोधी वामपंथी बौद्धिकों को न तो बाबाराव के जीवन की जानकारी है और न ही यह पता है कि डॉ. हेडगेवार के साथ **उनका 1924 से लेकर 1940 में डॉ. हेडगेवार की मृत्यु तक सतत सम्पर्क और पत्राचार बना रहा।** जबकि विनायक सावरकर से उनकी पहली संक्षिप्त भेंट मार्च 1925 में रत्नागिरि के निकट शिरगांव स्थित उनके निवास स्थान पर हुई थी।

पर **दुष्प्रचार और विनायक के विरुद्ध अभियान के चलते बाबाराव के भारी योगदान को पूरी तरह विस्मृत का दिया गया, जबकि संघ कार्य के विस्तार में उनकी उल्लेखनीय भूमिका थी।** बाबाराव अपने अनुभव और अध्ययन से इस निष्कर्ष पर पहुंच चुके थे कि **भारतीय राष्ट्रीयता की आधार भूमि हिन्दू समाज ही है। भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए उसे संगठित करना पहली आवश्यकता है।** इसलिए

एक ओर वे लेखन द्वारा भारतीय राष्ट्रवाद की वैज्ञानिक व्याख्या करते रहे, दूसरी ओर देश भर में बिखरे ऐसे कार्यकर्ताओं और नेताओं से सम्पर्क स्थापित करते रहे जो स्वयं प्रेरणा से हिन्दू संगठन के कार्य में जुटे हुए थे।

डॉ. हेडगेवार से भेंट

बाबाराव ने अपने को चमकाने या प्रचार पाने का प्रयास कभी नहीं किया। बल्कि अपनी आत्मविलोपी वृत्ति के कारण वे अन्य को भी आगे बढ़ाते रहे। 1924 में जेल से रिहा होने के एक महीना बाद ही वे बीमार अवस्था में नागपुर स्थित अपने मित्र एडवोकेट विश्वनाथ केलकर के यहां आराम करने के लिए आए। **विश्वनाथ केलकर स्वयं भी हिन्दुत्वनिष्ठ थे और डॉ. हेडगेवार के घनिष्ठ मित्र थे।**

डॉ. हेडगेवार का विश्वनाथ केलकर के घर नियमित रूप से आना-जाना था। इन्हीं दिनों बाबाराव के साथ उनका निकट सम्पर्क आया। **डॉ. हेडगेवार के जीवनीकार न.ह. पालकर ने लिखा है कि इन तीनों** (डॉ. हेडगेवार, बाबाराव सावरकर और एडवोकेट केलकर) **की दृष्टि एवं मनोवृत्ति एक जैसी थी।** यह वह समय था जब डॉ. हेडगेवार संघ जैसे अभिनव संगठन की स्थापना के बारे में अपने सभी मित्रों के साथ गहन विचार-मन्थन में लगे हुए थे। स्वाभाविक रूप से उन्होंने बाबाराव को भी इस विचार-मन्थन में शामिल किया। बाबाराव ने डॉ. हेडगेवार की तड़प और संगठन-क्षमता का सूक्ष्म अध्ययन किया। **उन्हें विश्वास हो गया कि डॉ. हेडगेवार के हाथों में कोई बड़ा कार्य होने वाला है। इसलिए उन्होंने डॉ. हेडगेवार के द्वारा संघ प्रारम्भ करने के विचार को पूरा समर्थन प्रदान किया। 1925 में विजयादशमी के दिन अपने घर पर जिन 15-20 लोगों की उपस्थिति में डॉ. हेडगेवार ने घोषणा की कि 'हम आज संघ शुरू कर रहे हैं', उस बैठक में विश्वनाथ केलकर भी सहभागी थे।**

उसी काल में बाबाराव ने स्वयं भी '**तरुण हिन्दू सभा**' के नाम से एक संगठन प्रारम्भ किया था। इसकी कई शाखाएं दक्षिणी महाराष्ट्र में चल रही थीं। **बाबाराव समझ चुके थे कि जर्जर स्थिति में पहुंच चुके अपने स्वास्थ्य के चलते वे संगठन कार्य के लिए अधिक दौड़-धूप करने की स्थिति में नहीं हैं। इस दृष्टि से डॉ. हेडगेवार और बाबाराव के बीच बढ़ती घनिष्ठता का ही परिणाम था कि 1928 के कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में डॉ. हेडगेवार के साथ बाबाराव भी गए थे। डॉ. हेडगेवार की नेताजी सुभाषचन्द्र बोस से भेंट के समय भी बाबाराव उपस्थित थे।**

माना जाता है कि **उसी समय डॉ. हेडगेवार ने नेता सुभाष के सामने द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ने पर स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए संघ जैसा अखिल भारतीय संगठन खड़ा करने के लिए समयबद्ध कार्यक्रम की रूपरेखा रखी होगी। जिसको ध्यान में रखकर ही सुभाष बाबू ने रामझंझा गिरी और बाळा हुद्दार को देवलाली भेजकर डॉ. हेडगेवार से मिलने की इच्छा प्रकट की होगी। और शायद इसीलिए 21 जून 1940 को डॉ. हेडगेवार के निधन से एक दिन पूर्व दोबारा नागपुर आकर उनसे भेंट का असफल प्रयास किया होगा।**

1930 में गांधी जी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन छेड़ा, जो नमक सत्याग्रह के नाम से प्रसिद्ध है। डॉ. हेडगेवार ने संगठन के नाते संघ को उससे अलग रखते हुए भी स्वयं कुछ चुने हुए कार्यकर्ताओं के साथ '**जंगल सत्याग्रह**' नाम से उसमें भाग लिया और अकोला में कारावास भोगा। जिन दिनों वे कारावास में थे उन्हीं दिनों संघ के सरकार्यवाह बाळा हुद्दार क्रान्तिकारी दल द्वारा की गई बालाघाट डकैती के सिलसिले में गिरफ्तार हो गए। इससे डॉ. हेडगेवार बहुत चिन्तित हुए। **वे नहीं चाहते थे कि संघ अपनी प्रारम्भिक अवस्था में ही ब्रिटिश सरकार की कोप-दृष्टि का शिकार बने।** उन्होंने बाळा हुद्दार को तो सरकार्यवाह पद से मुक्त कर दिया और अपनी चिन्तित मन:स्थिति में चार-पांच दिन के लिए बम्बई चले गए। वहां **उन्होंने बाबाराव सावरकर और उनके सबसे छोटे भाई डॉ. नारायण सावरकर से संघ कार्य के भविष्य के बारे में गहन विचार-विमर्श किया। डॉ. नारायण सावरकर कलकत्ता मेडिकल कॉलेज में उनके सहपाठी भी रह चुके थे।**

काशी में संघ

डॉ. हेडगेवार बम्बई से होते हुए नागपुर वापस लौटे ही थे कि उन्हें काशी से बाबाराव का तुरन्त वहां पहुंचने का बुलावा आ गया। **बाबाराव का स्वास्थ्य खराब होने के कारण महामना मालवीय ने उन्हें अपने यहां बुलाकर उन्हें अपने निवास पर रखा था।** वैद्यराज त्रैयंबक शास्त्री से उनका इलाज करवाया जा रहा था। उन्हीं दिनों काशी में हिन्दू-मुस्लिम दंगे के कारण तनावपूर्ण स्थिति पैदा हो गई थी। बाबाराव ने डॉ. हेडगेवार को तुरन्त काशी पहुंचने का पत्र भेजा। डॉ. हेडगेवार 11 मार्च, 1931 को वहां पहुंचे। उनके ठहरने की व्यवस्था जमखंडी भवन में की गई थी। इसकी देखभाल रत्नागिरि के निकट शिरगांव के निवासी भास्करराव दामले सम्भालते थे। उनसे डॉ. की घनिष्ठता हो गई। बाबाराव और दमले के प्रयत्नों से डॉ. हेडगेवार

ने काशी के कुछ प्रतिष्ठित नागरिकों की बैठक ली। उनमें से कुछ लोगों को संघ की प्रतिज्ञा भी दिलाई।

बाबाराव ने मालवीय जी को विश्वविद्यालय परिसर में संघ शाखा लगाने की अनुमति देने को कहा, जो उन्होंने सहर्ष ही दे दी। शाखा से सम्बन्धित सामान रखने के लिए संघ-स्थान पर एक कमरा बनाने की अनुमति भी दी। **इस प्रकार काशी विश्वविद्यालय में संघ की शाखा खुली।** इससे पहले काशी के जमखंडी भवन में भास्कर दामले के मार्गदर्शन में एक शाखा शुरू हो चुकी थी।

धन धान्येश्वर शाखा नाम से जानी गई यह शाखा नागपुर और विदर्भ के बाहर पहली संघ की शाखा थी, जिसके निमित्त बाबाराव सावरकर बने। **काशी में ही एक दिन बाबाराव सावरकर डॉ. हेडगेवार से बोले, 'आज मैं अपनी तरुण हिन्दू सभा को विसर्जित करता हूं। मेरी जो कुछ शक्ति है वह आपके कार्य में लगा दूंगा। मेरा आशीर्वाद आपके साथ है।'**

इन्हीं दिनों एक अत्यन्त प्रभावी संत पांचलेगांवकर भी हिन्दू समाज के संगठन के लिए **'मुक्तेश्वर संघ'** चला रहे थे। उसके मराठी भाषी क्षेत्रों में 20-25 केन्द्र चल रहे थे। **बाबाराव ने सन्त पांचलेगांवकर को समझा-बुझाकर उनके मुक्तेश्वर संघ को रा.स्व. संघ में विलीन करने के लिए तैयार कर दिया। यह विलीनीकरण 1934 में पूरा हुआ।**

बाबाराव की पहल

सन् **1932 के अप्रैल मास के प्रारम्भ में** डॉ. हेडगेवार को बाबाराव का पत्र मिला की मई मास में कराची में अखिल भारतीय तरुण हिन्दू परिषद होने वाली है। आप उसमें अवश्य आइए। डॉ. हेडगेवार असमंजस में पड़ गए। एक ओर तो वे नागपुर में संघ शिक्षा वर्ग की तैयारी में लगे थे। दूसरे, कराची तक की यात्रा के लिए उनके पास पैसा भी नहीं था।

अपनी आर्थिक कठिनाई को वे किसी के सामने प्रकट नहीं होने देते थे। किन्तु बाबाराव के साथ उनका सम्बन्ध इतना सहज बन चुका था कि उन्होंने अपनी आर्थिक स्थिति उन्हें सूचित कर दी। **इस सम्बन्ध में डॉ. हेडगेवार और बाबाराव के बीच हुआ पत्र व्यवहार बहुत मार्मिक है।** बाबाराव ने उन्हें सूचित किया कि आर्थिक समस्या मेरे सामने भी है किन्तु भाई परमानन्द ने मेरे आने-जाने के लिए किराए की व्यवस्था कर दी है, उसमें से आधा आप ले लें। **चाहे जैसे भी हो, उन्होंने डॉ. हेडगेवार को कराची चलने के लिए मना ही लिया, और वे बम्बई से बाबाराव के साथ वहां गए। वहां उन्होंने संघ की शाखा शुरू की।**

कराची से लौटकर अगस्त 1932 में बाबाराव डॉ. हेडगेवार के साथ दक्षिण महाराष्ट्र के दौरे पर निकले। सतारा, कन्छाड़, सांगली, कोल्हापुर और जामखेड़ी आदि अनके स्थानों पर गए। **सब जगह बाबाराव ने अपने परिचित तरुणों एवं प्रतिष्ठित नागरिकों को डॉ. हेडगेवार से जोड़ दिया।** दक्षिण महाराष्ट्र में संघकार्य पहुंचाने का यह पहला प्रयास था। **बाबाराव के व्यापक परिचय का संघ कार्य को बहुत लाभ मिला।** डॉ. हेडगेवार की अनुभवपूर्ण प्रभावीवाणी और बाबाराव का बैठकों में सहज रीति व शान्त वाणी के विचारों को समझाने का कौशल-दोनों का तालमेल बन गया।

डॉ. हेडगेवार की कठिन आर्थिक स्थिति से उनके सभी शुभचिन्तक परेशान रहते थे। पर डॉ. हेडगेवार से बात करने का किसी को साहस नहीं होता था। 1936 में उन सबने बाबाराव के साथ मिलकर एक लॉटरी योजना तैयार की, और उसके लिए बाबाराव से डॉ. हेडगेवार को पत्र लिखवाया। बाबा ने प्रति बहुत आदर भाव होने पर भी डॉ. हेडगेवार ने जुए जैसे काम को अपनी सहमति देने से इनकार कर दिया।

सन् 1934 में बाबाराव की **'राष्ट्र-मीमांसा'** नामक मराठी पुस्तक प्रकाशित हुई। 1940 में राष्ट्र-मीमांसा का हिन्दू अनुवाद जबलपुर से छपा जिसमें गुरु जी गोलवलकर की लिखी 30 पृष्ठों की हिन्दी भूमिका उपलब्ध है। **गुरु जी ने अपनी बहुचर्चित अंग्रेजी पुस्तक 'वी ऑर अवर नेशनहुड'** के **1939 के प्रथम संस्करण में इस पुस्तक के लेखन में 'राष्ट्र-मीमांसा' को आधार बताया और उसका भारी ऋण स्वीकार किया।** प्रथम संस्करण में यह भूमिका छपी पर दूसरे संस्करण में नहीं दी गई।

1939 में भाग्यनगर सत्याग्रह के समय हिन्दू सभा के नेताओं का डॉ. हेडगेवार से मतभेद हो गया। कारण, **डॉ. हेडगेवार स्वतन्त्रता प्राप्ति के निर्धारित लक्ष्य से इधर-उधर भटकने को तैयार नहीं थे। उसी समय नाथूराम गोडसे ने संघ से सम्बन्ध विच्छेद करके 'हिन्दू राष्ट्र सेना' प्रारम्भ की और हिन्दू राष्ट्र अग्रणी' नामक साप्ताहिक में संघ की कटु आलोचना शुरू की।** विनायक सावरकर ने संघ पर निष्क्रियता का आरोप लगा दिया।

विनायक सावरकर ने कहा कि संघ स्वयंसेवक की कब्र पर लिखा जाएगा, 'पैदा हुआ, संघ में चला गया, कबड्डी और लाठी सीखता रहा, और बिना कुछ किए मर गया।' **इस काल में बाबाराव का पूरा प्रयास मतभेद की इस खाई को पाटने में लगा रहा। दोनों सावरकर बन्धुओं के संघ के साथ सम्बन्धों पर गहन शोध अभी बाकी है।........**

❖❖❖

मौलिक राजनैतिक चिन्तक महर्षि दयानन्द

–डॉ. धर्मपाल आर्य (पूर्व उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी)

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती को **वेदोद्धारक, नारी जाति का सम्मान कराने वाला, अस्पृश्यता के कोढ़ को समाप्त कराने वाला, सामाजिक कुरीतियों को मिटाने वाला, उनको अतीत के गौरव का स्मरण कराने वाला, उनको अस्मिता की पहचान कराने वाला, गौरक्षा के लिए देशवासियों की भावनाओं को जगाने वाला, पराधीनता की शृंखलाओं को काटकर स्वाधीनता, संग्राम की भावना जगाने वाला, स्वराज्य की अवधारणा से परिचित कराने वाला, आर्यभाषा का प्रचार-प्रसार कराने वाला माना जाता है।**

इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए स्वामी जी महाराज ने **आर्यसमाज** की स्थापना की, **परोपकारिणी सभा** की स्थापना की तथा **गौकृष्यादि रक्षिणी सभा** का भी निर्माण किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। **उनके अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तथा संस्कारविधि उनके मौलिक एवं मानवीय चिन्तन के परिचायक हैं।**

उन्होंने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में '**ब्रह्म विद्या विषय**' के अन्तर्गत लिखा है–जितनी सत्यविद्या संसार में हैं, वे सब वेदों से ही निकली है, अपने कथन की पुष्टि के लिए उन्होंने वेदों से अनेक प्रमाण दिए हैं। इसी प्रकार '**राजप्रजा धर्म विषय**' के अन्तर्गत भी उन्होंने वेदमन्त्रों को ही आधार बनाया है। वे लिखते हैं–**वयं प्रजापतेः प्रजा अभूम**–अर्थात सब मुनष्य लोगों को निश्चय करके जानना चाहिए कि **हम लोग परमेश्वर की प्रजा हैं, और वही हमारा एक राजा है।**

वे कहते हैं कि **तीन प्रकार की सभा ही को राजा मानना चाहिए, एक मनुष्य को कभी नहीं।** वे तीनों ये हैं–प्रथम राजप्रबन्ध के लिए **एक 'आर्यसमाज सभा'** जिससे विशेष करके सब राजकार्य सिद्ध किए जाएं। **दूसरी 'आर्य विद्या सभा'** जिससे सब प्रकार की विद्याओं का प्रचार किया जाए। **तीसरी आर्य धर्म सभा,** जिससे धर्म का प्रचार किया जाए।

महर्षि दयानन्द ने प्रजातान्त्रिक शासन पद्धति का पक्ष लिया है। **वे राजा की शक्ति सभाओं में निहित मानते हैं।** वे मानते हैं कि राजा के ये तीन प्रमुख कर्त्तव्य हैं आगे उन्होंने इसी क्रम में यह भी स्पष्ट किया है कि सब शत्रुओं को जीतकर नाना प्रकार के सुखों से विश्व को परिपूर्ण करना चाहिए।

उन्होंने अपनी बात को वेद के आधार पर व्याख्यायित किया कि **जिस देश में उत्तम विद्वान ब्राह्मण, विद्या सभा और राजसभा के विद्वान शूरवीर क्षत्रिय लोग मिल के राज कार्यों को सिद्ध करते हैं, वही देश धर्म और शुभ क्रियाओं से संयुक्त होकर सुख को प्राप्त होता है।** वे सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि **तीनों सभाओं की सम्मति से राजनीति के उत्तम नियम और नियमों के आधीन सब लोग व्यवहार करें, सब के हितकारक कार्यो में सम्मति करें। सर्वहित करने के लिए परतन्त्र और धर्मयुक्त कामों में अर्थात् जो-जो निज के काम हैं उन-उन में स्वतन्त्र रहें।** इसी बात को उन्होंने आर्यसमाज के दसवें नियम में भी कहा है।

पिछले दिनों इन बात की बड़ी चर्चा थी कि देश के शासक राजधर्म का पालन करें। वह राजधर्म क्या है। महर्षि दयानन्द ने राजा के गुणों का वर्णन करके स्पष्ट किया है कि जो इन गुणों से समन्वित है और जो प्रजाहित में अपने इन गुणों के अनुरूप कार्य करता है, वही राजधर्म है।

विद्युत के समान शीघ्र ऐश्वर्यकर्ता, वायु के समान प्राणवत् प्रिय और हृदय की बात जानने वाला, यम के समान पक्षपात रहित अर्थात न्यायाधीश की भान्ति सभी को समानता का अधिकार देने वाला, सूर्य के समान न्याय धर्म, विद्या का प्रकाशक, अन्धकार, अविद्या के समान दुष्टों को भस्म करने वाला, वरुण के समान दुष्टों को अनेक प्रकार से बांधने वाला, चन्द्रमा के समान श्रेष्ठ पुरुषों को आनन्द देने वाला ही राजा होना चाहिए। राजा को ऐसा प्रतापी होना चाहिए कि कोई उसकी ओर वक्र दृष्टि से देखने की सामर्थ्य न जुटा पाए। वह अग्नि, वायु, सूर्य, सोम के समाप धर्मप्रकाशक, धनवर्द्धक और दुष्टों का संहारक तथा महाऐश्वर्यवान होना चाहिए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मनुस्मृति से भी उद्धरण देकर स्पष्ट किया है कि सच्चा कौन है? **जो पवित्रात्मा, सत्याचार और सत्पुरुषों का संगी यथावत् नीतिशास्त्र के अनुकूल चलने वाला, श्रेष्ठ पुरुषों के सहाय से युक्त बुद्धिमान है, वहीं न्याय रूपी दण्ड के चलाने में सहायक होता है।** महर्षि दयानन्द सभा और समिति

की व्यवस्था देते हैं। ये दोनों शब्द आज के प्रजातन्त्र के निकट हैं, परन्तु उनकी मान्यता ऐसी नहीं हैं कि कोई भी केवल 'वोट' के बल पर इन सभाओं तथा समितियों का सदस्य बन जाए। **वे कहते हैं कि सभा में चारों वेद, न्यायशास्त्र, निरूक्त, धर्मशास्त्र आदि के वेत्ता विद्वान सभासद हों। वे यह भी कहते हैं कि केवल मताधिक्य से ही निर्णय न लिए जाएं अपितु एक अकेला सब वेदों को जानने वाला, द्विजों की व्यवस्था करे**, वहीं श्रेष्ठ धर्म है।

महर्षि दयानन्द की यह व्यवस्था मौलिक एवं क्रान्तिकारी है। आज संसद में कितने लोग हैं जो वेद के ज्ञाता हैं अथवा वे वेद ज्ञान जानने वाले की व्यवस्था मानते हैं। राज्य सभाओं और लोक सभाओं में स्वतन्त्र सम्मति रखने वाले कितने हैं?

न्यूनतम साझा कार्यक्रम के अन्तर्गत नियमों एवं सिद्धान्तों को तिलांजलि देने वाले अनेक हैं। चाटुकारों से सभाएं भरी पड़ी हैं यही स्थिति सामाजिक संगठनों की भी है। **सभी अध्यक्षों की हां में हां मिलाने वाले हैं। चारों ओर इस बात की होड़ है कि व्यवस्थाओं का दोहन कौन अधिक से अधिक कर सके।**

महर्षि दयानन्द ने राजा के व्यसनों को भी गिनाया है–**मृगया, जुआ, दिवाशयन, कामकथा, परनिन्दा, अति स्त्री संग, नाचना व नाच देखना, वृथा समय नष्ट करना आदि राजा के दुर्गण हैं। ऐसे व्यक्ति न राजा होने चाहिए, न सभासद और न ही किसी अन्य पद पर रखे जाने चाहिएं।**

उन्होंने सचिव नियुक्ति के लिए भी बड़ी मौलिक व्यवस्था दी है–**राज सभासद और मन्त्री कैसे होने चाहिएं? स्वराज्य, स्वदेश में उत्पन्न हुए, वेदादि शास्त्रों को जानने वाले शूरवीर, जिनका लक्ष्य अर्थात विचार निष्फल न हों। ऐसे कुलीन सुपरीक्षित धार्मिक, चतुर सचिवान् सात या आठ नियुक्त किए जाएं।**

आज की तरह फौज नहीं। सचिव अपने देश में उत्पन्न होना चाहिए। **महर्षि दयानन्द ने राजकार्यों के लिए कर लेने की व्यवस्था भी मनु महाराज के अनुसार इस प्रकार दी है– जो व्यापार करने वाले का शिल्प को सुवर्ण और चांदी का जितना लाभ हो, उसमें से पचासवां भाग, चावल आदि अन्नों में छठवा, आठवां या बारहवां भाग लिया करें और जो धन लेवें तो इस प्रकार कि किसान आदि खाने पीने और धन से रहित होकर दुःख न पावें।**

महर्षि दयानन्द ने राजाओं की सेनाओं के रख रखाव तथा राजपुरुषों के चयन तथा उनके **नियमित अभ्यास आदि की भी व्यवस्था दी है। आज के राजपुरुषों को पेंशन मिलती है। यह व्यवस्था ऋषिवर ने अपने एक पत्र में राजा को परामर्श देते हुए लिखी थी कि जो राजपुरुष निरन्तर 30 वर्ष राजसेवा में रहे, उसे आजीवन आधा वेतन दिया जाए।**

यह विचारणा ऋषि के लोकहित की भावना को रूपायित करती है। महर्षि दयानन्द ने अपने किसी भी ग्रन्थ में दलों के आधार पर चलने वाला प्रजातन्त्र का जिक्र नहीं किया। वे सम्भवत: प्रजातन्त्र की दल विहीन पद्धति को स्वीकार करते प्रतीत होते हैं। **वे स्पष्टत: एक राष्ट्रीय सरकार के पक्षधर हैं, जिसमें सभी विद्वज्जनों का प्रतिनिधित्व हो। वे राजा के लिए तीन या पांच वर्ष की व्यवस्था भी नहीं देते।** इससे तात्पर्य है कि लोकहित में राजकाज चलाने वालों का कार्यकाल दीर्घकालिक भी हो सकता है।

महर्षि दयानन्द से पहले किसी ने विश्व सरकार जैसे यू.एन.ओ. आदि संगठन की कल्पना भी नहीं की थी। परन्तु महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में लिखा है कि एक-एक ग्राम का अधिपति, दस ग्रामाधिपति को और वह दस ग्रामाधिपति, बीस ग्रामों के अधिपति को, दस-दस ग्रामों का वर्तमान नित्यप्रति जना देवे।....

और वे सब राज सभा, महाराज सभा अर्थात् सार्वभौम चक्रवर्ती महाराज सभा को सब भूगोल का वर्तमान जनाया करे।' **महर्षि ने मनु महाराज के श्लोक की व्याख्या करते हुए निश्चय ही 'विश्व सरकार' की अवधारणा प्रस्तुत की है।** ऐसी विचारणा देने वाले वे पहले राजनैतिक चिन्तक हैं।

महर्षि दयानन्द के राजनीति सम्बन्धी विचार मौलिक हैं। वे विदेशी आक्रान्ताओं को शीघ्रातिशीघ्र भारत से उखाड़ फेंकना चाहते हैं और यहां पर वेदानुमोदित शासन सत्ता की स्थापना करना चाहते हैं। 'आर्याभिविनय' में अनेक मन्त्रों की व्याख्या करते समय उन्होंने यह प्रार्थना की है।

'**राजप्रजाधर्म विषय**' का समापन करते हुए वे लिखते हैं कि वे आर्यलोग सत्य न्याय करने में अत्यन्त पुरुषार्थ करते थे। जिससे **आर्यवर्त के न्यायघर में कभी अन्याय नहीं होता था**। यह सब आर्यो का सिद्धान्त है। मौलिक विचारक महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों के अनुसार ऐसे ही आर्य राज्य की स्थापना आज की आवश्यकता है।

–ए-एच-16, शालीमार बाग, दिल्ली-88

●●●

भक्त रामशरणदास जी की जन्मशताब्दी पर–

भक्तजी के सपनों का भारत

–पंचखंडेपीठाधीश्वर आचार्य धर्मेन्द्र महाराज

सन् 1955 के आस-पास की बात है। श्री पंचखंडपीठ के मुखपत्र **'पाक्षिक ब्रजांग'** में एक लेख प्रकाशित हुआ था–**'राणा-शिवा के हिन्दू! अब तो जाग! जाग!! जाग!!!'** लेख क्या था, **आहत हिन्दू हृदय की पीड़ा ही मानो साकार हो उठी थी।** जाति के पतन की पीड़ा और सुप्त समाज को आत्मा को ठोकर मारकर सजा देने वाली ललकार का वह अद्भुत समन्वय हृदयस्पर्शी और रोमांचकारी लेख था। **शतप्रतिशत अपने ही विचारों की ऐसी मर्मस्पर्शी स्पष्ट और सतेज अभिव्यक्ति को, अपने ही पत्र में किसी अन्य लेखक के नाम से पढ़कर सुखद आश्चर्य और आनन्द की अनुभूति हुई। लेखक का नाम था 'भक्त रामशरण दास'।** भक्त जी की सौम्य-शान्त छवि में छिपे हिन्दुत्वचेतना के ज्वालामुखी से **मेरा वह प्रथम परिचय हुआ, उनके उस लेख के माध्यम से।......**

इससे इसके पूर्व **'कल्याण'** आदि धार्मिक पत्रों में भक्त जी के लेख यदा-कदा देखने को मिल जाते थे। **'भक्तों', सन्तो', 'साधुओं', 'पंडितों' और 'आचार्यों' की हमारे देश में कमी नहीं है**, मैंने भक्त रामशरणदास पर इसीलिए कोई ध्यान नहीं दिया था, **किन्तु ब्रजांग में अपने ही पत्र में प्रकाशित भक्त जी के उस लेख ने मुझे जताया कि यह 'भक्त' सामान्य भक्तों की भीड़ का एक अंग नहीं है।** भक्त जी के इस वैशिष्ट्य ने मुझे उनकी ओर आकृष्ट किया। **उनके हृदय में सुलगती हिन्दुत्वनिष्ठा की अग्नि में मैंने उन्हें एक विलक्षण रूप में देखा** और इसी के साथ उनसे सम्पर्क का तारतम्य जुड़ा जो एक अनिर्वचनीय आत्मीय सम्बन्ध का आधार बना।

भक्त जी का व्यक्तित्व अप्रकट था–गुह्य और गोपनीय धर्म के तत्व के समान। जो गहरे में पैठ सके, वही पहचान सकता था उन्हें। उन्होंने स्वयं को व्यक्त या विज्ञापित करने में कभी रुचि नहीं ली। लोकेषणा अथवा प्रसिद्धि की मुमुक्षा से वे सर्वथा मुक्त थे। **वह गुण, जो बड़े-बड़े सन्तों में भी दुलर्भ है, उनमें सहज और स्वाभाविक रूप में था।**

मेरा उनसे प्रारम्भिक परिचय पत्रव्यवहार के माध्यम से ही विकसित हुआ। वे सीधी-सादी आडम्बरहीन भाषा लिखते थे। जीवन में सहस्रों बार उनके लेख विचार, संस्मरणादि शताधिक पत्र-पत्रिकाओं में छपे होंगे। अपने युग के बहुचर्चित और सुप्रसिद्ध पुरुषों से उनका निरन्तर पत्राचार चलता था, किन्तु **उन्होंने कभी अपने नाम का 'लैटरपैड' तक नहीं छपवाया।** चाहे जैसे कागज पर, बिना हाशिया छोड़े, एक-एक सेंटीमीटर स्थान का उपयोग करते हुए वे सूक्ष्म अक्षरों में अपने भावों को लिपिबद्ध करते जाते थे। पाठक उनके शब्दाडम्बर या शैली से प्रभावित नहीं होता था, क्योंकि शैली या आडम्बर तो उनकी भाषा में था ही नहीं। सो **पाठक प्रभावित नहीं, अभिभूत हो जाता था, भक्तजी की भावना से** और उनकी सहज सरल अभिव्यक्ति से। भक्त जी की यह विशेषता भी उनके सन्तोचित व्यक्तित्व की अनोखी शोभा थी।

मैं था 15 वर्ष का किशोर और वे 45 या 50 के रहे होंगे, 55 के भी हो सकते हैं। किन्तु वे श्रद्धाभिक्त में निमग्न होकर मुझे पत्र लिखते थे। 1957 में मेरी बहुचर्चित पुस्तक **'भारत के दो महात्मा'** प्रकाशित हुई। तब मैं 16 वर्ष का था। इस पुस्तक को पढ़कर असंख्य पाठकों ने प्रशंसा-पत्र भेजे किन्तु भक्त जी की प्रशंसा अकृत्रिम और हार्दिक थी। भक्तजी की पुस्तक **'गांधी जी की विचित्र अहिंसा'**, मेरी पुस्तक के पूर्व प्रकाशित हो चुकी थी। **भारत में गांधी जी के विरुद्ध स्वतन्त्र पुस्तक लिखने और प्रकाशित करने वाले भक्त जी प्रथम पुरुष थे।**

हमारे समान विचारों ने ही हमें आत्मीयता के सूत्र में आबद्ध किया था ऐसा कहा जा सकता है। किन्तु बहुत से बिन्दु ऐसे थे जिनमें भक्तजी मुझझे सहमत नहीं थे या जिनमें भक्त जी से मेरा मतभेद था, किन्तु भक्त जी की मेरे प्रति ममता या श्रद्धा में कभी कोई कमी नहीं आई। जिन्हें सनातनधर्मालम्बी कहा जाता है। उनकी बड़ी अनुदार छवि लोगों के मन में है। **भक्त जी सनातनी नहीं, कट्टर सनातनी थे, कट्टर अर्थात सर्वथा परम्परावादी और पुराणनिष्ठ। संशोधन की किसी भी सम्भावना के घोर विरोधी किन्तु सुध ारवादी आर्यसमाजी नेताओं से उनके मधुर सम्बन्ध अन्त तक बने रहे।**

स्वामी करपात्री जी महाराज के परमभक्त होते हुए **वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नेताओं श्री गुरु जी, माननीय रज्जू भैया आदि के प्रति परम स्नेहालु थे।** उनका मस्तिष्क यदि परम्परानिष्ठ था तो उनका हृदय उन्मुक्त और प्रेम से परिपूर्ण था। **हिन्दुत्व का सर्वसामान्य और सर्वमान्य लक्षण है–औदार्य, और यह औदार्य**

भक्त जी के स्वभाव में सहज समाविष्ट था। सिद्धान्तनिष्ठा और नियमों के अनुशासन के प्रति वे अणुमात्र भी उदार न थे, **किन्तु व्यवहार में उनकी उदारता और सरलता के एक नहीं अनेक उदाहरण हैं।**

भक्त जी करपात्री जी महाराज के अनन्य और एकनिष्ठ अनुयायी थे और हमारे भी परमआत्मीय, किन्तु हमारे अकाट्य तर्कों का कोई उत्तर न दे पाने पर भी करपात्री जी महाराज के प्रति उनकी भक्ति में किंचित अन्तर नहीं आया और उनके असीम श्रद्धा केन्द्र स्वामी जी से मतभेद रखने के आधार पर हमारे प्रति भी उनकी आस्था में कोई कमी नहीं आ पाई। **सनातनधर्म के प्रचण्ड प्रवक्ता स्वर्गीय पंडित माधवाचार्य जी शास्त्री, ब्रह्मालीन स्वामी करपात्री जी महाराज के कितने स्नेहभाजन और श्रद्धालु थे। यह किसी भी सनातनधर्मालम्बी सुविज्ञ से छिपा नहीं है,** किन्तु एक समय ऐसा आया जब स्वामी जी और आचार्यजी में भी मतभेद उठ खड़े हुए। मतभेद की सुविधा या विचारों का स्वातन्त्र्य ही हिन्दु परम्परा की विशेषता है, **किन्तु अगम्भीर और असहिष्णु जन मतभेदों को स्नेह सम्बन्धों के बीच अभेद्य प्राचीर बना लेते हैं।**

स्वामी जी और आचार्य जी के बीच उठे सैद्धान्तिक मतभेद के वात्याचक्र ने बहुतों को क्षुब्ध और विचलित किया होगा, किन्तु **भक्त रामशरणदास उस संक्रान्ति काल में भी स्वामी जी और आचार्य जी दोनों के प्रति समान श्रद्धालु और दोनों के ही समान स्नेह-भाजन बने रहे। अपनी सम्पूर्ण कट्टरता और विचारोत्तेजना के बावजूद भक्त जी की प्रज्ञा सदा अविचलित और सुस्थिर रहती थी, स्थितप्रज्ञता यही तो है!** इन अर्थों में भक्त जी स्थितप्रज्ञ थे।

वैदिक वर्ण-व्यवस्था के भक्तजी परमोपासक थे। ब्राह्मणों के प्रति अटूट श्रद्धा और राजर्षि क्षत्रियों के प्रति अविचल आस्था उनके हृदय में थी। **स्वयं को वे ब्राह्मणों की चरणरज ही मानते थे। अग्रवाल वैश्य वंश के पवित्र संस्कार तो उनमें अक्षुण्ण थे, किन्तु उनके स्वभाव में अथ से इति तक वह हीनवृत्ति कहीं भी नहीं आ पाई थी, जिसे 'बनियापन' कहा जाता है।** भक्तजी बनिए नहीं थे, वे वास्तविक अर्थों में महाजन थे, किन्तु उनकी महाजनी केवल उनके चरित्र और स्वभाव तक ही सीमित रही।

एक रुपए को सवा और सवा को डेढ़ के दो में विकसित करने की वंशोचित चातुरी या वृत्ति उनमें नाम को भी न थी। मैं नहीं जानता कि भगवत्प्रेम, हिन्दुत्वनिष्ठा और राष्ट्रचिन्ता के अतिरिक्त जीवन में उन्होंने अधेला भी धरा हो, ऐसा मुझे नहीं लगता। **व्यवसाय के स्थान पर, भक्तजी तो जीवनपर्यन्त देश, धर्म, जाति और समाज की चिन्ता में ही छीजते रहे। जहां कहीं किसी सन्त, महात्मा की उपस्थिति को सूचना मिली, वहां त्वरित उपस्थित होकर उनकी चरण- रज लेने का उनका लोभ उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। ऐसा लोभी मैंने और नहीं देखा।**

ऐसे लोभी की झोली में साधुओं की चरणधूलि भले ही जितनी एकत्र हो जाए, धन तो जुड़ने से रहा! **साधुओं, सन्तों, और महात्माओं की शरण में जाकर यह लोभी पुरुष न अपनी दुकान की बात करता था, न मकान की, न सन्तान की, न परिवार की।** अपने या अपने परिवार के लिए उसे कुछ नहीं चाहिए था।

उनकी आतुर प्रश्नावली अद्भुत होती थी। प्रत्येक संत, महन्त, साधु, महात्मा से वह जानना चाहता था कि हिन्दु जाति के दुर्दिन कब दूर होंगे? धर्म की दुर्गति कब तक होती रहेगी? समाज पतन के गटर में कब तक गिरा रहेगा? हिन्दू जाति की निद्रा कब भंग होगी या अपनी पुण्यभूमि का उद्धार प्रभु कब करेंगे? आप ही बताइये! आपने अपने जीवन में ऐसा लोभी व्यक्ति कोई देखा है क्या? मैंने तो नहीं देखा।.......

भक्त रामशरणदास देश, जाति या धर्म की व्यथा-वेदना की मूर्तिमन्त प्रतिमा थे। साधु-सन्तों के वे अनन्य भक्त थे किन्तु मन-वचन-कर्म से देश, जाति या धर्म की सेवा न करने वाले। **पाखण्डी वेशधारियों के लिए उनके मन में न श्रद्धा थी, न आकर्षण।**

सनातनधर्म का ढोल पीटने वाले धर्मध्वजियों से तो धराधाम भाराक्रान्त हो रहा है किन्तु भक्तजी विरले थे। **वे धर्मध्वजी नहीं, धर्मधारण थे। धर्मपालन की उनमें जो सूक्ष्मदृष्टि थी। वह बड़े-बड़े मठाधीशों में दुर्लभ है।**

ख्यातनामा संन्यासियों, धर्माचार्यों को चाय, तम्बाकू, चर्म की वस्तुओं, वनस्पति घी और होटल के भोजन सेवन करने और साबुन, क्रीम का उपयोग करते देख उनका हृदय क्षोभ से व्याकुल हो उठता था।

सनातनधर्मालम्बियों को दुर्व्यसनों में लिप्त देखकर ही उन्होंने पुस्तक लिखी थी "सब पापों की जड़ चाय, तम्बाकू।" बहुत लोग हैं जो आदर्शों की महत्ता तो स्वीकार करते हैं किन्तु उन्हें जीवन में व्यावहारिक-स्तर पर अपनाना अशक्त मानते हैं। किन्तु भक्तजी ने अपने आदर्शों के प्रति किसी भी स्तर पर कोई समझौता स्वीकार नहीं किया।

●●●

बहादुर हीरामन ने दी थी मुगलों को चुनौती

कोई बात नहीं, जो हमने भी इसके बाप की कब्र न खोदी तो खरी जाटनी के न किसी... का जाया कह दीजियो। हीरामन जाट ने आवेश में आकर कहा। चेहरा तमतमा उठा। **आंखों में खून उतर आया और भुजाएं फड़कने लगीं। अगर बादशाह सामने होता तो एक ही लट्ठ से उसका सिर फोड़ दिया होता।** जो होवे सो होवे। जाट परिणाम की कब चिन्ता करे हैं!...

हीरामन जाट मथुरा-आगरा के आसपास की जाट खाप पंचायतों का प्रमुख था। कई वर्षों से जैसे ही इलाके की फसल पककर खड़ी होती, मुगल सिपाही लूट लेते थे। कई बार दिल्ली में जहांगीर के दरबार में जाकर शिकायत की गई लेकिन **सुनवाई तो तब होती जब मुगलों का भारतभूमि से मिट्टी और खून का रिश्ता होता।** लुटेरों के मन में दया दर्द कब होने लगा!

हर साल अपनी कड़ी मेहनत को यूं लुटता देख बहुत खून जलता था लेकिन गांव के बड़े-बूढ़ों की बात मान कर हीरामन छाती पर पत्थर रख लेता था। इस वर्ष भी फसल बहुत अच्छी हुई थी। इंद्रदेव की विशेष कृपा थी, पानी खूब बरसा था। हरी-हरी फसल देख सभी जाटों की खुशी का ठिकाना नहीं था। अपने खून-पसीने की मेहनत का नतीजा देखकर किसको खुशी नहीं होती लेकिन मन के किसी कोने में हीरामन को डर भी था कि जो गत वर्ष हरिया जाट के साथ हुआ वह कहीं किसी और किसान के साथ न हो जाए।

पिछले वर्ष **हीरामन और गांव के तमाम युवा और बूढ़े मथुरा से कोई दस कोस दूर पपरिया गांव में एक पंचायत में गए थे। हरिया की तबियत खराब थी, इसलिए गांव में ही रह गया था।** बैलगाड़ियों से दस कोस का सफर पूरा करने में भी दो-तीन घंटे का समय लगता है। **सुबह-सुबह सब युवक अपने स्वभाव के अनुसार हुड़दंग करते हुए, स्थानीय गीत गाते हुए पपरिया गांव की तरफ निकल पड़े थे। किसी को कोई अन्देशा नहीं था कि पीछे कितनी बड़ी अनहोनी उनका इन्तजार कर रही थी।**

इधर से जाटों का बैलगाड़ियां लेकर गांव से बाहर निकलना हुआ कि उधर से घोड़ों पर सवार, मुगल सिपाहियों के झुंडों ने फसलों पर धावा बोल दिया था। **हरिया ताऊ और शान्ति ताई ने जब उनका विरोध किया तो उनकी गर्दन उतार दी गयी।** बेशर्मों ने हरिया की उम्र का भी ख्याल नहीं किया। **अगर घर की जवान महिलाए आंगन में बने कुएं में नहीं छिपतीं तो... पता नहीं क्या अनर्थ हो जाता।**

हीरामन ने मन ही मन कसम ली कि उसके जीते जी अब ऐसा नहीं होगा। अब कोई हरिया नहीं मरेगा। अब घर बहन-बेटियों की आन पर कोई नजर डाले, इससे पहले ही पुख्ता प्रबन्ध करना पड़ेगा।

गत वर्ष की तरह **मुगल सिपाही इस वर्ष भी पकी हुई फसल को देखकर लूटने आ गए थे।** इस बार तो कोई विरोध भी नहीं हुआ, जैसे सिपाहियों के आने की खबर सुनकर सभी गांव छोड़कर भाग खड़े हुए हों। **पकी फसल को काटकर गाड़ियों में लाद विजय के उन्माद में झूमते हुए सिपाहियों ने वापस दिल्ली का रुख किया ही था कि एकाएक 'हर हर महादेव' के नारों से इलाके का चप्पा-चप्पा गूंज उठा।**

इस से पहले कि मुगल सिपाही कुछ समझकर म्यान से तलवार निकाल पाते, गांव के जाटों ने अपने तेल पिलाये लट्ठों से कई सिपाहियों के सिरों की कपाल क्रिया कर दी। **जो सिपाही प्राण बचाने के लिए इधर-उधर भागे, उन पर पेड़ों से धमाधम कूदकर जाट छोरों ने ऐसे लट्ठ बरसाए कि शरीर की कोई हड्डी साबुत नहीं बची।** जब मुगल बादशाह जहांगीर को पता चला तो शराब के नशे में झूमते हुए बादशाह ने घोषणा की कि मैं... जाटों की कब्र खोद दूंगा।

आज **लूटी हुई फसल मुगल सियारों से वापस छीन ली थी। हरिया ताऊ की मौत का बदला भी ले लिया था, लेकिन हीरामन शान्त नहीं था।** खुश होने के बजाय उसका खून उबल रहा था। **मैं जाटों की कब्र खोद दूंगा, बादशाह के कहे गए ये शब्द बार-बार उसके मस्तिष्क में वार पर वार कर रहे थे।**

एक विदेशी-विधर्मी लुटेरे की इतनी हिम्मत कि वह हमारी कब्र खोदने की बात कहे। मन में उठे हुए तूफान को नियन्त्रित करने का प्रयास करते हुए हीरामन

ने सामने एकत्रित गांव के सभी लोगों को देखा, फिर अपना **मजबूत लट्ठ उठाया और कंधे पर रखते हुए सिंह गर्जना की कि चलो सिकंदरा।**

इतना सुनने के साथ ही एक बार फिर बोले 'पूंछरी के लौठा की जय' अब हर हर महादेव के उद्घोष होने लगे। **बैलगाड़ियों में लगे बैलों को भी जैसे हीरामन की भाषा समझ आ गयी थी।** सुनना था कि सिकंदरा जाने वाले रास्ते पर सरपट दौड़ने लगे। **रात होते-होते जाटों ने सिकंदरा को घेर लिया। फड़ाक से एक आवाज हुई और लट्ठ के एक वार से ही मकबरे के सुरक्षा करने वाले सिपाही की गर्दन ढेर हो गई।**

कई युवक मकबरे के अन्दर घुस गए। जाटों का भुजा-बल और फावड़े, हथौड़े, गैंतियों का कमाल यह था कि क्षण भर में ही मीना बाजार के नायक अकबर की ठठरी निकाल कर लाठियों से कूट-कूट कर जला डाली गयीं और चूरा मैदान में बिखेर दिया गया। **हीरामन ने जो कहा था वह कर डाला। मुगल सम्राट अकबर की कब्र खोद डाली,** जिस पर अब जानवरों ने कब्जा कर लिया था। **समाचार पाकर शाही दरबार सन्न रह गया। यह हुआ तो क्या हुआ?...**

दरबार में उपस्थित कुछ मुगल सरदार जाटों को नेस्तनाबूद करने की कसमें खाने लगे। लेकिन कुछ समझदार और **जाटों के स्वभाव से परिचित लोगों ने परामर्श दिया कि कब्र का पुनर्निर्माण कर मौन साधने में ही कल्याण है, अगर खबर फैल गई तो अच्छा नहीं होगा।** लोग भिन्न- भिन्न बातें करेंगें, जो शहंशाह अपने अब्बा की कब्र की हिफाजत नहीं कर सका वह और की हिफाजत क्या करेगा? सल्तनत की किरकिरी हो जाएगी। **जहांगीर क्या करता? वह बेचारा खून का घूंट पीकर रह गया।.....   (पाचंजन्य से साभार....)**

ईसाई धर्म प्रचारकों का कुचक्र:

सावधान हिन्दू समाज

- ईसाई धर्म प्रचारक श्रमिकों, अशिक्षितों और वंचित समाज को अपना शिकार बनाते हैं।
- शुरू में, इन्हें आश्वासन दिया जाता है कि, यदि आप हमारी प्रार्थना सभाओं में आयेंगे तो आपके कष्ट दूर हो जायेंगे।
- जब प्रलोभन में व्यक्ति इनकी प्रार्थना सभाओं में जाने लगता है तो, उसे अपना साहित्य देते हैं।
- धीरे-धीरे घर से देवी-देवताओं की मूर्ति और चित्र हटाने को कहते हैं, भोले-भाले व्यक्ति को यह पता भी नहीं चलता कि, उसका धर्म परिवर्तन किया जा रहा है।
- महिलाओं से कहा जाता है कि, आपके सुहाग के प्रतीक आपको कष्ट पहुँचा रहे हैं, इनका परित्याग करो।
- व्यक्ति धोखे में आ जाता है और फिर किसी चर्च में ले जाकर ईसई बना दिया जाता है।

हम क्या करें?

- हिन्दू संगठनों को चाहिये कि, प्रत्येक मन्दिर में सप्ताह में कम से कम एक बार कीर्तन और प्रार्थना सभा हो। श्रमिकों, वंचितों और निर्धनों को अधिक से अधिक सम्मिलित किया जाये।
- जहाँ भी ईसाई मिशनरियों अवैधानिक रूप से धर्मान्तरण करा रही हों, उसकी सूचना प्रशासन को तुरन्त दें।
- हिन्दुत्व का प्रचार करने को लिये प्रत्येक जागरूक हिन्दू को आगे आना होगा। यह कार्य मानवता की रक्षा का कार्य है। किसी का धर्मान्तरण करना सबसे बड़ा मानवाधिकार हनन है।
- श्रमिकों, वंचितों और कृषकों के मध्य वैदिक शिक्षाओं का प्रचार युद्ध स्तर पर हो। आर्यसमाज भी अपनी निद्रा का परित्याग करें और सनातनसभाएं भी सक्रिय हों।
- बौद्ध, सिक्ख और जैन संगठनों को भी चाहिये कि, वे धर्म प्रचार का कार्य तेजी के साथ करें।
- भारत की आध्यात्मिकता में व्यापकता, सौहार्द्र, सहयोग, उदारता और अहिंसा है। **मानवता की**

अखिल भारत हिन्दू महासभा, हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1

चन्द्र प्रकाश कौशिक	**मुन्ना कुमार शर्मा**	**वीरेश कुमार त्यागी**
अध्यक्ष	**मन्त्री**	**कार्यालय मन्त्री**

तांगेवाला कैसे बना मसालों का शहंशाह

–महाशय धर्मपाल गुलाटी (एम.डी.एच.)

गतांक से आगे....

नकाब पलट ही दिया। उसने पिताजी से कहा कि अगर हम आपसे यह सारे रुपए छीन लें, तो आप हमारा क्या बिगाड़ लेंगे? इतना सुनकर तो पिताजी को चक्कर-सा आ गया, लेकिन उन्होंने कुछ न कहा। फिर अगले दिन से पिताजी ने गोदाम जाना ही बन्द कर दिया, क्योंकि मुसलमान लोग हिन्दुओं को छुरे मार रहे थे। **बात जब जिन्दगी की आती है, तो इन्सान अपना सब कुछ दांव पर लगाने के लिए तैयार हो जाता है,** पिताजी को भी वहां के बदतर हालत को देखते हुए सीने पर पत्थर रखकर ऐसा फैसला लेना पड़ा।

हमारे शहर में एक मुहल्ला जैनियों का था, जिसको भावड़यां दा मुहल्ला कहा जाता था। ये लोग बड़े पैसे वाले होते थे। आमदनी के लिहाज से हर अच्छा काम इन लोगों के पास ही होता था। मिसाल के तौर पर सर्राफा, सोने-चांदी का काम, कपड़े का काम, जनरल मर्चेंट वगैरह- वगैरह। एक दिन ऐसा भी समय आया कि इन लोगों ने अपने घर छोड़ दिए। फिर लोगों का रूझान जम्मू का बनता गया। काफी लोग सियालकोट से जम्मू जाने लगे।......

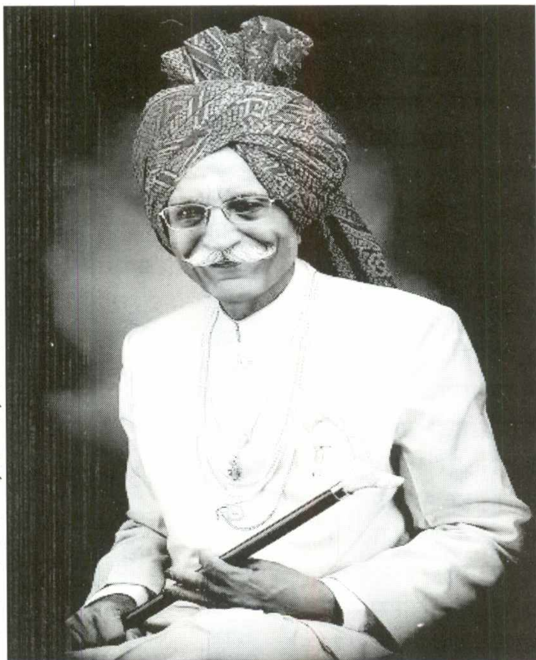

सियालकोट से जम्मू शहर की दूरी सिर्फ 27 मील थी और उन दिनों किराया था सिर्फ सात आने। जब जैनी लोगों ने शहर से निकलना शुरू किया और जम्मू जाने का प्रोग्राम बना लिया, तो मुसलमान लोगों ने जो लाइन जम्मू जाती थी, शहर से पांच-छः मील से एक लकड़ी की गाड़ी की लाइन रातों-रात तैयार कर ली। सुबह जब गाड़ी चली तो वह गाड़ी जब लकड़ी की लाइन पर चढ़ी, तो वहां सियालकोट छावनी कैंट के पास जाकर उलट गई। **इसके बाद दूसरी तरफ से मुसलमान लोग उसको लूटने के लिए भाले और तलवार लेकर आ गए।** मगर उन लोगों का नसीब अच्छा था। **भगवान की करनी ही यह हुई कि जिस जगह पर गाड़ी उलटी, वह इलाका सियालकोट छावनी का था। वहां मिलिटरी वालों ने जब मुसलमानों को लूट-पाट पर उतारू देखा, तो वे उन पर टूट पड़े।** इस तरह सब लोग बच गए। इसके बाद मिलिटरी ने वहां पर कैंप बना दिया।

आहिस्ता-आहिस्ता जैसे-तैसे अपना घर-मकान छोड़कर लोग कैंप में आने लगे। कलेजा कांप उठता है आज भी मेरा, जब वह मनहूस घड़ी याद आती है। **आखिरकार हालात के आगे सिर झुकाते हुए हमने भी जिन्दगी की खातिर अपनी जन्मभूमि से सदा-सदा के लिए नाता तोड़ने का फैसला ले लिया।** भरा-पूरा परिवार, बसी-बसाई गृहस्थी, तरक्की की ओर तेजी से बढ़ता रोजगार, समाज में अच्छी मान-प्रतिष्ठा, क्या नहीं था हमारे पास?.... जिसकी एक आम आदमी ख्वाहिश रखता है।

मगर इतना सब कुछ होने के बावजूद शायद उस धरती से हमारा नाता बस उतने ही दिनों का था, बाकी के दिन कैसे, किस रूप में गुजारने हैं, इसका खाका ऊपर वाले ने कुछ और तय कर रखा था और उस खाके पर आगे बढ़ाने के लिए हालात ने एक अलग ही मोड़ ले लिया।

घर में पिताजी माताजी मेरे ख्याल में 100 के लगभग बिस्तर तैयार किए हुए थीं। हमारे यहां जब शादी होती, तो बिस्तर वगैरह घर से निकाल लिए जाते और हम चारपाई मुहल्ले से उठा लाते। हमारा पूरा घर सामान से भरा पड़ा था। लेकिन सब कुछ छोड़कर एक दिन हमें भी केवल आंखों में आंसू लिए कैंप में आना पड़ा।

20 अगस्त, 1947 का वह दिन इतना लम्बा वक्त गुजर जाने के बाद भी आज भी मैं नहीं भूल पाया, जब हमने अपनी धरती छोड़ी थी, **क्रमशः...**

वृद्धावस्था और स्वास्थ्य की समस्यायें

–डॉ. फणिभूषण दास

<u>गतांक से आगे....</u>

स्वास्थ्यप्रद एवं स्वच्छता परिपोषक स्थिति बनाने के उपायों और अन्य उपयोगी सावधानियों का व्यवहार करना आवश्यक होता है। **यहां पर यह कथन बहुत उपयुक्त और सटीक लगता है कि किसी भी रोग का निरोध** (प्रोफाइलेक्सिस) **उसके खर्चीले उपचार से श्रेयस्कर होती है क्योंकि उससे न केवल समय की बचत होता है बल्कि रोग के निदान** (डायग्नोसिस) **और महंगे उपचार में व्यय होने वाली धनराशि की भी बचत होती है।** इसलिए सभी उपलब्ध रोग निरोधक टीकों (वैक्सीन), स्वास्थ्यप्रद एवं स्वच्छता परिपोषक स्थितियों और अन्य उपयुक्त सावधानियों को अपनाना और व्यवहार में लाना सभी सम्वेदनशील (वलनरेबुल) व्यक्तियों के लिए, विशेषकर वृद्ध व्यक्तियों के लिए हितकर होती है क्योंकि **इनसे उनके जीवन की बची हुई आयु में उन्हें निरोग और आरामदेह बनाना सम्भव हो सकता है।**

इस लक्ष्य को सफलतापूर्वक प्राप्त करने के लिए वृद्धावस्था में ग्रसित करने वाले संक्रामक (इनफेक्सस) रोगों के निरोध (प्रोफाइलक्सिस) के लिए उपयुक्त रोग निरोधक टीके (वैक्सीन) लगवाने, **स्थानीय वातावरण को स्वास्थ्यप्रद और स्वच्छता परिपोषक बनाने और उपयोग में आने वाले खाद्य पदार्थों और पेयजल को प्रदूषण** (कनटैमिनेशन) **से बचाने की आवश्यकता होती है।** वृद्ध व्यक्तियों को ग्रसित करने वाले संक्रामक (इनफेक्सस) रोगों में जुकाम (इन्फ्लुऐंजा), न्यूमोनियां और यकृतशोथ "अ" और "ब" (हेपेटाईटिस "ए" एण्ड "बी") **और आन्त्रिक ज्वर** (एनटेरिक फीवर /टायफायड फीवर) मुख्य हैं। इनमें से इन्फ्लुऐंजा न्यूमोनियां और यकृत शोथ "अ" और "इ" (हेपेटाईटिस) के रोग निरोधक टीके (वैक्सीन) उपलब्ध हैं जिनको उपयोग में लाना हितकर होता है।

उपरोक्त रोगों के अतिरिक्त बहुत से अन्य संक्रामक (इनफेक्सस) **रोग भी हैं जो प्रायः वृद्ध व्यक्तियों को कम ही ग्रसित करते हैं।** इन रोगों में शीतला/चेचक/बड़ी माता (स्मौल पोक्स), छोटी माता (चिकेन पोक्स), खसरा (मीजल्स), जरमन खसरा (जरमन मीजल्स), कनफेड़/गलसुआ (सम्पस), रोहिणी (डिपथेरिया) आदि है और इन सबों पर इस प्रस्तुति में विचार करना आवश्यक नहीं समझा गया है। वृद्ध व्यक्तियों को ग्रसित करने वाले **मुख्य संक्रामक** (इनफेक्सस) **रोगों की तालिका** इस प्रकार है–

1. जुकाम (इन्फ्लुऐंजा/फ्लू): (अ) सामान्य मौसमी जुकाम/सर्दी (कोरायजा/इन्फ्लुऐंजा), (ब) पक्षी जनित जुकाम (बर्ड फ्लू), (स) सुअर जनित जुकाम (स्वाईन ओरिजन फ्लू)।

2. न्यूमोनियां : (अ) प्राथमिक (प्राईमरी) न्यूमोनियां, (ब) द्वितीयक (सेकेण्डरी) न्यूमोनियां।

3. यकृत शोथ (हेपेटाईटिस): (अ) यकृत शोथ 'अ' (हेपेटाईटिस 'ए'), (ब) यकृत शोथ 'ब' (हेपेटाईटिस 'बी'), (स) यकृत शोथ 'स' (हेपेटाईटिस 'सी'), (द) यकृत शोथ 'डी' (हेपेटाईटिस 'डी') (ई) यकृत शोथ 'इ' (हेपेटाईटिस 'ई')

सामान्यतः वृद्धव्यक्तियों को ग्रसित करने वाले संक्रामक (इनफेक्सस) रोगों में **इन्फ्लुऐंजा और न्यूमोनियां बहुत महत्वपूर्ण हैं** क्योंकि इनसे ग्रसित हो जाने पर वे बहुत अस्वस्थ हो जाते हैं और उनमें बहुत से उपद्रव (कम्पलीकेशन्स) भी उत्पन्न हो जाते हैं **जिनके परिणामस्वरूप बहुतों की मृत्यु भी हो जाती है।**

वैसे तो इन संक्रामक (इनफेक्सस) रोगों से स आयु के लोग ग्रसित होते हैं और उनमें इन रोगों से प्रायः सामान्य अस्वस्थता ही होती है। **बच्चों में इन्फ्लुऐंजा का आघटन (इन्सीडेंस) सबसे अधिक होता है लेकिन उनमें गम्भीर लक्षण नहीं होते। इन्फ्लुऐंजा से ग्रसित वृद्ध व्यक्तियों में इससे उत्पन्न होने वाले उपद्रव (कम्प्लीकेशन्स) बहुत खतरनाक होते हैं क्योंकि इनके फलस्वरूप इन व्यक्तियों में बहुतों की मृत्यु हो जाती है।** इन्फ्लुऐंजा के अतिरिक्त वृद्ध व्यक्तियों को न्यूमोनियां, यकृत शोथ 'अ' (हेपेटाईटिस 'ए') यकृत शोथ 'ब' (हेपेटाईटिस 'बी') और आंत्रिक ज्वर (एनटेरिक फीवर /टायफाईड फीवर) भी ग्रसित करते हैं और वे गम्भीर अस्वस्थता उत्पन्न करते हैं।

इसलिए **वृद्धव्यक्तियों को ग्रसित करने वाले सभी मुख्य संक्रामक (इनफेक्सस) रोगों पर विचार करके सभी रोग निरोधक उपायों पर भी विचार कर लेना उपयुक्त होगा।** **क्रमशः.....**

समाचार दर्शन

शहीद दिवस समारोह

वेद प्रचार मंडल जींद के तत्त्वावधान में दिनांक 27 मार्च को आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं शहीद दिवस समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता डॉ. सुरेन्द्र कुमार (कुलपति गु. का. वि.वि. हरिद्वार, मुख्यातिथि श्री धर्मवीर दहिया थे।

आर्यसमाज लक्ष्मी नगर का 49वां वार्षिकोत्सव एवं सरल आध्यात्मिक शिविर का शुभारम्भ

दिनांक 30 अप्रैल से 30 मई 2015 शिविर संचालक:-स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक (रोजड़ गुजरात)

यज्ञ-प्रवचन: प्रात: 7 से 8:30 बजे
सायं काल 7:30 से 9 बजे
समापन समारोह: 3 मई 2015
यज्ञ-भजन-प्रवचन: प्रात: 8 से 12 बजे

आर्यसमाज शाहजहांपुरा का 138वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज टाउन हाल शाहजहांपुर का 138वां वार्षिकोत्सव 10 से 12 अप्रैल 2015 को मनाया गया। जिसमें आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान्, आचार्यों ने वेद, आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों से उपस्थित जिज्ञासु श्रोताओं को अवगत कराया।

प्रवेश सूचना

आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया में प्रवेश आरम्भ

राजस्थान राज्य के अलवर जिले में दिल्ली से 100 किमी. एवं जयपुर से 150 किमी. की दूरी पर स्थित इस गुरुकुल में अधिक से अधिक संख्या में कन्याओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में योगदान दें। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-आचार्य प्रेमलता (मो. 09416747308)

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर

99 वर्षों से मानव सेवा में अहर्निश संलग्न आर्षपाठविधि का नि:शुल्क शिक्षा केन्द्र व स्वामी ओमानन्द सरस्वती की कर्मभूमि, गुरुकुल झज्जर में लिखित प्रवेश परीक्षा तिथि 3 व 17 मई, 7 व 21 जून 2015 को होगी। अपने बच्चों के प्रवेश हेतु अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

आचार्य विजयपाल योगार्थी, प्रधानाचार्य (मो.9416055044)

शोक समाचार

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती का निधन

वैदिक धर्म के सुप्रसिद्ध प्रचारक स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती (पंडित देशपाल दीक्षित) जी का लम्बी बीमारी के कारण सिमडेगा महाराष्ट्र में उनका निधन हो गया। वे 83 वर्ष के थे। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ।

स्वामी दयानन्द सेस्थान एवं जनज्ञान परिवार आपको श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता है। ●●●

जनज्ञान के सदस्यों से

जनज्ञान का वार्षिक शुल्क समाप्ति का पत्र मिलते ही **शीघ्र शुल्क भेजने का यत्न करें तथा पत्र के साथ संलग्न कार्ड पर उत्तर भी दें।** डाक व्यय बढ़ जाने से वार्षिक शुल्क की वी. पी. भेजने में अब ३० रुपये लगते हैं।

अत: **मनीआर्डर** या **बैंक ड्राफ्ट** अथवा **चैक द्वारा "जनज्ञान"** के नाम शुल्क भेजें।

अथवा

आप राशी सीधे यूनियन बैंक में खाता नं. 307902010056883 IFSC: UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं।

वार्षिक शुल्क-२००/-रु०, त्रिवार्षिक-५५०/-रु०, पांच वर्ष-९००/-रु० और आजीवन ३१००/-रु० हैं।

पत्र व्यवहार में अपना सदस्य नं. ....., पिन कोड.....तथा मोबाइल नम्बर ....अवश्य लिखें तथा कार्ड पर उत्तर भी अवश्य ही दें!

धन्यवाद....... **-सम्पादक**

ओ३म्

वेद मन्दिर की गौशाला एक आग्रह : एक निवेदन

देव दयानन्द के वेद प्रचार के आह्वान् को शिरोधार्य कर दयानन्द संस्थान विगत लगभग पांच दशक से आपके सहयोग-सम्बल के बल पर "चारों वेदों का हिन्दी भाष्य" तथा अन्य वैदिक साहित्य लगभग साढ़े तीन लाख परिवारों में पहुंचाने में सफल रहा है।

महर्षि दयानन्द ने गौ पालन और गौ-रक्षण में प्रवृत्त रहने को भी वैदिक आस्थाओं के प्रति श्रद्धालु जन से आह्वान् किया था। दयानन्द संस्थान ने महर्षि के इस निर्देश के अनुसार महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम, वेदमन्दिर इब्राहीमपुर, दिल्ली-३६ में लगभग २५ वर्ष पूर्व एक गौशाला का शुभारम्भ किया था। इस गौशाला में उत्पादित गौ दुग्ध का वितरण आश्रमवासियों तथा समय-समय पर आने और ठहरने वाले अतिथि गण में किया जाता है।

गौभक्तों एवं उदारमना तथा स्व-संस्कृति के प्रति आस्थावान दानी सज्जन वृन्द से हमारा साग्रह निवेदन है कि **प्रतिमास सहयोग राशि अपनी सुविधानुसार गौग्रास के रूप में भेजकर संस्थान की गौशाला की गौओं को उत्तम चारा सुलभ कराकर गौ रक्षा में अपने दायित्व के निर्वहन में सहभागी बनें। यदि हमारे एक सौ सहयोगी सदस्य प्रतिमाह गौग्रास रूप चारा-भूसा प्रदान करेंगे तो उनका यह सहयोग गौशाला के संचालन में ठोस योगदान सिद्ध होगा।** अत: गोभक्तों से निवेदन है **कि** गौओं हेतु चारा-भूसा लेने में **अपना सहयोग अधिक से अधिक देने की कृपा करें। इस समय नया भूसा सस्ते मूल्य में मिल रहा है बाद में दुगुने दाम पर लेना पड़ता है। अभी दो लाख रुपए अनुमानत: कम पड़ेगा। अत: आपके सहयोग की तुरन्त आवश्यकता है।** गौओं हेतु अपने योगदान की राशि **"स्वामी दयानन्द संस्थान"** के नाम चैक/ड्राफ्ट/ अथवा मनीआर्डर द्वारा प्रेषित कर सकते हैं। अथवा आप सहयोग राशी सीधे यूनियन बैंक दिल्ली में खाता नं. 307902010054434 IFSC: UBIN 0530794 में जमा करा सकते हैं। **बैंक में जमा की गई राशि की रसीद की प्रतिलिपि हमें अवश्य भेजें।**

स्वामी दयानन्द संस्थान द्वारा संचालित गौशाला के संचालन में चारा प्रदान करने वाले गौभक्तों के नाम और राशि को **'जनज्ञान'** मासिक में भी प्रकाशित किया जाएगा। दानराशि निम्न पते पर प्रेषित करें:-

अध्यक्ष- स्वामी दयानन्द संस्थान
वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम, केशवनगर (इब्राहीमपुर)
पो.-मुखमेलपुर, दिल्ली-३६ चलभाष : 9810257254, 8459349349
E-mail : dayanandsansthan.jangyan@gmail.com

॥ ओ३म ॥

॥ जिसके घर में वेद नहीं वह हिन्दू का घर नहीं॥

''परमात्मा'' की
दिव्य-सनातन वाणी

ऋग्वेद

सामवेद

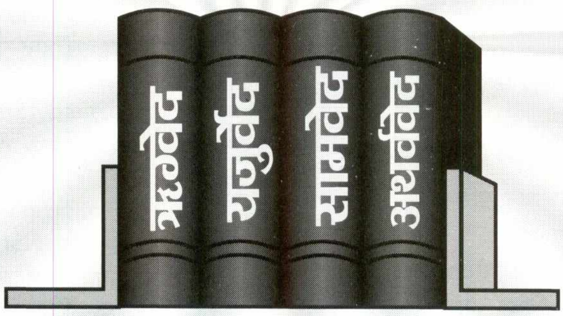

यजुर्वेद

अथर्ववेद

चारों वेद
का सरल, रोचक हिन्दी भाष्य

मन्त्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर, ऋषि-देवता आदि विवरण सहित २३ ३६ सें.मी. साइज में कुल पृष्ठ-२२००, बढ़िया सुनहरी जिल्दें। वजन प्रायः ८ किलो। सुन्दर मुद्रण।

श्रेष्ठ बढ़िया कागज पर लागत मूल्य - 4000/- रूपये

कृपया आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।
अधिक विवरण व राशि भेजने के लिए

महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, केशवनगर बस स्टैण्ड (इब्राहीमपुर)
पो.-मुखमेलपुर, दिल्ली-११००३६ (भारत)
चलभाष : +91-9810257254, +91-8459349349
E-mail : dayanandsansthan.jangyan@gmail.com

संक्षिप्त-सूची पत्र

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1. चारों वेदों का हिन्दी भाष्य 4000 रु.
2. सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य-विश्वनाथ जी 300 रु.
3. वेद ज्योति चारों वेदों के चुने गये (100-100 मन्त्रों की व्याख्या) 100 रु.
4. वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मंत्रों की व्याख्या)-आ.अभयदेव जी 100 रु.
5. भारत के वीर बच्चों की कहानियां-पं. प्रेमचन्द जी 20 रु.
6. धरती का स्वर्ग -पं. शिवकुमार शास्त्री 20 रु.
7. सरस्वतीन्द्र जीवन (दयानन्द का जीवन चरित्र) 60 रु.
8. महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन परिचय) 20 रु.
9. धर्म का सार (धर्म का रहस्य बताने वाली कथाएं) 20 रु.
10. स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (जीवन परिचय) 5 रु.
11. वैदिक सम्पत्ति- पं. रघुनन्दन शर्मा 300 रु.
12. धर्म का मार्ग (धर्म के दस लक्षणों की सरल व्याख्या) 20 रु.
13. योग और ब्रह्मचर्य-सम्पादक-दिव्या आर्य 20 रु.
14. गीत मंजरी (भजनों का अनुपम संग्रह) 20 रु.
15. Inside the Congress-स्वामी श्रद्धानन्द जी 80 रु.
16. Life and Teachings of Swami Dayanand -बाबा छज्जूसिंह जी 300 रु.
17. History of the assassins 80 रु.
18. Concept of God-स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती 100 रु.
19. Vedic Prayer(दै.संध्या-हवन हिन्दी शब्दार्थ-भावार्थ)60रु.
20. Light of Truth (सत्यार्थप्र. अंग्रेजी में-दुर्गाप्रसाद)300 रु.
21. A Short Life Story of Swami Dayanand 40 रु.
22. प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री) 20 रु.
23. वैदिक गीता का सरल हिन्दी भाष्य-आर्यमुनि जी80 रु.
24. संक्षिप्त महाभारत 100 रु.
25. संक्षिप्त रामायण 20 रु.
26. ऋग्वेद शतकम 20 रु.
27. चतुर्मास की चार पूर्णिमाएं 25 रु.
28. सत्संग पद्धति 15 रु.
29. वैदिक सान्ध्य गीत 20 रु.
30. गायत्री मन्त्र का चार्ट, हिन्दी व्याख्या सहित दोनों ओर पत्ती लगा 5 रु.
31. उपनिषद संग्रह-महात्मा नारायण स्वामी 100 रु.
32. बृहत्तर भारत-पं. चन्द्रगुप्त वेदालंकार 300 रु.
33. ईश्वर-(संसार के वैज्ञानिकों की दृष्टि में) 150 रु.
34. अथर्ववेदीय चिकित्साशास्त्र-स्वामी ब्रह्ममुनि 200 रु.
35. अथर्ववेदीय मन्त्रविद्या-स्वामी ब्रह्ममुनि 100 रु.
36. वैदिक समाज व्यवस्था- प्रशांत वेदालंकार 100 रु.
37. श्रीमद्यानन्द प्रकाश 100 रु.
38. श्रीमद्भगवद्गीता(काव्य)-मृदुल कीर्ति 80 रु.
39. मोपला (उपन्यास)-वीर सावरकर 20 रु.
40. वीर सावरकर-संक्षिप्त जीवन परिचय 5 रु.
41. भाई परमानन्द (जीवन परिचय) 40 रु.
42. बाल सत्यार्थ प्रकाश-स्वामी जगदीश्वरानन्द जी 80 रु.
43. उपदेश मंजरी-(महर्षि दयानन्द के 14 व्याख्यान)30 रु.
44. योगासन 20 रु.
45. स्वास्थ्य का महान शत्रु अंडा 3 रु.
46. विश्व को वेद का संदेश 3 रु.
47. विश्व को आर्यसमाज का संदेश 3 रु.

हिन्दू धर्मरक्षक साहित्य बाँटिये

1. क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे? 3.00 रु.
2. हिन्दुओं को चेतावनी–वेदभिक्षु: 2.00 रु.
3. भारत के मुसलमानों का क्या करें? –वेदभिक्षु: 2.00 रु.
4. हम सब हिन्दू हैं–सावरकर 2.00 रु.
5. इस्लाम में क्या है? –राकेश रानी 2.00 रु.
6. इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियाँ –जहीर नियाजी 2.00 रु.
7. हिन्दू जागो ! देश बचाओ 2.00 रु.
8. इस्लाम–एक परिचय 2.00 रु.
9. पोप की सेना का भारत पर हमला – वेदभिक्षु: 2.00 रु.
10. पादरियों को चुनौती 2.00 रु.
11. बाईबिल को चुनौती 2.00 रु.
12. क्या ईसा खुदा का बेटा था? 2.00 रु.
13. और पादरी भाग गया 2.00 रु.
14. बाइबल कसौटी पर 5.00 रु.
15. Bible in the Balence 3.00 रु.
16. हमने इस्लाम क्यों छोड़ा? 2.00 रु.
17. क्या भारत का एक और विभाजन होगा? 2.00 रु.
18. हिन्दू राष्ट्र के नाम मां का संदेश 2.00 रु.
19. हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा 2.00 रु.
20. A challange to the Christian Faith 1-00 रु.

मुख्य कार्यालय: स्वामी दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम, केशवनगर बस स्टैण्ड (इब्राहीमपुर), दिल्ली-36 दूरभाष : 91-8459349349, 9810257254

अच्छे लगे अच्छे दिखे
T.T.
Garments
I love
T.T.
SHIRTS | TROUSERS | T-SHIRTS | PYJAMAS | BERMUDAS | LADIES WEARS | KIDSWEARS
Online Trading: www.ttgarments.com/trading
Online Shopping: www.ttgarments.com
Phone / E-mail: 011-45060708 export@tttextiles.com
Follow us on
YouTube
TT is a Well Known Global Brand & Registered Trade Mark Owned by T T Industries, New Delhi-5

जनज्ञान (मासिक)
वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
(इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर, दिल्ली-३६

बैसाख-ज्येष्ठ
सम्वत्-२०७२
मई, सन्-२०१५
प्रकाशन तिथि ३ मई

Delhi Postal NO. G-3/ DL (N) / 333 /2015-2017
R.N.I. -10719/65
Posted at New Sabji Mandi
Date 5 & 6 of May-2015